दुआ के मसाइल

संकलन

मुहम्मद इक़बाल कीलानी

अल किताब इंटरनेशनल
मुरादी रोड बटला हाउस जामिया नगर
नई दिल्ली-25

दुआ के मसाइल

संकलन
मुहम्मद इक़बाल कीलानी

प्रकाशक
अल किताब इन्टर नेशनल
मुरादी रोड, बटला हाउस, जामिया नगर,
नई दिल्ली-110025

Www.IslamicBooks.Website

©सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

पुस्तक का नाम : दुआ के मसाइल

संकलन : मुहम्मद इक़बाल कीलानी

ज़ेरे निगरानी : सैयद शौकत सलीम

संख्या : एक हज़ार

प्रकाशन : 2006

मूल्य :

प्रकाशक

अल किताब इन्टर नेशनल

मुरादी रोड, बटला हाउस, जामिया नगर,

नई दिल्ली-110025

Www.IslamicBooks.Website

विषय सूची

दो शब्द

दुआ बेहतरीन हदिया है

दुआ मोमिन का हथियार है

दुआ के बारे में एक ग़लतफ़हमी का इज़ाला

दुआ और तक़दीर

दुआ और ज़ाहिरी असबाब

अल्लाह का ज़िक्र

तौबा

इस्तिग़फ़ार

ग़ैर मसनून अदइया व अज़्कार

हुज़राए चेहरा दस्तां

हुज़राए चेहरा दस्तां सख़्त हैं फ़ितरत की ताज़ीरें

दुआ की फ़ज़ीलत

दुआ की एहमियत

दुआ के आदाब

वे कलिमात जिनके ज़रिए दुआ क़ुबूल की जाती है

क़ुबूलियत दुआ के औक़ात

वे लोग जिनकी दुआ क़ुबूल की जाती है

वे लोग जिनकी दुआ क़ुबूल नहीं की जाती

दुआ में जाइज़ उमूर

दुआ में मक्रूह व ममनूअ उमूर

क़ुबूलियत दुआ की मुख़्तलिफ़ सूरतें

Www.IslamicBooks.Website

दुआ क़ुरआन मजीद की रोशनी में
क़ुरआनी दुआएं
सोने और जागने की दुआएं
पाकी से मुताल्लिक़ दुआएं
मस्जिद से मुताल्लिक़ दुआएं
अज़ान और नमाज़ से मुताल्लिक़ दुआएं
नमाज़ के बाद अज़्कार मसनूना
बअज़ नमाज़ों की मख़्सूस दुआएं
रोज़ों से मुताल्लिक़ दुआएं
ज़कात से मुताल्लिक़ दुआएं
सफ़र से मुताल्लिक़ दुआएं
निकाह से मुताल्लिक़ दुआएं
खाने पीने से मुताल्लिक़ दुआएं
सुबह व शाम की दुआएं
जामेअ दुआएं
पनाह मांगने की दुआएं
रंज और ग़म के वक़्त की दुआएं
मर्ज़ और मौत से मुताल्लिक़ दुआएं
तौबा और इस्तिग़फ़ार
अल्लाह तआला का ज़िक्र
मुतफ़र्रिक़ दुआएं
ग़ैर मसनून दुआएं और वज़ीफ़े

Www.IslamicBooks.Website

दो शब्द

रसूल अकरम सल्ल०० का इर्शाद मुबारक है कि "दुआ इबादत है" (तिर्मिज़ी) एक दूसरी हदीस में आप सल्ल०० ने इर्शाद फ़रमाया है कि "दुआ इबादत की रूह है" (तिर्मिज़ी) तख़्लीक़े आदम के बाद सबसे पहली इबादत जो हज़रत आदम अलैहि०स्सलाम को सिखाई गई वह "दुआ" ही थी। हज़रत आदम अलैहि०स्सलाम अल्लाह तआला के हुक्म पर पूरा न उतर सके, तो अल्लाह तआला ने उन पर नज़रे करम फ़रमाने के लिए यह दुआ सिखाई, "ऐ हमारे परवरदिगार! हमने अपने आप पर ज़ुलम किया है अगर तूने हमारी मग़्फ़िरत न की हम पर रहम न फ़रमाया तो हम ख़सारा पाने वालों में से हो जाएंगे।" (सूरह आराफ़ : 23) तमाम इबादतों में से दुआ ही एक ऐसी इबादत है जिसके लिए कोई जगह दिन या वक़्त मुक़र्रर नहीं, बल्कि हर लम्हा, हर घड़ी मांगने की इजाज़त है। सीरतुन्नबी सल्ल०० पर एक नज़र डालें तो यूं लगता है कि आप सल्ल०० की हयाते लय्यिबा का कोई लम्हा और कोई घड़ी ऐसी नहीं जो दुआ से ख़ाली गुज़री हो। आपके मामूल मुबारक में शामिल दआएं मुलाहिज़ा हों। सोने और जागने की दुआ, अच्छा या बुरा ख़्वाब देखने की दुआ, बैतुलख़ला में दाख़िल होने और निकलने की दुआ, घर से निकलने और दाख़िल होने की दुआ, मस्जिद में दाख़िल होने और निकलने की दुआ, आइना देखने की दुआ, खाना खाने और पानी पीने की दुआ, मेज़बान के हक़ में दुआ, कफ़्फ़ारा मज्लिस की दुआ, तौबा की दुआ, पनाह मांगने की दुआ, अल्लाह से बख़्शिश करने की दुआ, पसंदीदा और नापसंदीदा चीज़ को देखने की दुआ, ग़ुस्से के वक़्त की दुआ, नज़रे बद से बचने की दुआ, मरीज़ की अयादत करने की दुआ, ज़ियारते क़ुबूर की दुआ, बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ, अदाएगी क़र्ज़ की दुआ, ग़म और परेशानी के वक़्त की दुआ, इब्तलाअ और आज़माइशों के वक़्त की दुआ, सफ़र पर रवानगी और वापसी की दुआ, इन मुतफ़र्रिक़ दुआओं के अलावा सुबह-शाम के वक़्त के अदइया और अज़्कार इनसे अलग थे। मख़्सूस हालात या वाक़ेयात पेश आने पर दुआओं की फ़हरिस्त इससे अलग है। मसलन, नया चांद देखने की दुआ, नया लिबास पहनने की दुआ, नया फल खाने की दुआ, शादी और मक़ारबत की दुआ, आंधी और तूफ़ान के वक़्त की दुआ, गरज और चमक के वक़्त की दुआ, तलबे

Www.IslamicBooks.Website

बारां की दुआ, कसरते बारां से महफ़ूज़ रहने की दुआ, ख़सूफ़ और कसूफ़ (नमाज़) की दुआ, ताज़ियत की दुआ, दुश्मन से मुक़ाबले की दुआ, कुतुब अहादीस में मसनून दुआओं की तादाद मज़्कूरा बाला दुआओं के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा है। एक मुहतात अंदाज़े की मुताबिक़ सही हदीस से साबित वाक़ेआत के हवाले से सत्तर से ज़्यादा दुआएं सिखाई हैं। इससे दुआ की एहमियत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

एक नज़र इस्लाम की बुनियादी इबादात....... नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज पर डाली जाए तो सादिक़ुल मस्दूक़ रहमते आलम सल्ल०० के इर्शाद मुबारक ''दुआ इबादत का मग़ज़ है'' (तिर्मिज़ी) की अस्ल हक़ीक़त बहुत नुमायां होकर सामने आती है। ''सलाह'' जिसके लुग़वी मानी ''दुआ'' है वाक़ेअतन अव्वल से आख़िर तक दुआ ही दुआ है। आग़ाज़ वुज़ू की तर्ग़ीब, दौरान नमाज़ दुआएं और नमाज़ के बाद की दुआए। गोया दुआ ही सारी नमाज़ की रूह और जान है। इसी तरह इस्लाम की दूसरी अहम इबादत रोज़ा को लीजिए। इस बा-बरकत महीने में रुजूअ इलल्लह तौबा इस्तग़फ़ार और अदइया व अज़्कार के ज़रिए जो शख़्स अपने गुनाह न बख़्शवा सके उसके लिए रसूलुल्लाह ने बद्दुआ फ़रमाई (हाकिम)। इस महीने के आख़िरी अशरे में लैलतुल क़द्र जैसी अज़ीम ख़ैर व बरकत की रात रख दी गई है। जिसकी इबादत हज़ार महीने (83) साल की इबादत से अफ़ज़ल क़रार दी गई है। इस रात की सारी भलाइयां और ख़ैर समेटने के लिए रसूले अकरम सल्ल० ने उम्मत को एक मुख़्तसर और जामेअ दुआ ही की तालीम दी है। गोया यह सारे का सारा महीना अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से तौबा व इस्तग़फ़ार और अदइया व अज़्कार के लिए मख़्सूस को दिया गया है। हज को इस्लाम में बहुत एहमियत हासिल है। जो हज़रात हज की सआदत से बेहरहमंद हो चुके हैं उन्हें ख़ूब अंदाज़ा है कि हज पर रवानगी से लेकर घर वापसी तक, चाहे यह अर्सा चन्द महीनों का हो या चन्द दिनों का, हाजी मुसलसल अदइया व अज़्कार में मस्रूफ़ रहता है। घर से निकलते वक़्त दुआ, आग़ाज़े सफ़र और दौराने सफ़र दुआएं। एहराम बांधने के बाद मुसलसल तल्बिया, मक्का मुअज़्ज़मा में दाख़िले की दुआ, बैतुल्लाह शरीफ़ देखने की दुआ, दौराने तवाफ़ दुआएं, मक़ामे इब्राहीम और मुल्तज़िम पर दुआएं, ज़मज़म पीने से पहले दुआएं, सई शुरू करते वक़्त और दौराने सई दुआएं, सई के इख़्तिताम पर मर्वा पर ख़ुसूसी दुआएं, मिना में पहुंच कर तकबीर, तहलील तल्बिया और दुआएं, मैदाने अरफ़ात में

Www.IslamicBooks.Website

अदाएगी नमाज़ के बाद से लेकर ग़ुरूब आफ़ताब तक खड़े होकर मुसलसल तौबा इस्तग़फ़ार और अदइया व अज़्कार, अरफ़ात से वापसी पर मुज़दल्फ़ा में नमाज़े फ़ज्र से लेकर उजाला होने तक खड़े होकर अदइया व अज़्कार, रमी जमेरात के बाद की दुआएं, क़ुरबानी के वक़्त दुआ, मिना में मुसलसल तीन दिन क़याम के दौरान अदइया व अज़्कार, मनासिक हज अदा करने के बाद घर वापस पहुंचने तक हाजी को दुआएं मांगने की तालीम दी गई है। हक़ीक़त यह है कि रसूले अकरम सल्ल० के इर्शाद मुबारक के ऐन मुताबिक़ दुआ ही इबादतों की रूह और मग़्ज़ है।

यहां क़ुबूलियत दुआ के बारे में यह वज़ाहत करना ज़रूरी है कि जो लोग दुआ को महज़ अल्लाह तआला से अपनी ज़रूरतें और हाजतें पूरी करवाने का ज़रिया समझते हैं वे जब यह देखते हैं कि हमारी मत्लूबा ज़रूरतें और हाजंतें पूरी नहीं हो रहीं, तो नीम दिली से दुआएं मांगने लगते हैं या मायूस होकर दुआ मांगना छोड़ देते हैं। और कुछ लोग इससे भी आगे बढ़कर अल्लाह का गिला और शिकवा करने लगते हैं। यह सूरतेहाल दरअस्ल दुआ के सही इस्लामी तसव्वुर और लाइल्मी की वजह से पैदा होती है। क़ुबूलियत दुआ के बारे में रसूले अकरम सल्ल०० ने तीन मुख़्तलिफ़ सूरतें बतलाई हैं।

1. या तो इंसान की मत्लूबा हाजत पूरी कर दी जाती है।

2. या दुआ के बराबर कोई आने वाली मुसीबत टाल दी जाती है।

3. या उसका अज्र व सवाब आख़िर में ज़ख़ीरा कर दिया जाता है।

(मुस्नद अहदम)

दुआ क़ुबूल होने की सूरत में भी दो इम्कान मौजूद हैं। एक, दुआ फ़ौरन उसी वक़्त क़ुबूल हो जाए। जैसा कि हदीस शरीफ़ में रसूले अकरम सल्ल०० ने बनी इसराईल के तीन अफ़राद का वाक़ेआ बयान फ़रमाया । जो दौराने सफ़र तूफ़ान बादुबारां से पनाह लेने के लिए एक ग़ार में बन्द हो गए। उन्होंने अल्लाह से दुआ मांगी जो उसी वक़्त क़ुबूल हो गई। दूसरा, अल्लाह की मस्लिहत और हिक्मत के मुताबिक़ दुआ थोड़े या ज़्यादा अर्से के बाद क़ुबूल हो, जैसा कि हज़रत इब्राहीम अलैहि०स्सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाई, "ऐ हमारे परवरदिगार! इन लोगों में ख़ुद इन्हीं की क़ौम से एक ऐसा रसूल भेज जो इन्हें तेरी आयात सुनाए, इन्हें किताब और हिक्मत सिखाए और इनकी ज़िंदगियां संवारे।" (सूरह बक़रह : 129) हज़रत इब्राहीम अलैहि० की यह दुआ हज़ारों साल बाद क़ुबूल

Www.IslamicBooks.Website

हुई। ख़ुद रसूल अकरम सल्ल०० फ़रमाया करते थे कि मैं अपने बाप इब्राहीम अलैहि० की दुआ की नतीजा हूं। जिसका मतलब यह है कि दुआ क़ुबूल क़रने में भी अल्लाह तआला की मस्लिहत और हिक्मत कारफ़रमा है चाहे तो फ़ौरन क़ुबूल कर ले, चाहे तो कम या ज़्यादा अर्से के बाद क़ुबूल फ़रमाए।

उपरोक्त सारी सूरतों को सामने रखते हुए यह नतीजा निकलता है कि जो शख़्स दुआ महज़ हाजत तलबी का ज़रिया समझ कर मांगता है उसका मामला उस शख़्स का-सा है जो जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह में महज़ माले ग़नीमत हासिल करने के लिए हिस्सा ले रहा हो अगर माले ग़नीमत मिल गया तो मुत्मईन और ख़ुश, न मिला तो मायूस नाकाम व नामुराद, जबकि दुआ को इबादत समझ कर मांगने वाले शख़्स का मामला जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह में हिस्सा लेने वाले उस मोमिन का-सा है जो यह समझता है कि फ़तह हासिल होने पर माले ग़नीमत मिल गया तो वह अल्लाह का इनाम होगा। अगर न मिला तब भी जिहाद में शिरकत का अज्र व सवाब बहरहाल यक़ीनी है।

पस दुआ को इबादत समझ कर मांगने वाला किसी हाल में भी मायूस और नाकाम नहीं होता। अगर उसकी मत्लूबा हाजत फ़ौरन पूरी जो जाए तो यह सरासर अल्लाह का इनाम और फ़ज़्ल है अगर मत्लूबा हाजत पूरी न हो तब भी उसकी मेहनत एक बड़े और यक़ीनी फ़ायदे से महरूम नहीं रहती और वह है बतौर इबादत आख़िरत में उसका अज्र व सवाब। जिसका एहसास इंसान को दुनिया की बजाए आख़िरत में कहीं ज़्यादा होगा। यह बात ज़ेहननशीन रहनी चाहिए कि दुआ चूंकि इबादत है ओर हर क़िस्म की इबादत अल्लाह ही के लायक़ है लिहाज़ा दुआ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही से करनी चाहिए। दुआ करते वक़्त किसी फ़ौतशुदा नबी, वली, या बुज़ुर्ग को वसीला बनाना या उनसे दुआ की दरख़्वास्त करना उनसे मुश्किल कुशाई, हाजत रवाई या किसी क़िस्म की मदद तलब करना शिर्क फ़िल इबादत है। किजससे हर मुसलमान को बचना चाहिए। अलबत्ता किसी ज़िंदा नेक आदमी से दुआ की दरख़्वास्त करना जाइज़ है।

दुआ बेहतरीन हदिया है

रसूले अकरम सल्ल०० अपने जांनिसार सहाबा किराम रज़ि० की दीनी ख़िदमात पर ख़ुश होते तो उन्हें इसी मताअ गिरां बहा.....दुआ.......का हदिया इनायत फ़रमाते। जंगे तबूक के मौक़े पर दौराने सफ़र सामान ख़ुर्द व नौश ख़त्म

Www.IslamicBooks.Website

हो गया, हज़रत उसमान रज़ि० ने सामान ख़ुर्द व नौश से लदे हुए बे-शुमार ऊंट मुहय्या कर दिए। रसूले अकरम सल्ल० ने ख़ुश होकर अपने दोनों हाथ आसमानों की तरफ़ उठाकर तीन दफ़ा यह दुआ फ़रमाई, "या अल्लाह! मैं उसमान से राज़ी हूं तू भी उसमान से राज़ी हो जा।" फिर सहाबा से कहा "तुम भी उसमान के हक़ में दुआ करो।" 2 हिजरी में जंगे बद्र के लिए निकलने से पहले रसूले अकरम सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० से मुशावरत फ़रमाई दौराने मुशावरत हज़रत मिक़दाद बिन असवद रज़ि० ने मुख़्तसर तक़रीर की और कहा, "या रसूलुल्लाह सल्ल०! हम वह नहीं जो मूसा की क़ौम की तरह कह दें, "तू और तूरा रब जाकर लड़े हम तो यहां बैठे हैं" उस अल्लाह की क़सम जिसके क़ब्ज़े क़ुदरत में हमारी जान है और जिसने आपको हक़ दके साथ भेजा है हम आपके दाएं-बाएं, आगे-पीछे लड़ेंगे। वल्लाह जब तक हममें से एक आंख भी गर्दिश करती है आपका साथ न छोडेंगे।" यह अल्फ़ाज़ सुनकर रसूले अकरम सल्ल० का चेहरा मुबारक फ़र्ते मसर्रत से चमक उठा और हज़रम मिक़दाद रज़ि० के लिए दुआ ख़ैर फ़रमाई। दूसरे सहाबा किराम रज़ि० को रश्क आने लगा काश यह अल्फ़ाज़ ज़बाने रिसालत माब से उनके लिए निकले होते।

हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि० की इस्लाम के लिए ख़िदमत बड़ी मुख़्लिसाना और फ़िदा काराना थीं। जंगे अहज़ाब में ज़ख़्मी होने की वजह से शहीद हुए तो रसूलुल्लाह सल्ल० को शदीद सदमा हुआ। अपने जांनिसार सहाबी का सरज़ानवे मुबारक पर रख लिया और दिल का रंज व ग़म निम्न दुआइया अल्फ़ाज़ में ढल गया। "इलाही तेरी राह में सअद ने बड़ी ज़ेहमत उठाई। उसने तेरे रसूल की तस्दीक़ की और हुक़ूक़ इस्लाम अदा किए। इलाही तू इसकी रूह के साथ वैसा ही मामला कर जैसा तू अपने दोस्तों की रूह के साथ करता है।" तदफ़ीन के बाद रसूलुल्लाह सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० को बताया कि सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सअद रज़ि० के जनाज़े में शरीक हुए थे। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० ने एक बार रात भर का शाना नबवी सल्ल० पर पहरा दिया। सुबह हुई तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने उनके हक़ में यह दुआ फ़रमाई, "अबू अय्यूब! ख़ुदा तुम्हें अपनी हिफ़्ज़ व अमान में रखे, तुमने उसके नबी की हिफ़ाज़त की।" बअज़ औक़ात सहाबा किराम रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० की ज़बान मुबारक से दुआ सुनने के मुंतज़िर रहते, लेकिन बअज़ औक़ात ख़ुद आप सल्ल० से दुआ की दरख़्वास्त करते। एक मौक़े पर रसूले अकरम सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० से

Www.IslamicBooks.Website

ख़िताब करते हुए फ़रमाया, "मेरी उम्मत से सत्तर हज़ार लोग बेहिसाब जन्नम में जाएंगे।" हज़रत अकाशा रज़ि० ने खड़े होकर अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह सल्ल०! दुआ फ़रमाइए कि अल्लाह मुझे भी उनमें शामिल कर दे।" आपने फ़रमाया, "तुम भी उनमें से हो।" (सही मुस्लिम) ख़ुद एक मर्तबा रसूले अकरम सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० को उमरा पर रवानगी के वक़्त इरशाद फ़रमाया, "उमर! मुझे भी अपनी दुआओं में याद रखना।" (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी) हज़रत उमर रज़ि० को दुआ में याद रखने की हिदायत फ़रमा कर आप सल्ल० ने उम्मत को यह तालीम दी कि एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान के लिए सबसे बेहतरीन हदिया अगर कोई हो सकता है तो वह दुआ ही है। एक हदीस शरीफ़ में भी आप सल्ल० ने यह बात इर्शाद फ़रमाई कि, "ज़िंदों का अपने मुर्दों के लिए बेहतरीन हदिया उनकें लिए बख़्शिश की दुआ करना है।" (बेहक़ी) वफ़ात मुबांरक से चन्द दिन पहले रसूले अकरम सल्ल० की तबीअत अचानक नासाज़ हो गई। फ़ौतशुदा जांनिसार सहाबा किराम रज़ि० की गुज़िश्ता यादें ज़ेहन में ताज़ा हो गईं तो मदीना मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान में शरीफ़ ले गए देर तक अल्लाह के हुज़ूर दस्ते दुआ फैलाकर अपने फ़ौतशुदा असहाब के लिए बख़्शिश की दुआ फ़रमाते रहे। पस दुआ बेहतरीन इबादत ही नहीं बल्कि ज़िंदा और मुर्दा मुसलमान भाइयों के लिए बेहतरीन हदिया भी है।

दुआ मोमिन का हथियार है

हर इंसान अपनी ज़िंदगी में कभी न कभी ऐसे हालात से यक़ीनन दोचार होता है। जब उसके सारे दुनियावी सहारे टूट जाते हैं। उम्मीदें ख़त्म हो जाती हैं ज़ाहिरी असबाब और वसाइल नाकाम हो जाते हैं। क़रीबतरीन आज़ा व अक़ारिब पर एतमाद नहीं रहता, यहां तक कि भाई भाई के साथ बात नहीं कर सकता, बीवी शौहर के साथ और औलाद अपने वालिदैन के साथ खुलकर बात नहीं कर सकते। गोया सब कुछ होते हुए भी इंसान तंहाई बेबसी और बेकसी का आलम महसूस करता है। तब इंसान के अंदर से एक आवाज़ उठती है कि एक सहाबा अब भी मौजूद है। एक दरवाज़ा अब भी खुला है, जहां इंसान अपने दुख-सुख और मसाइब व आलाम की दास्तान हर वक़्त बयान कर सकता है। इस कैफ़ियत का ज़िक्र ख़ुद अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में इन अल्फ़ाज़ में किया है :

Www.IslamicBooks.Website

"भला कौन है जो बेक़रार की दुआ क़ुबूल करता है। जब वह उसे पुकारता है और उसकी तकलीफ़ दूर करता है और ज़मीन में तुम्हें ख़िलाफ़त अता करता है (यह काम करने वाला) अल्लाह के सिवा कोई और भी है?" (सूरह नम्ह : 62) एक शख़्स रसूले अकरम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह सल्ल०! आप हमें किस चीज़ की दावत देते हैं?" आपने इर्शाद फ़रमाया, "अल्लाह की तरफ़ जो अकेला है, जिसका कोई शरीक नहीं, जब तुम किसी मुश्किल में होते हो तो तुम्हारी मुश्किलकुशाई करता है, जंगलों में राह भूल कर उसे पुकारते हो तो तुम्हारी रहनुमाई करता है, जब तुम्हारी कोई चीज़ खो जाती है और उससे मांगो तो तुम्हें वापस लौटा देता है, जब क़हतसाली में उससे दुआएं मांगो तो मूसलाधार बारिशें बरसाता है।" (मुस्नदअ अहमद) क़ुरआन मजीद ने हमारे सामने अंबिया किराम अलैहि० की बहुत-सी मिसालें रखी हैं कि उन्होंने मुसीबत परेशानी और आज़माइश के वक़्त अल्लाह को पुकारा और अल्लाह ने उनकी मुसीबत और तकलीफ़ दूर फ़रमाई। हज़रत यूनुस अलैहि० अपनी क़ौम को अज़ाब की ख़बर देकर चले गए ख़ुद एक भरी हुई कश्ती में सवार हुए। बोझ की ज़्यादती की वजह से क़ुरआ डाला गया तो हज़रत यूनुस अलैहि० के नाम निकला, चूनांचे उन्हें समुद्र में छलांग लगानी पड़ी। जहां एक मछली ने अल्लाह के हुक्म से उन्हें निकल लिया, तब हज़रत यूनुस अलैहि० ने अल्लाह को पुकारना शुरू किया : "तब यूनुस अलैहि० ने हमें तारीकियों में पुकारा, तेरे सिवा कोई इलाह नहीं, तेरी ज़ात पाक है, मैं बेशक क़ुसूरवार हूं। तब हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे ग़म से निजात बख़्शी। मोमिनों को हम इसी तरह निजात दिलाते हैं।" (सूरह अंबिया : 87-88) सूरह साफ़्फ़ात में अल्लाह पाक फ़रमाता है : "अगर यूनुस अलैहि० हमें याद न करता तो क़यामत तक मछली के पेट में ही पड़ा रहता।" (सूरह साफ़्फ़ात : 144) अज़ीज़ मिस्र की बीवी ने हज़रत यूसुफ़ अलैहि० के हुस्न से मुतास्सिर होकर उन्हें बहुत बड़े फ़ित्ने में डालने की कोशिश की तब हज़रत यूसुफ़ अलैहि० ने अल्लाह तआला से इल्तिज़ा की : "मेरे रब! क़ैद मुझे मंज़ूर है ब-निस्बत इसके कि मैं वह काम करूं जो ये लोग मुझसे चाहते हैं। अगर तूने इनकी चालों को मुझसे दूर न किया तो मैं इनके जाल में फंस जाऊंगा और जाहिलों में शामिल हो जाऊंगा।" (सूरह

Www.IslamicBooks.Website

यूसुफ़ : 33) अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलैहि० की दुआ क़ुबूल फ़रमाई : "यूसुफ़ के रब ने उसकी दुआ क़ुबूल की, औरतों की चालें उससे दूर कर दीं और यूसुफ़ आज़माइश से बच गए बेशक वही है जो सबकी सुनता है और जानता है।" (सूरह यूसुफ़ : 34) हज़रत अय्यूब अलैहि० न तवील अर्से बीमारी में मुब्तला रहने के बाद अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाई : "ऐ मेरे रब! मुझे बीमारी लग गई है और तो अर्हमर्राहिमीन है।" (सूरह अंबिया : 83) अल्लाह तआला ने हज़रत अय्यूब की दुआ क़ुबूल फ़रमाई और सेहत से नवाज़ा।

अंबिया किराम और अहले ईमान पर दावते हक़ के रास्ते में बड़ी बड़ी कठिन आज़माइशें और सऊबतें आईं। क़ौम के लोगों ने किसी को क़त्ल करना चाहा, किसी को संगसार करना चाहा, किसी को जिला वतन करना चाहा, किसी को क़ैद करना चाहा, किसी के हाथ काटने चाहें, तब अहले ईमान ने ज़ालिमों के मुक़ाबले में अल्लाह से मदद और नुसरत की दुआ की, तो अल्लाह ने उन्हें ज़ालिमों से निजात दिलाई। हज़रत लूत अलैहि० ने क़ौम को तौहीद की दावत दी और बदकारी से रोका। क़ौम न मानी और हज़रत लूत अलैहि० को जिला वतन करना चाहा, फ़रिश्ते ख़ूबसूरत लड़कों की शक्ल में अज़ाब लेकर आए, तब हज़रत लूत अलैहि० ने अल्लाह से दुआ की : "ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे अहल व अयाल (यानी मेरे पैरोकारों) को क़ौम की बदकारियों से निजात दे।" (सूरह शुअरा : 173) अल्लाह तआला ने हज़रत लूत अलैहि० को उनके अहल व अयाल समेत निजात अता फ़रमाई। फ़िरऔन के दरबार में हज़रत मूसा अलैहि० और जादूगरों के दर्मियान मुक़ाबला हुआ। जादूगर शिकस्त खा गए और हक़ीक़त मालूम होते ही जादूगर हज़रत मूसा अलैहि० पर ईमान ले आए। फ़िरऔन ने उन्हें धमकी दी : "मैं तुम्हारे हाथ पांव मुख़ालिफ़ सिम्तों से कटवा दूंगा और तुम सबको सूली पर लटका दूंगा।" तब जादूगरों ने अल्लाह के हुज़ूर दुआ की : "ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर सब्र का फ़ैज़ान कर और हमें दुनिया से इस हाल में उठा कि हम मुसलमान हों।" (सूरह आराफ़ : 126) इस दुआ के बाद अल्लाह तआला ने अलले ईमान के दिन इस क़द्र मज़बूत कर दिए कि उन्होंने भरे दरबार में बादशाह के सामने कह दिया : "तू जो कुछ करना चाहता है कर ले, तू ज़्यादा से ज़्यादा बस (हमारी) दुनिया की ज़िंदगी को ही ख़त्म कर सकता है। इससे ज़्यादा हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" (सूरह ता०हा० : 72)

रसूले अकरम सल्ल० मक्का मुकर्रमा में मुसलसल 13 साल तक मसाइब व

Www.IslamicBooks.Website

आलाम से भरपूर जद्दोजहद फ़रमाते रहे। बिलआख़िर अहले मक्का के ग़ैर इंसानी और ज़ालिमाना सुलूक से तंग आकर इस तवक़्क़ोअ के साथ तायफ़ तशरीफ़ ले गए कि शायद वहां के लोग मेरी बात सुनने पर आमादा हो जाएं, लेकिन वहां आपके साथ जो संगदिलाना सुलूक किया गया उससे आपको शदीद सदमा पहुंचा। आप ज़ख़्मी हालत में तायफ़ से बाहर क़रनुस्सालिब के मक़ाम पर पहुंचे थोड़ी देर आराम फ़रमाया। हवास बहाल हुए तो अल्लाह तआला के हुज़ूर हाथ फैला कर यह दर्दअंगेज़ दुआ मांगी : "इलाही अपनी क़ुव्वत की कमी अपनी बेसरो सामानी और लोगों के मुक़ाबले में अपने बेबसी की फ़रियाद तुझी से करता हूं। तू ही मेरा मालिक है, आख़िर मुझे किसके हवाले करने वाला है। क्या उस हरीफ़ बेगाने के, जो मुझसे तुर्शरूई रवा रखता है या ऐसे दुश्मन के जो मेरे मामले पर क़ाबू रखता है। लेकिन अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं है तो मुझे कुछ परवाह नहीं, बस तेरी आफ़ियत मेरे लिए ज़्यादा वुस्अत रखती है मैं इस बात के मुक़ाबले में कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर पड़े या तेरा अज़ाब मुझ पर आए, तेरे ही नूर व जमाल की पनाह तलब करता हूं जिससे सारी तारीकियां रोशन हो जाती हैं और जिसके ज़रिए दीन व दुनिया के सारे मामलात संवर जाते हैं, मुझे तो तेरी रज़ामंदी और ख़ुशनूदी की तलब है, तेरे सिवा कहीं से कोई क़ुव्वत व ताक़त नहीं मिल सकती। (सीरत इब्ने हिशाम, मोहसिने इंसानियत)

ज़ाहिर में जब तमाम सहारे टूट जाते हैं, उम्मीद की कोई किरण दिखाई नहीं देती थी। मक्का और तायफ़ के सरदारों ने ज़ुल्म व सितम और संगदिली की इंतिहा कर दी थी। हर तरफ़ यासअंगेज़ फ़िज़ा मुसल्लत थी। आपने अपने ज़ख़्मी और टूटे दिल का हाल एक इंतिहाई रिक़्क़तअंगेज़ दुआ की शक्ल में मालिके हक़ीक़ी के सामने रख दिया। आप सल्ल० की यह दुआ अर्शे इलाही से पेदरपे फ़तह की नवेदीं लेकर आई। घटाटूप अंधेरों से नूर सहर के आसार पैदा होने लगे। इसी सफ़र में जिनों की एक जमाअत आप सल्ल० की ज़बान मुबारक से क़ुरआन सुनकर ईमान ले आई। मैराज आसमानी के ज़रिए आपको क़ुर्बे इलाही का इंतिहाई बुलन्द मक़ाम अता किया गया, एक के बाद एक बैतुल उक़बा ऊला और बैतुल उक़बा सानिया अमल में आई। जो रोशन मुस्तक़बिल के लिए संग बुनियाद साबित हुई।

हक़ीक़त यह है कि ज़िंदगी में आने वाले मसाइब व आलाम, रंज व ग़म और मुश्किलात व महन, चाहे इंफ़िरादी सतह के हों या इज्तिमाई सतह के, उनसे

Www.IslamicBooks.Website

निजात हासिल करने के लिए दुआ से ज़्यादा मुवस्सिर और क़ाबिले एतमाद हथियार कोई नहीं हो सकता। जो शख़्स कशमकश हयात में दुआ के बग़ैर ज़िंदगी बसर कर रहा ह उसका अंजाम उस सिपाही से मुख़्तलिफ़ नहीं हो सकता जो घमसान की जंग में हिस्सा लेने के लिए हथियार के बग़ैर मैदाने जंग में घुस जाए।

दुआ के बारे में एक ग़लतफ़हमी का इज़ाला

क़ुबूलियत दुआ के बारे में कुछ लोग यह अक़ीदा रखते हैं कि अल्लाह तआला गुनाहगार लोगों की दुआ क़ुबूल नहीं करता और बुज़ुर्गों की दुआ कभी रद्द नहीं करता। इस अक़ीदे के नतीजे में जो सूरतेहाल पैदा होती हैं वे ये हैं :

1. बन्दा अल्लाह से अपने ताल्लुक़ को ख़त्म करके बुज़ुर्गों से मुहताजी का ताल्लुक़ क़ायम कर लेता है।

2. बुज़ुर्गों की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए उनकी ख़िदमत में नज़र व नियाज़ पेश करना ज़रूरी समझता है।

3. दुआएं क़ुबूल होने के बाद बन्दा बुज़ुर्गों को वही मक़ाम देने लगता है, जो अल्लाह तआला का है और यूं अपनी सारी ज़िंदगी अल्लाह की बजाए बुज़ुर्गों की बन्दगी में बसर कर देता है।

यह बिल्कुल वही सूरतेहाल है जो अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में जाबजा मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में मुश्रिकीन के बारे में बयान फ़रमाई है। दरहक़ीक़त यह अक़ीदा रखना कि अल्लाह तआला गुनाहगार लोगों की दुआ क़ुबूल नहीं करता किताब व सुन्नत के सरासर मनाफ़ी है। अल्लाह तआला का इर्शाद मुबारक है :

"(लोगो!) तुम्हारा रब कहता है कि तुम सब मुझसे दुआ करो, मैं तुम्हारी दुआ क़ुबूल करूंगा, जो लोग मेरी इबादत (दुआ) से तकब्बुर करते हैं (यानी नहीं मांगते) वह ज़लील व ख़्वार होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे।" (सूरह मोमिन : 60)

एक हदीस में रसूले अकरम सल्ल० का इर्शाद मुबारक है : "जो शख़्स अल्लाह से दुआ नहीं करता, अल्लाह उससे नाराज़ होता है।" (तिर्मिज़ी) उपरोक्त

Www.IslamicBooks.Website

आयत और हदीस में तमाम मुसलमानों को, चाहे नेक हों या गुनाहगार, बिला इस्तसना हुक्म दिया है कि अल्लाह से ज़रूर दुआ करो और दुआ न करने वालों को सज़ा का फ़ैसला भी सुना दिया। अल्लाह के नज़दीक शैतान से ज़्यादा मल्ऊन और मअतूब कोई नहीं हो सकता। उसने खुल्लम खुल्ला अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी की, अल्लाह तआला ने उसे मरदूद क़रार दिया। लेकिन उसके बावजूद जब उसने अल्लाह से दुआ की : "कि ऐ मेरे रब! मुझे क़यामत के दिन तक (लोगों को गुमराह करने की) मुहलत दे।" तो अल्लाह ने उसकी यह दुआ क़ुबूल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : "कहा, तुझे मुक़र्रर दिर के वक़्त (यानी क़यामत) तक के लिए मुहलत है।" (सूरह हिज्र : 36 -38) शैतान की यह दरख़्वास्त किसी नेक मक़सद के लिए न थी बल्कि बन्दों को गुमराह करने के लिए थी तक भी अल्लाह ने उसकी दुआ रद्द नहीं फ़रमाई। इसके बावजूद यह समझना कि गुनाहगारों की दुआ क़ुबूल नहीं फ़रमाता। महज़ शैतानी फ़रेब है। वह ज़ात बाबरकत जो इतनी रहीम व क़रीम है कि अपने दुश्मनों, बाग़ियों और सरकशों को ज़िंदगी भर हर तरह की नेमतों से नवाज़ती चली जाती, उनकी सारी ज़रूरतें और हाजतें पूरी करती है तो फिर यह कैसे मुमकिन है कि उसके अपने बन्दे जब उससे कोई चीज़ मांगें तो वह न दे?

जिस तरह यह अक़ीदा बातिल है कि अल्लाह तआला गुनाहगारों की दुआ क़ुबूल नहीं करता, इसी तरह यह अक़ीदा भी बातिल है कि अल्लाह तआला बुज़ुर्गों की दुआ कभी रद्द नहीं करता।

हज़रत नूह अलैहि० ने बेटे को तूफ़ान में ग़र्क़ होते देखा। तो अल्लाह तआला से दुआ की : "ऐ मेरे रब! मेरा बेटा मेरे घर वालों से है तेरा वादा सच्चा है (लिहाज़ा उसे बचा ले) तू सब हाकिमों से बड़ा हाकिम है।" (सूरह हूद : 45) अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहि० की यह दुआ न सिर्फ़ यह कि रद्द फ़रमा दी बल्कि साथ यह भी इर्शाद फ़रमाया : "ऐ नूह! मैं तुझे नसीहत करता हूं कि अपने आपको जाहिलों की तरह न बना ले।" (सूरह हूद : 42) क़यामत के दिन हज़रत इब्राहीम अलैहि० अल्लाह तआला से अर्ज़ करेंगे : "ऐ मेरे रब! तूने मुझसे वादा फ़रमाया था कि क़यामत के दिन मुझे रुस्वा नहीं करेगा, लेकिन मेरी रुस्वाई इससे ज़्यादा क्या हो सकती है कि मेरा बाप तेरी रहमत से महरूम है।" अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएगा : "मैंने जन्नत काफ़िरों के लिए हराम कर दी है।" चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहि० की ख़्वाहिश को रद्द करते हुए अल्लाह तआला

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत इब्राहीम अलैहि० के वालिद को बज़ू बनाकर जहन्नम में डाल देगा। (बुख़ारी)

रसूले अकरम सल्ल० ने अपनी उम्मत के लिए तीन दुआएं कीं। 1. मेरी उम्मत क़हत से हलाक न हो, 2. मेरी उम्मत ग़र्क़े आम से हलाक न हो, 3. मेरी उम्मत में ख़ानाजंगी न हो। अल्लाह तआला ने पहली दो दुआएं क़ुबूल फ़रमा लीं लेकिन तीसरी दुआ क़ुबूल नहीं फ़रमाई। (मुस्लिम)

अतः यह समझना कि अल्लाह तआला किसी नबी, वली, या बुज़ुर्ग की दुआ कभी रद्द नहीं करता बिल्कुल बातिल अक़ीदा है। सही इस्लामी अक़ीदा यह है कि :

1. हर शख़्स को अपने लिए ख़ुद अल्लाह तआला से दुआ मांगनी चाहिए क्योंकि यह अल्लाह तआला का वाज़ेह हुक्म है जबकि किसी नेक आदमी से दुआ करवाना जाइज़ तो है लेकिन उसका हुक्म कहीं भी नहीं दिया गया।

2. दुआ के क़ुबूल होने का इंहिसार मुकम्मल तौर पर अल्लाह तआला की मर्ज़ी और मस्लेहत पर है वह जब चाहे जिसकी चाहे और जितनी चाहे दुआ क़ुबूल करे, जिसकी चाहे रद्द कर दे।

दुआ और तक़दीर

तक़दीर के बारे में पाई जाने वाली बेशुमार उलझनें दरअस्ल तक़दीर के बारे में पाए जाने वाले ग़लत मफ़्हूम की वजह से पैदा होती हैं। तक़दीर का सही मफ़्हूम समझने के लिए निम्न उमूर नज़र में रहने चाहिएं :

1. तक़दीर का शाब्दिक अर्थ अंदाज़ा (Guess) लगाना है।

2. अल्लाह तआला का इल्म इस क़द्र वसीअ और लामहदूद है कि माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल, ग़ायब और हाज़िर, दिन या रात, रोशनी, तारीकी की इस्तेलाहात इसके लिए बिल्कुल बे मानी हैं अल्लाह तआला के लिए हर चीज़ एक खुली किताब की तरह है।

3. अल्लाह का इल्म वसीअ और लामहदूद होने की वजह से इस क़द्र यक़ीनी है कि अपनी मख़्लूक़ के बारे में उसका लगाया हुआ अंदाज़ा या लिखी हुई तक़दीर ग़लत नहीं हो सकती।

4. अल्लाह तआला का अपनी मख़्लूक़ के बारे में अंदाज़ा लगाना या तक़दीर लिखना मख़्लूक़ को किसी बात पर मजबूर नहीं करता, जिस तरह

Www.IslamicBooks.Website

इम्तेहान से पहले किसी उस्ताद का अपने शागिर्द के बारे में यह अंदाज़ा (Guess) लगाना कि फ़लां फ़लां शागिर्द फेल होगा, फ़लां फ़लां पास होगा किसी शागिर्द को फेल या पास होने पर मजबूर नहीं करता, चाहे वह अंदाज़ा इम्तेहान के बाद सौ फ़ीसद दुरुस्त ही क्यों न हो इसी तरह अल्लाह तआला का अपने मख़्लूक़ के बारे में अंदाज़ा लगाना या तक़दीर लिखना किसी को किसी फ़ेअल पर हरगिज़ मजबूर नहीं करता।

5. किसी शख़्स की तक़दीर लिखने के बाद क्या अल्लाह तआला उस तक़दीर को मन व अन नाफ़िज़ करने पर मजबूर है या उसे बदलने पर क़ादिर है? जवाब यह है कि अल्लाह तआला अपने फैसलों को बदलने पर पूरी तरह क़ादिर है और यह बात रसूले अकरम सल्ल० की कुछ दुआओं से साबित होती है कि अल्लाह तआला कुछ फैसलों को यक़ीनन बदलते हैं। दुआ क़ुनूत में रसूले अकरम सल्ल० से यह अल्फ़ाज़ साबित हैं : "मुझे उस बुराई से बचा ले जिसका तूने फ़ैसला किया है।" (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसाई वग़ैरह) एक दूसरी हदीस के अल्फ़ाज़ ये हैं : "या अल्लाह! हम बुरे फ़ैसले से तेरी पनाह चाहते हैं।" (बुख़ारी, मुस्लिम) अगर अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ के बारे में पहले से किए हुए फ़ैसलों को बदलने पर क़ादिर नहीं तो इन दुआओं के अल्फ़ाज़ बिल्कुल बेमानी और बेमक़सद होकर रह जाते। पस इन अल्फ़ाज़ का साफ़ और सीधा मतलब यही है कि दुआओं के नतीजे में अल्लाह तआला अपने फ़ैसले यक़ीनन बदलते हैं। यह बात रसूले अकरम सल्ल० ने एक हदीस में भी इर्शाद फ़रमाई है कि : "तक़दीर को कोई शै नहीं बदल सकती, मगर दुआ।" (तिर्मिज़ी)

उपरोक्त पांच नुकात को सामने रखते हुए यह नतीजा निकलता है कि जो शख़्स यह समझता है कि चूंकि अल्लाह तआला रोज़े अव्वल से हमारे बारे में अच्छे या बुरे फ़ैसले लिख चुका है लिहाज़ा दुआ करने का कोई फ़ायदा नहीं, वह सरासर गुमराही में मुब्तला है। शैतान ने उसे अल्लाह तआला के बारे में धोखे और फ़रेब में मुब्तला कर रखा है।

दुआ और ज़ाहिरी असबाब

मक़सद को पाने के लिए ज़ाहिरी असबाब की एहमियत से इंकार मुमकिन नहीं, ख़ुद शरीअत ने असबाब और तदबीरें इख़्तियार करने का हुक्म दिया है। अल्लाह तआला का इर्शाद मुबारक है : "जहां तक तुम्हारा बस चले ज़्यादा से

Www.IslamicBooks.Website

ज़्यादा ताक़त और तैयार बंधे रहने वाले घोड़े मुक़ाबले के लिए तैयार रखो।" (सूरह अनफ़ाल : 60) एक आदमी रसूले अकरम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह सल्ल०! मैं अपनी ऊंटनी को बांधूं और अल्लाह पर तवक्कुल करूं या उसे छोड़ दूं और तवक्कुल करूं?" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "पहले उसे बांधों फिर तवक्कुल करो।" (तिर्मिज़ी) इससे पता चलता है कि शरीअत ज़ाहिरी असबाब व वसाइल और तदबीरें इख़्तियार करने को मायूब नहीं समझती बल्कि उसका हुक्म देती है, जो चीज़ मायूब है वह ज़ाहिरी असबाब और वसाइल पर तवक्कुल करना और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ होने को नज़रअंदाज़ करना या उसकी एहमियत कम करना है। दीने हक़ की सरबुलन्दी के लिए रसूले अकरम सल्ल० ने जहां अमलन दिर रात जद्दोजहद फ़रमाई वहां सिकी भी लम्हा दुआ के ज़रिए अल्लाह की ओर रुजूअ को फ़रामोश नहीं किया। कुफ़्र व इस्लाम की सबसे पहली अज़ीमतरीन लड़ाई......ग़ज़वा बद्र........में रसूले अकरम सल्ल० ने जहां अपनी इस्तेताअत के मुताबिक़ माद्दी असबाब और वसाइल मुहय्या फ़रमाए वहां मैदाने जंग में सफ़ आरा होने के बाद सबसे पहले अल्लाह के हुज़ूर इंतिहाई ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ के साथ दस्ते दुआ फैला कर यह दरख़्वास्त की : "या अल्लाह! ये हैं क़ुरैश, जो अपने सारे सामान फ़ख़्र व ग़ुरूर के साथ मैदाने जंग में आए हैं, तुझसे दुश्मनी रखते हैं, तेरे रसूल को झुठलाते हैं, पस ऐ अल्लाह! जिस नुसरत का तूने मुझसे वादा किया है अब वह भेज दे। या अल्लाह अगर आज ये मुट्ठी भर जमाअत हलाक हो गई तो ज़मीन पर कभी तेरी इबादत न होगी।" (सीरत इब्ने हिशाम) गोया आप सल्ल० ने ज़ाहिरी असबाब की मुमकिन तैयारी और दुआ दोनों में से किसी एक को भी नज़रअंदाज़ नहीं फ़रमाया। हां अगर दोनों चीज़ों में तक़ाबुल का सवाल दरपेश हो तो हमारे नज़दीक बिलातामिल ज़ाहिरी असबाब के मामले में दुआ ही अहम और ज़रूरी है। ज़िंदगी के बहुत से मामलात ऐसे हैं जिनमें ज़ाहिरी असबाब या तदबीरें इख़्तियार करना मुमकिन ही नहीं। मसलन आफ़ात समावी, जैसे ज़लज़ले, तूफ़ान बादुबारां, सैलाब, ख़ुश्कसाली (बारिश का न होना) वग़ैरह। ग़ौर फ़रमाइए, ऐसे हवादिस से बचने के लिए इंसान वक़्त से पहले कौन-सी माद्दी तदबीरें इख़्तियार कर सकता है जबकि ऐसे हवादिस से बचने के लिए बेशुमार दुआओं की तालीम दी गई है। अहादीस में बनी इसराईल के तीन अफ़राद का वाक़ेआ आता है कि चट्टान ग़ार के सामने आ गिरी। इस सूरतेहाल में या इस मिलते जुलते दूसरे

Www.IslamicBooks.Website

वाक़ेआत में दुआ के अलावा कौन-सी तदबीर या वसाइल इख़्तियार किए जा सकते हैं? कोई शख़्स बदतरीन बढ़ापे की उमर पसंद नहीं करता लेकिन उससे बचने के लिए कौन से असबाब या वसाइल इख़्तियार किए जा सकते हैं। सिवाए इस दुआ के जो रसूले अकरम सल्ल० ने हमें सिखाई है? जिस तरह बहुत से मामलात ऐसे होते हैं जिनमें इंसान अपनी हिम्मत और अक़्ल के मुताबिक़ दुनिया भर की तदबीरें और वसाइल आज़माने के बावजूद मक़सद को पाने में नाकाम रहता है और चार व नाचार उसे दुआ की तरफ़ रुजूअ करना पड़ता है। मसलन हर दीनदार और परहेज़गार आदमी यह चाहता है कि उसकी औलाद सालेह, मुत्तक़ी और वालिदैन की फ़रमांबरदार बने, अगर ख़ुदा न करे ऐसा न हो तो वालिदैन अपनी औलाद की इस्लाह के लिए हर वह तदबीर और जतन कर गुज़रते हैं, जो उनके बस में हो, लेकिन बअज़ औक़ात ऐसा होता है किं वालिदैन की सारी की सारी तदबीरें और कोशिश धरी की धरी रह जाती हैं और मामला यहां आकर ख़त्म होता है कि अब अल्लाह से दुआ की जाए कि वह मारी औलाद को हिदायत दे और उनकी इस्लाह फ़रमाए। मेडिकल साइंस बिलाशुबह बहुत तरक़्क़ी कर चुकी है, लेकिन अब भी कितनी बीमारियां ऐसी हैं जिनका इलाज अभी तक दरयाफ़्त नहीं हो सका। ऐसी बीमारियों की तो बात ही दूसरी है कि उनका दुआ के अलावा कोई इलाज है ही नहीं, लेकिन वह बीमारियां जिनका इलाज दरयाफ़्त हो चुका है उनके मरीज़ों में से भी बेशुमार मरीज़ ऐसे होते हैं, जो दुनिया भर के बड़े बड़े देशों में जाकर जदीदतरीन इलाज करवा देखते हैं लेकिन आख़िरी चाराकार यही होता है कि सारी दुनिया छान मारी है कहीं से शिफ़ा नसीब नहीं हुई, अल्लाह से दुआ कीजिए कि सेहत अता फ़रमाए, बअज़ औक़ात आदमी नादानिस्ता तौर पर ऐसे फ़ित्नों में फंस जाता है कि उनसे निकलने की हर तदबीर आर कोशिशें नाकाम और लाहासिल साबित होती है कि बअज़ औक़ात इंसानी तदबीरें और कोशिशें ऐसे फ़ित्नों से निकलने की बजाए मज़ीद फंसाने का ज़रिया बन जाती हैं। ऐसे हालात में इंसान को बिलआख़िर दुआ ही का सहारा लेना पड़ता है। पस हक़ीक़त यह है कि वह मामलात जिनमें तदबीरें और माद्दी वसाइल इख़्तियार करना मुमकिन ही नहीं वहां दुआ ही सबसे बड़ी तदबीर और दुआ ही सबसे बड़ा वसीला है और वह मामला जिनमें इंसान बिसात भर तदबीरें और वसाइल मुहय्या कर सकता है उनमें भी बसाऔक़ात वसाइल और तदबीरें इख़्तियार करने के बावजूद थक हार कर दुआ की तरफ़ ही रुजूअ

Www.IslamicBooks.Website

करना पड़ता है।

पस इस सारी गुफ़्तुगू का हासिल यह है कि जहां कहीं ज़ाहिरी असबाब और वसाइल मुहय्या करना या तदबीरें इख़्तियार करना मुमकिन हो वहां इख़्तियार करने चाहिएं, लेकिन उन पर तवक्कुल हरगिज़ नहीं करना चाहिए, तवक्कुल के लायक़ सिर्फ़ एक ही चीज़ है और वह है दुआ के ज़रिए अल्लाह की तरफ़ रुजूअ। ग़ज़वा बद्र में शिकस्त और क़लील वसाइल के साथ अल्लाह की तरफ़ रुजूअ ने मुसलमानों को बेहतरीन फ़तह से हमकिनार किया। जबकि ग़ज़वा हुनैन में बेहतरीन और कसीर वसाइल के साथ वसाइल पर तवक्कुल के तसव्वुर ने मुसलमानों को शिकस्त से दोचार कर दिया। दुआ और ज़ाहिरी असबाब पर बहस करते हुए। ग़ज़वा हुनैन में मुसलमानों को दी गई तालीम को हरगिज़ नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

अल्लाह का ज़िक्र

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को कसरत से ज़िक्र करने का हुक्म दिया है। सूरह अहज़ाब में अल्लाह पाक का इर्शाद मुबारक है : "ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अल्लाह को कसरत से याद करो।" (आयत 41) अल्लाह को कसरत से याद करने का मतलब यह है कि इंसान अपने क़ौल व फ़ेअल दोनों में अल्लाह को याद रखे। क़ौल में ज़िक्र यह है कि हर बात में अल्लाह का नाम लिया जाए, मसलन हर काम शुरू करने से पहले बिस्मिल्लाह कहा जाए, नेमत मिलने पर अलहम्दुलिल्लाह कहा जाए, अच्छी चीज़ देखने पर माशाअल्लाह कहा जाए, वादा करने पर इंशाअल्लाह कहा जाए, क़ुरआन की तिलावत कसरत से की जाए, और उठते-बैठते, चलते फिरते हर वक़्त मसनून दुआएं पढ़ी जाएं। फ़ेअल में ज़िक्र यह है कि इंसान अपने तमाम मामलात में अल्लाह के अहकाम को याद रखे नमाज़, ज़काम, रोज़ा और हज के अलावा वालिदैन के हुक़ूक़, बीवी-बच्चों के हुक़ूक़, अज़ीज़ व अक़रिब के हुक़ूक़, हमसायों के हुक़ूक़, बेवाओं और यतीमों के हुक़ूक़, बाहमी लेन-देन कारोबार के मामलात, मुलाज़िमत के फ़राइज़, ग़र्ज़ हर मामले में अल्लाह तआला के अहकाम की इताअत और पैरवी की जाए। इसी ज़िक्र की तारीफ़ रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक हदीस में यूं फ़रमाई है : "जिसने अल्लाह की इताअत की उसने गोया अल्लाह का ज़िक्र किया।" (क़ुरआन मजीद, अशरफ़ुल हवाशी, पृ० 29) क़ौल व फ़ेअल

Www.IslamicBooks.Website

में हर वक़्त अल्लाह तआला को याद रखने को ज़िक्रे कसीर कहा गया है और इसी ज़िक्रे कसीरे को दुनिया और आख़िरत में कामयाबी और फ़लाह का ज़रिया बताया गया है। सूरह जुमआ में अल्लाह तआला का इर्शाद मुबारक है : "अल्लाह को कसरत से याद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ।" (आयत 10) एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह सल्ल०! जिहाद करने वालों में सबसे ज़्यादा अज्र पाने वाला शख़्स कौन है?" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "जो उनमें से अल्लाह को कसरत से याद करने वाला है।" उसने फिर अर्ज़ किया : "रोज़ा रखने वालों में से सबसे ज़्यादा अज्र किसे मिलेगा?" आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "जो उनमें से अल्लाह को कसरत से याद करे।" फिर उस शख़्स ने नमाज, ज़कात, हज और सदक़ा करने वालों के मुताल्लिक़ पूछा तो आपने हर एक का यही जवाब दिया : "जो उनमें से अल्लाह को कसरत से याद करने वाला है।" (मुस्नद अहमद) एक शख़्स ने अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह! सबसे अफ़ज़ल अमल कौन-सा है?" आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "तू इस दुनिया से इस हाल में रुख़्सत हो कि तेरी ज़बान अल्लाह की याद में मशग़ूल हो।" (तिर्मिज़ी) रसूलुल्लाह सल्ल० ने अल्लाह का ज़िक्र करने वालों को ज़िंदा और न करने वालों को मुर्दा क़रार दिया है। (बुख़ारी व मुस्लिम) एक हदीस में आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया है कि शैतान इब्ने आदम के दिल पर बैठा रहता है जब इंसान अल्लाह को याद करता है तो शैतान पीछे हट जाता है और जब ग़ाफ़िल होता है तो वस्वसा डालने लगता है। (बुख़ारी)

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहि० और उनके भाई हज़रत हारून अलैहि० को फ़िरऔन जैसे ज़ालिम और सरकश बादशाह के पास जाने का हुक्म दिया। तो साथ ही यह ताकीद फ़रमाई : "तुम और तुम्हारा भाई दोनों मेरी निशानियां लेकर जाओ और मेरी याद में कमी न करना।" (सूरह ता0हा0 : 42) गोया दावते हक़ की राह में पेश आने वाली आज़माइश और इब्तला के मुक़ाबले में सबसे बड़ा हथियार, अल्लाह की याद है जो दाओ को क़ुव्वत और हौसला अता करती है जंगे बद्र के मौक़े पर जब मुसलमानों की एक क़लील-सी बेसरो सामान जमाअत को अपने से कई बड़े मुस्लह लश्कर से मुक़ाबला दरपेश था, तो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को यह हिदायत फ़रमाई : "ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो साबित क़दम रहो और अल्लाह को कसरत से याद करो ताकि तुम्हें कामयाबी हासिल हो।" (सूरह अनफ़ाल : 45)

Www.IslamicBooks.Website

पस दावते हक़ की इब्तला व आज़माइश का मामला हो या मैदाने जंग में कुफ़्फ़ार लड़ाई दरपेश हो, अल्लाह की याद ही फ़लाह और कामयाबी की ज़मानत है इसी ज़िक्रे कसीर की बरकत से इंसान को दुनिया जहान की वह सबसे बड़ी नेमत सुकूने क़ल्ब हासिल होती है जिसे हासिल होने के लिए आज ख़ुदा की मख़्लूक़ लाखों और करोड़ों रुपये सर्फ़ कर रही है जिसकी ख़ातिर बेशुमार लोग अपनी दुनिया और दीन तक बर्बाद कर लेते हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि यह नेमत किसी बाज़ार या मज़ार से नहीं मिलती न किसी दरगाह या ख़ानक़ाह से हासिल होती है बल्कि आसमानों से नाज़िल होती है : "याद रखो! सुकूने क़ल्ब तो अल्लाह के ज़िक्र से ही मिलता है।" (सूरह रअद : 28)

अल्लाह की याद से ग़फ़लत, दुनिया और आख़िरत में शदीद ख़सारे का ज़रिया है अल्लाह तआला का फ़ैसला है : "और जिसने मेरी याद से मुंह मोड़ा उसके लिए दुनिया में तंग ज़िंदगी होगी और क़यामत के दिन हम उसे अंधा करके उठाएंगे।" (सूरह ता०हा० : 124) दुनिया में तंग ज़िंदगी से मुराद महज़ रिज़्क़ की तंगी नहीं, बल्कि मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स करोड़पती भी होगा तो उसे सुकूने क़ल्ब मेयस्सर नहीं आएगा अगर कोई मुल्क का फ़रमारवा होगा तो उसे भी चैन नसीब नहीं होगा। सूरह ज़ुख़रुफ़ में अल्लाह पाक का इर्शाद मुबारक है : "जो शख़्स अल्लाह की याद से ग़फ़लत बरतेगा हम उस पर एक शैतान मुसल्ल०त कर देंगे जो (हर वक़्त) उसके साथ रहेगा।" (सूरह ज़ुख़रुफ़ : 36) जिस आदमी पर अल्लाह तआला की तरफ़ से सज़ा के तौर पर शैतान मुसल्ल०त कर दिया जाए उसे दुनिया में सुकून और चैन कैसे मेयस्सर आ सकता है और फिर उसकी आख़िरत की बर्बादी में कौन-सी कसर बाक़ी रह जाएगी? अल्लाह तआला सब मुसलमानों को ऐसी हालत से महफ़ूज़ रखे। आमीन!

तौबा

इर्शाद नबवी सल्ल० है : "हर शख़्स ख़ताकार है और बेहतरीन ख़ताकार तौबा करने वाले हैं (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)। इस हदीस मुबारक में रसूले अकरम सल्ल० ने दो बातों की निशानदेही फ़रमाई है पहली यह कि हर शख़्स से गुनाह सरज़द होते हैं कोई शख़्स अपने आपको गुनाहों से मासूम न समझे। दूसरी यह कि गुनाह के बाद तौबा मत्लूब ही नही बल्कि पसंदीदा है, सूरह बक़रा में अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है : "अल्लाह तआला यक़ीनन तौबा करने वालों और

Www.IslamicBooks.Website

पाकीज़गी इख़्तियार करने वालों से मुहब्बत करता है।" (सूरह बक़रा : 222) तौबा अल्लाह के नज़दीक किस क़द्र महबूब और प्यारा अमल है इसका अंदाज़ा उस हदीस से लगाया जा सकता है जिसमें आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि : "अगर एक आदमी अपनी सवारी पर किसी चटियल मैदान से गुज़र रहा हो और आराम करने की ग़र्ज़ से नीचे उतर कर सो जाए इसी दौरान उसकी सवारी (सफ़र के सामान सहित) गुम हो जाए और जब सोकर उठे तो अपनी सवारी को तलाश करते थक जाए भूख और प्यास की वजह से मौत उसे सामने नज़र आने लगे और वह मायूस होकर दरख़्त के साए में बैठ जाए तग अचानक उसकी सवारी उसे मिल जाए और यह आदमी उसकी नकेल पड़के, ख़ुशी के मारे (शिद्दते जज़्बात से मग़लूब होकर) यह कह दे : "ऐ अल्लाह! तू मेरा बन्दा में तेरा रब।" अल्लाह तआला को तौबां करने वाले की तौबा से इससे भी ज़्यादा ख़ुशी महसूस होती है। (बुख़ारी, मुस्लिम) अंदाज़ा फ़रमाइए एक ऐसा अमल जिसका फ़ायदा सरासर ख़ुद बन्दे को पहुंचता है अल्लाह उससे कितना ख़ुश होता है एक हदीस शरीफ़ में है कि रात के वक़्त अल्लाह तआला अपना हाथ फैलाते हैं ताकि दिन में गुनाह करने वाला तौबा कर ले (और अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमाता है) फिर दिन के वक़्त अल्लाह तआला अपना हाथ फैलाता है ताकि रात में गुनाह करने वाला तौबा कर ले। (मुस्लिम) इससे पता चलता है कि अल्लाह तआला को बन्दे की तौबा का किस क़द्र इंतिज़ार रहता है उस ग़ुलाम की ख़ुशनसीबी के क्या कहने जिसके दरवाज़े पर ख़ुद उसका मालिक चलकर आए और दस्तक देकर कहे कि जो मांगना चाहते हो मांगो, मैं देने को तैयार हूं और उस ग़ुलाम की बदनसीबी का क्या ठिकाना जिसका मालिक चलकर उसके दरवाज़े पर आए और दस्तक देकर पूछे कि तुम्हारे क्या हाजत है जो मांगना चाहते हो मांगो मैं देने को तैयार हूं और ग़ुलाम मीठी नींद सो रहा हो या अपने मालिक के इस करम व सख़ावत से ही नाआशना हो। तौबा की तर्ग़ीब इससे ज़्यादा और क्या होगी कि ख़ुद रसूले अकरम सल्ल० फ़रमाते हैं : "लोगो! अल्लाह के हुज़ूर तौबा करो बेशक मैं रोज़ाना सौ मर्तबा तौबा करता हूं।" (मुस्लिम) इस बात का अंदाज़ा हर शख़्स को ख़ुद कर लेना चाहिए कि उसे रसूलुल्लाह सल्ल० के मुक़ाबले में किस क़द्र ज़्यादा तौबा करने की ज़रूरत है।

तौबा का शाब्दिक अर्थ वापस पलटना है। तौबा करने का मतलब यह है कि इंसान गुनाह के रास्ते से वापस पलट आया है और नेकी के रास्ते पर लग

Www.IslamicBooks.Website

गया है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में मुसलमानों को ख़ालिस तौबा करने का हुक्म दिया है। हज़रत उबी बिन कअब रज़ि० से किसी ने ख़ालिस तौबा का मफ़्हूम पूछा तो उन्होंने कहा, मैंने यही सवाल रसूलुल्लाह सल्ल० से पूछा था, तो आप सल्ल० ने फ़रमाया : "इससे मुराद यह है कि जब तुमसे कोई गुनाह हो जाए तो उस पर नादिम हो, फिर अल्लाह से माफ़ी मांगो और आइंदा कभी उस गुनाह का इरतकाब न करो।" (इब्ने जरीर ब-हवाला तफ़्हीमुल क़ुरआन)

इस हदीस में रसूलुल्लाह सल्ल० ने तौबा के लिए तीन शर्तें मुक़र्रर फ़रमाई हैं :

1. गुनाह पर नादिम होना।

2. अल्लाह से माफ़ी मांगना।

3. आइंदा उस गुनाह से पूरी तरह बचना।

तौबा के मामले में चन्द दीगर अहम उमूर निम्न हैं :

1. तौबा का वक़्त आलमे नज़अ तारी होने से पहले तक है, रसूलुल्लाह सल्ल० का इर्शाद मुबारक है : "अल्लाह बन्दे की तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल फ़रमाता है जब तक वह नज़अ में मुब्तला नहीं होता।" (तिर्मिज़ी)

2. गुनाह पर किसी दुनियावी ग़र्ज़ के लिए नदामत महसूस करना। जैसे बेइज़्ज़ती के डर से, माली नुक़्सान के ख़ौफ़ से, बीमारी या मौत के डर से, तौबा की तारीफ़ में नहीं आया।

3. अगर किसी का नफ़्स तौबा के बाद भी गुज़िश्ता गुनाके तसव्वुर से लुत्फ़अंदोज़ होता है तो उसे उस वक़्त तक बार-बार तौबा करते रहना चाहिए जब तक उसका नफ़्स हक़ीक़त में नदामत महसूस न करने लगे।

4. अल्लाह तआला की रहमत इंसानी वहम व गुमान से भी ज़्यादा वसीअ है उसकी रहमत से कभी मायूस नहीं होना चाहिए। रसूले अकरम सल्ल० ने बनी इसराईल के एक शख़्स का वाक़ेआ बयान फ़रमाया जिसने 99 क़त्ल किए थे। उसने एक दुर्वेश से अपनी तौबा के बारे में दरयाफ़्त किया तो उसने कहा : "तुम्हारी तौबा क़ुबूल नहीं हो सकती।" चुनांचे उस शख़्स ने उसे भी क़त्ल कर दिया तक उसने एक और आदमी से मसला पूछा उसने बताया : "हां! तुम्हारी तौबा क़ुबूल हो सकती है बशर्ते कि तुम फ़लां (नेक लोगों की) बस्ती में चले जाओ।" चुनांचे यह आदमी अपनी बस्ती से हिजरत करके दूसरी तरफ़ चल दिया। रास्ते में उसे मौत आ गई, जन्नत और जहन्नम के फ़रिश्ते आपस में

Www.IslamicBooks.Website

इख़्तेलाफ़ करने लगे, अल्लाह तआला की तरफ़ से दोनों (अगली और पिछली) ज़मीनें नापने का हुक्म हुआ, ज़मीन नापी गई तो नेक लोगों की बस्ती (जिस तरफ़ हिजरत करके जा रहा था) बालिश्तभर क़रीब निकली और उसकी मग़्फ़िरत कर दी गई। (बुख़ारी, मुस्लिम)

एक बूढ़ा शख़्स रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह सल्ल० ! सारी ज़िंदगी गुनाहों में गुज़री है कोई गुनाह ऐसा नहीं जिसका इरतकाब न किया हो। ज़मीन की सारी मख़्लूक़ में अगर मेरे गुनाह तक़्सीम कर दिया जाएं तो सबको ले डूबें, क्या मेरी तौबा की कोई सूरत है? आप सल्ल० ने पूछा : "क्या तूने इस्लाम क़ुबूल कर लिया है?" उसने अर्ज़ किया : "मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं।" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "जा अल्लाह माफ़ करने वाला और बुराइयों को नेकियों में बदलने वाला है।" उसने अर्ज़ किया : "क्या मेरा सारे गुनाह और जुर्म माफ़ हो जाएंगे?" आपने इर्शाद फ़रमाया : "हां तेरे सारे गुनाह और जुर्म माफ़ हो जाएंगे।" (इब्ने कसीर) पस अल्लाह की रहमत से न तो ख़ुद किसी को मायूस होना चाहिए और ही किसी दूसरे शख़्स को यह हक़ पहुंचता है कि वह किसी तौबा करने वालो को अल्लाह की रहमत से मायूस करे।

5. जिस तरह अल्लाह की रहमत से मायूस होना गुनाह है उसी तरह अल्लाह तआला को ग़फ़ूर और रहीम समझकर जानकर गुनाह करते चले जाना या तौबा करके बार-बार तोड़ते चले जाना उससे भी बड़ा गुनाह है जो दरअस्ल अल्लाह तआला की रहमत से मज़ाक़ और तमस्ख़र के मुतरादिफ़ है क़ुरआन पाक में इर्शाद मुबारक है : (लोगो ख़बरदार रहो) "कोई धोखेबाज़ तुम्हें अल्लाह के मामले में धोखा न देने पाए।" (सूरह लुक़मान : 33) अल्लाह के मामले में धोखा यही है कि इंसान इस फ़रेब में मुब्तला रहे कि अल्लाह तआला ग़फ़ूर व रहीम है, गुनाह करते चले जाओ वह बख़्शता चला जाएगा और सज़ा नहीं देगा। रसूलुल्लाह सल्ल० ने ईमान की सही कैफ़ियत उम्मीद और ख़ौफ़ के दर्मियान बतलाई है। इंसान को जितनी अल्लाह की रहमत से मग़्फ़िरत की उम्मीद रखनी चाहिए उतना ही अल्लाह की पकड़ और गिरफ़्त का ख़ौफ़ भी दामनगीर रहना चाहिए।

इस्तिग़फ़ार

Www.IslamicBooks.Website

इस्तिग़फ़ार का मतलब है माफ़ी और बख़्शिश तलब करना। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में अल्लाह बख़्शिश के लिए चार शर्तें मुक़र्रर फ़रमाई हैं।

"जो शख़्स तौबा करे, ईमान लाए नेक अमल करे और सीधा चलता रहे उसके लिए मैं बहुत बख़्शने वाला हूं।" (सूरह ता०हा० : 82)

इन शर्तों के मुताबिक़ एक, इंसान को सबसे पहले गुज़िश्ता ज़िंदगी के गुनाहों (अल्लाह की नाफ़रमानी, शिर्क या कुफ़्र) से सच्ची तौबा करनी चाहिए। दूसरे, अल्लाह के बाद अल्लाह के रसूल, किताब और आख़िरत पर ख़ुलूसे दिल से ईमान लाना चाहिए। तीसरे, किताब व सुन्नत के मुताबिक़ अपने आमाल की इस्लाह करनी चाहिएं और आख़िर में नेकी के रास्ते पर इस्तक़ामत से जमे रहना चाहिए। ऐसे लोगों से अल्लाह तआला ने माफ़ी और बख़्शिश का पुख़्ता वादा फ़रमाया है। हदीस क़ुदसी है अल्लाह पाक फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम! अगर तेरे गुनाह आसमान के किनारों तक पहुंच जाएं और तू मुझसे इस्तिग़फ़ार करे तो मैं तुझे बख़्श दूंगा। ऐ इब्ने आदम! अगर तू मेरे पास ज़मीन के बराबर गुनाह लेकर आए और मुझे इस हाल में मिले कि मेरे साथ शिर्क न किया हो तो मैं ज़मीन के बराबर तुझे मग़्फ़िरत अता करूंगा।" (अहदम, तिर्मिज़ी)

एक दूसरी हदीस में रसूले अकरम सल्ल० का इर्शाद मुबारक है : "वह शख़्स ख़ुशक़िस्मत है जिसके आमालनामे में कसरत से इस्तिग़फ़ार पाया गया।" (इब्ने माजा, नसाई)

गुनाहों की माफ़ी के अलावा इस्तिग़फ़ार दुनिया में कितनी नेमतों और बरक़तों का ज़रिया है उसका अंदाज़ा इस वाक़ये से लगाया जा सकता है। हज़रत हसन बसरी रह की मज्लिस में एक शख़्स ने ख़ुश्कसाली की शिकायत की तो उन्होंने हिदायत की : "अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करो।" दूसरे शख़्स ने तंगदस्ती की शिकायत की, तीसरे ने कहा मेरे यहां औलाद नहीं, चौथे ने कहा मेरी ज़मीन की पैदावाद कम है? हज़रत हसन बसरी रह हर एक को यही जवाब देते : "इस्तिग़फ़ार करो।" लोगों ने पूछा : "यह क्या मामला है?" आपने सब लोगों को मुख़्तलिफ़ शिकायतों का एक ही इलाज बतलाया है।" हज़रत हसन बसरी रह ने उनके जवाब में सूरह नूह की ये आयतें तिलावत फ़रमाई :

Www.IslamicBooks.Website

"हज़रत नूह अलैहि० ने (अपनी क़ौम से) कहा : "अपने रब से इस्तिग़फ़ार करो बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है वह तुम पर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाएगा तुम्हें माल और औलाद से नवाज़ेगा, तुम्हारे लिए बाग़ात पैदा करेगा और नहरें चारी करेगा।" (कशाफ़ बहवाला तफ़्हीमुल क़ुरआन)

ग़ैर मसनून अदइया व अज़्कार

मुसलमानों की ज़िंदगी में अदइया व अज़्कार की जिस क़द्र एहमियत है उसी क़द्र एहमियत इस बात की है कि सिर्फ़ मसनून अदइया व अज़्कार किए जाएं और ग़ैर मसनून अदइया व अज़्कार को बिला तामिल तर्क कर दिया जाए।

बदक़िस्मती से हमारे यहां जिहालत इस क़द्र ज़्यादा है कि सुन्नते मुतह्हिरा को क़ुबूले आम हासिल नहीं होता, लेकिन बिदआत जंगल की आग की तरह फैलती चली जाती है हालांकि वह अमल जो सुन्नते रसूल से साबित न हो उससे अज्र व सवाब की उम्मीद रखना अब्स और बेकार है और ऐसे अमल पर मेहनत और रियाज़त करना लाहासिल है अल्लाह तआला का इर्शाद मुबारक है : "ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो और अपने आमाल बर्बाद न करो।" (सूरह मुहम्मद : 33) इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने वाज़ेह अल्फ़ाज़ में ऐसे आमाल को ज़ाया क़रार दिया है जो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की इताअत से बाहर हैं। ख़ुद रसूले अकरम सल्ल० ने बेशुमार मौक़ों पर इसी अक़ीदे की वज़ाहत फ़रमाई है चन्द अहादीस मुलाहिज़ा हों।

1. "जिसने दीन में कोई ऐसा काम किया जो शरीअत में नहीं वह काम मरदूद है।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

2. "हर नई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और गुमराही का ठिकाना आग है।" (नसाई)

3. "सुन्नते रसूल से गुरेज़ करने वाला हलाक होने वाला है।" (इब्ने अबी आसिम)

किताब व सुन्नत की तालीमात से यह बात बिल्कुल वाज़ेह है कि दीन में सुन्नते रसूल सल्ल० छोड़कर कोई दूसरा तरीक़ा इख़्तियार करना सरासर गुमराही और हलाकत है। एक हदीस में रसूले अकरम सल्ल० ने यहां तक इर्शाद फ़रमाया

Www.IslamicBooks.Website

है : "अगर आज मूसा भी ज़िंदा होते तो उनके लिए भी मेरी इत्तबाअ के बग़ैर कोई चाराकार न होता।" (अहमद)

अब एक नज़र उन अदइया व अज़्कार पर डालिए जो हमारे यहां राइज हैं, जैसे दुआ सरयानी, दुआ जमीला, दुआ हबीब, दुआ अम्न, दुआ मुस्तजाब, दुआ नूर, दुआ निस्फ़ शाबान, दुआ हिज़्बुल बह्र, दुआ अकाशा, दुआ गंजुल अर्श, दुआ बैज़, दुआ मंज़िल, अहदनामा, क़सीदा ग़ौसिया, शश किफ़्ल, हफ़्त हैकल, दुरूद ताज, दुरूद लखी, दुरूद अकबर, दुरूद मुक़द्दस, दुरूद माही वग़ैरह ये सब ऐसे अज़्कार हैं जो सुन्नते रसूल सल्ल० से साबित नहीं, लेकिन इसके बावजूद ये मुसलमानों की ज़िंदगियों में इस तरह रच बस गए हैं कि मसनूना अदइया व अज़्कार जैसे तिलावते क़ुरआन, तस्बीह व तक़द्दुस, तकबीर व तहमीद और तंहलील, नमाज़, रोज़ा, ज़कात वग़ैरह ताक़ निस्यां बनकर रह गए हैं।

ग़ैर मसनून ज़िक्र के सिलसिले में हम यहां "अल्लाह, या अल्लाहु" के ज़िक्र के बारे में यह वज़ाहत करना ज़रूरी समझते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० की सुन्नत मुतह्हिरा और उसके बाद ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन व दूसरे सहाबा किराम रज़ि०, ताबईन, तबेअ ताबईन, अइम्मा हदीस और फ़ुक़हा अज़्ज़ाम में से किसी के क़ौल व फ़ेअल से सिर्फ़ "अल्लाह" या "अल्लाहु" के ज़िक्र का कोई सुबूत नहीं मिलता। इस ग़ैर मसनून ज़िक्र की दावत देने वाले गिरोह की तालीमात का सबसे ख़तरनाक पहलू यह है कि उसके ज़रिए आहिस्ता आहिस्ता इंसान के अक़ादों में इस तरह नक़ब लगाई जाती है कि "ज़िक्र" बिलआख़िर शिर्क की अथाह गहराइयों में पहुंच जाता है। इब्तदा में ज़िक्र करने वाले को अल्लाहु की ज़र्बों से इस तरह क़ल्ब को जारी करने की तालीम दी जाती है कि ज़िक्र करने वाले का क़ल्ब कर वक़्त अपने आप सोते, जागते, चलते, फिरते, उठते, बैठते, खाते, पीते, "अल्लाहु" का ज़िक्र करने लगे। इसके बाद ज़िक्र करने वाले को "अल्लाहु की ज़र्बों से अल्लाह तआला को (मआज़ल्लाह) अपने जिस्म में सरायत करने या ज़म करने की तालीम दी जाती है यह वही अक़ीदा है जिसे सूफ़िया की इस्तलाह में "हुलूल" कहा जाता है जोकि खुला शिर्क अकबर है। ज़िक्र के इस मक़ाम पर पहुंच कर ज़िक्र करने वाला ज़िक्र को तिलावत क़ुरआन नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज से अफ़ज़ल समझने लगता है।

अल्लाहु के ज़िक्र की मज्लिस में दौराने ज़िक्र न सिर्फ़ रसूले अकरम सल्ल० की ज़ियारत करवाने का दांवा किया जाता है बल्कि ज़ाकिर क़ल्बी को बैतुल

Www.IslamicBooks.Website

मामूर (बैतुल्लाह शरीफ़ के बराबर आसमानों पर वह घर जिसका फ़रिश्ते तवाफ़ करते हैं) तक पहुंचाने का मुज़दा भी सुनाया जाता है। इस ज़िक्र के दाओी यह अक़ीदा भी रखते हैं कि साठ (60) साल तक ज़ाकिर क़ल्बी न बनने वालों को रसूले अकरम सल्ल० अपनी उम्मत से ख़ारिज कर देते हैं। उनका यह अक़ीदा भी है कि मरने के बाद ज़ाकिर क़ल्बी से मुंकर नकीर सवाल जवाब नहीं करते, और ज़ाकिर क़ल्बी अपनी क़ब्र में बैठकर न सिर्फ़ अल्लाह अल्लाह करता रहता है बल्कि क़ब्र पर आने वाले लोगों को फ़ैज़ भी पहुंचाता है।

क़ारईने किराम! ये तमाम अक़ीदे न सिर्फ़ यह कि किताब व सुन्नत से साबित नहीं बल्कि अल्लाह तआला का इंसानी जिस्म में हुलूल करना और ज़ाकिर क़ल्बी का क़ब्र में बैठकर लोगों को फ़ैज़ पहुंचाने का अक़ीदा सरासर शिर्के अकबर में शामिल है।

ग़ैर मसनून और ख़ुदसाख़्ता अदइया व अज़्कार का दूसरा इल्मनाक पहलू यह है कि उन पर अमल करने से मसनून अदइया व अज़्कार की एहमियत बिल्कुल ख़त्म होकर रह जाती है। रसूलुल्लाह सल्ल० ने ला इला-ह इल्लाहु को अफ़ज़ल ज़िक्र क़रार दिया है, सुब्हानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर कहने की बड़ी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है। अल्लाह तआला के 99 नामों को जन्नत में दाख़िल होने की ज़मानत क़रार दिया है, ला हव-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह को जन्नत का ख़ज़ाना कहा गया है, इस्मे आज़म को क़ुबूलियत दुआ का शर्फ़ हासिल है, दुरूद शरीफ़ का ज़िक्र क़यामत के दिन रसूले रहमत सल्ल० की सिफ़ारिश का सबब होगा, क़ुरआन मजीद को ख़ुद अल्लाह करीम ने "ज़िक्र" बतलाया है जिसकी तिलावत के एक एक हुरुफ़ पर दस नेकियां मिलती हैं। इसके अलावा सुबह शाम के अज़्कार, सोने जागने के अज़्कार, खाने पीने के अज़्कार, तौबा इस्तिग़फ़ार और इस्तग़ाज़ा के अज़्कार, दुनिया व आख़िरत की भलाई तलब करने के अज़्कार, ग़र्ज़ बेशुमार ऐसे अदइया व अज़्कार हैं जो सही अहादीस से साबित हैं जिन पर रसूले अकरम सल्ल० ने ख़ुद भी अमल किया और उम्मत को भी उस पर अमल करने की तर्ग़ीब दिलाई। सोचने की बात यह है कि रसूले अकरम सल्ल० के बतलाए अदइया व अज़्कार को तर्क करके ग़ैर मसनून और ख़ुदसाख़्ता अदइया व अज़्कार पर अमल करना उनकी दावत देना और उनकी इशाअत करना इत्तबाअ रसूल सल्ल० है या मुख़ालिफ़त रसूल सल्ल० इताअत रसूल है या बग़ावत रसूल सल्ल०?

Www.IslamicBooks.Website

अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह है कि ज़िंदगी के हर मामले में रसूले अकरम सल्ल० की मन व अन पैरवी और इत्तबाअ करने की मक़दूर भर कोशिश की जाए और जो काम सुन्नत रसूल सल्ल० से साबित न हो वह करके अल्लाह के ग़ज़ब को दावत न दी जाए कि अहले ईमान को ऐसा करने से मना फ़रमाया गया है : "ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरते रहो।" (सूरह हुजुरात : 1)

हुज़राए चेहरा दस्तां

कुछ सही अहादीस में मुख़्तलिफ़ अदइया व अज़्कार का बहुत ज़्यादा अज्र व सवाब और दीनी व दुनियावी फ़ायदें बताए गए हैं, जैसे जो शख़्स दिन में सौ मर्तबा 'सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिही' पढ़े तो उसके गुनाह चाहे समुद्र की झाग के बराबर हों माफ़ कर दिए जाते हैं। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक दूसरी हदीस में है जो शख़्स सुबह व शाम सात बार 'हस्बियल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवा अलैहि० तवक्कल-तु व हुवा रब्बुल अर्शिल करीम' पढ़े अल्लाह उसके दीन व दुनिया के सारे फ़िक्र दूर कर देता है। (अबू दाऊद) इसी तरह आप का इर्शाद मुबारक है सूरह हश्र की आख़िरी तीन आयतें 'हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला-हू' सुबह के वक़्त पढ़ने वाले के लिए अल्लाह तआला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर कर देता है जो शाम तक उसके लिए दुआ करते हैं अगर उसी दिन मर जाए तो शहादत का मर्तबा पाता है। इसी तरह शाम के वक़्त ये आयतें पढ़ने वाले के लिए भी ऐसा ही अज्र व सवाब है। (तिर्मिज़ी, दारमी) इसी तरह बहुत से दूसरे अदइया व अज़्कार हैं जिनके दुनियावी फ़ायदे और उख़रवी अज्र व सवाब बहुत ज़्यादा बयान किए गए हैं हमारा ईमान है कि जो शख़्स इस्लाम के बुनियाद फ़राइज़ पूरे करने के बाद इन मसनून अदइया व अज़्कार का एहतिमाम करेगा उसे यक़ीनन अज्र व सवाब और फ़ायदे हासिल होंगे जो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बताए हैं।

कुछ हज़रात अपने ख़ुदसाख़्ता नज़रियात के पेश नज़र ऐसी अहादीस को या तो बिला तामिल ज़ईफ़ कह देते हैं या उनका तज़्किरा इस्तख़फ़ाफ़, इस्तहक़ार और इस्तहज़ा के अंदाज़े में करते हैं। इसी तरह कुछ माद्दापरस्त वसाइल और असबाब की दुनिया में ज़िंदगी बसर करने वाले लोग "दुआ" का तज़्किरा तौहीन

Www.IslamicBooks.Website

आमेज़ अंदाज़ में करते हैं। अल्लाह और रसूल सल्ल० के इर्शादात के साथ इस्तख़फ़ाफ़, इस्तहक़ार या इस्तहज़ा का तर्ज़े अमल क़यामत के दिन बड़े ख़सारे का सबब बनेगा। उस दिन जन्नती लोग जहन्नमियों से सवाल करेंगे तुम्हें कौन-सी चीज़ जहन्नम में ले गई? दूसरे असबाब के अलावा जहन्नमी एक सबब यह बयान करेंगे : "(अल्लाह और रसूल के अहकाम का) मज़ाक़ उड़ाने वालों के साथ मिलकर हम भी मज़ाक़ उड़ाया करते थे।" (सूरह मुद्दस्सिर : 45) अल्लाह के रसूल अपनी अपनी क़ौम के पास दावते हक़ लेकर आए। इंकार की सूरत में उन्हें आने वाले अज़ाब से डराया तो बेशतर क़ौमों ने अपने रसूलों की इस तंबीह का मज़ाक़ उड़ाया। चुनांचे अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों के अंजाम का तज़्किरा करते हुए जगह जगह यह बात इर्शाद फ़रमाई : "रसूलों का मज़ाक़ उड़ाने वाले ख़ुद उस चीज़ के फेर में आ गए जिसका वह मज़ाक़ उड़ायां करते थे।" (सूरह अंबिया : 41) पस हदीसे रसूल सल्ल० के बारे में इस्तख़फ़ाफ़ या इस्तहज़ा का तर्ज़े अमल इख़्तियार करने वालों को डरना चाहिए कहीं यह चीज़ उनके दीन व ईमान की बर्बादी का सबब न बन जाए।

हुज़राए चेहरा दस्तां सख़्त हैं फ़ितरत की ताज़ीरें

क़ारईने किराम! सिलसिला इशाअत मत्बूआत हदीस के जामे मंसूबा से हमारे पेश नज़र जहां अवामुन्नास की तालीम व तर्बियत करना मक़सूद है वहां हदीस रसूल सल्ल० की ज़रूरत और एहमियत को उजागर करना भी मत्लूब है। दीने इस्लाम की बुनियाद दो ही चीज़ों पर है किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल सल्ल०। हमारी सारी जद्दोजहद इस मक़सद के लिए है कि लोग दीनी मसाइल और अहकाम जानने के लिए किताब व सुन्नत की तरफ़ रुजूअ करें और किताब व सुन्नत से हटकर दूसरे अक़ीदे और आमाल को बिला तामिल तर्क करें। इस मक़सद को सामने रखते हुए जहां हमने मसनून अदइया व अज़्कार का मज्मूआ मुरत्तब किया है वहां किताब के आख़िर में ग़ैर मसनून अदइया व अज़्कार का एक बाब भी शामिल किया है ताकि लोग ग़ैर मसनून अदइया व अज़्कार से आगाह रहें और उनसे मुकम्मल इज्तिनाब बरतें।

यह बात क़ाबिले वज़ाहत है कि अहादीस के मतन में दुआ के अल्फ़ाज़ दो ब्रेकिट (( )) के अंदर कर दिए गए हैं जबकि उर्दू तर्जुमे में भी यही तरीक़ा इख़्तियार किया गया है ताकि हर आदमी दुआइया अल्फ़ाज़ की पहचान आसानी

Www.IslamicBooks.Website

से कर सके।

हस्बे साबिक़ हमने किताब में सही और हिस्न दर्जे की अहादीस का मेयार क़ायम रखने की पूरी कोशिश की है हम पूरे अजुज़ व इंकिसार के साथ अल्लाह के हुज़ूर अपनी कम माइगी और तही दामनी का एतराफ़ करते हैं। किताब में हिस्न व ख़ूबी के तमाम पहलू महज़ अल्लाह के फ़ज़्ल व करम का नतीजा हैं जबकि ख़ामियां और ग़लतियां हमारी कोताही और ग़फ़लत के सबब हैं। अल्लाह करीम से दुआ फ़रमाइए कि वह हमारी ख़ामियों और ग़लतियों को अपने दामन अफ़ू में जगह इनायत फ़रमाए और किताब में ख़ैर व ख़ूबी के तमाम पहलुओं को अपने फ़ज़्ल व करम से शर्फ़ क़ुबूलियत अता फ़रमाए। आमीन!

इदारा हदीस पब्लीकेशन इन वाजिबुल एहतराम उलमा-ए-किराम का तहे दिल से शुक्रगुज़ार है जिन्होंने अपनी शबाना रोज़ मसरूफ़ियात से वक़्त निंकाल कर किताब की नज़रसानी फ़रमाई।

अहसाब हदीस पब्लीकेशन के अलावा मुझे अपने उन मोहसिनों का शुक्रिया अदा करना ज़रूरी है जिनसे ज़ाती तआरुफ़ है न जान पहचान, लेकिन इशाअत हदीस की जद्दोजहद में वह हमारे शरीके सफ़र हैं। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह अपने ख़ास फ़ज़्ल व करम से तमाम हज़रात की सई जमीला की दुनिया व आख़िरत में इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाए। आमीन!

"ऐ हमारे परवरदिगार! तू हमारी ख़िदमत क़ुबूल फ़रमा, बेशक तू ख़ूब सुनने वाला और जानने वाला है।" (सूरह बक़रा : 127)

—मुहम्मद इक़बाल कीलानी

Www.IslamicBooks.Website

दुआ की फ़ज़ीलत

मसला 1. दुआ इबादत है।

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "दुआ ही इबादत है। फिर आप सल्ल० ने यह आयत पढ़ी : "तुम्हारा रब कहता है मुझसे दुआ मांगो मैं तुम्हारी दुआ क़ुबूल करूंगा।" इसे अहमद, तिर्मिज़ी, नसाई और इब्ने माजा न रिवायत किया है।1

मसला 2. दुआ अल्लाह के नज़दीक बड़ी अज़्मत वाला अमल है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अल्लाह के नज़दीक दुआ से ज़्यादा अज़्मत वाला कोई अमल नहीं।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।2

मसला 3. दुआ से तक़दीर बदल जाती है।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० न फ़रमाया : "तक़दीर को दुआ के अलावा कोई चीज़ नहीं बदल सकती और उम्र में नकी के अलावा कोई चीज़ इज़ाफ़ा नहीं कर सकती।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।3

मसला 4. दुआ नाज़िलशुदा और नाज़िल होने वाली तमाम आफ़ात के लिए फ़ायदेमंद है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "दुआ नाज़िलशुदा (आफ़ात) और जो अभी नाज़िल नहीं हुई सबके लिए नफ़ाबख़्श है, लिहाज़ा ऐ अल्लाह के बन्दो दुआ ज़रूर किया करो।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।4

मसला 5. अल्लाह तआला जिसे अपनी रहमत से नवाज़ना चाहते हैं उसे

---

1. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, हदीस 3086।
2. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2684।
3. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-2, हदीस 1739।
4. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2813।
5. मिश्कातुल मसाबीह लिलबानी, भाग-2, हदीस 2239।
6. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-1, हदीस 3117।

Www.IslamicBooks.Website

दुआ की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमा देते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जिस शख़्स के लिए दुआ का दरवाज़ा खोला गया (यानी दुआ की तौफ़ीक़ दी गई) उसके लिए गोया रहमत के दरवाज़े खोल दिए गए और जो चीज़ अल्लाह से मांगी जाती है उनमें सबसे ज़्यादा अल्लाह के नज़दीक पसंदीदा आफ़ियत है।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।5

मसला 6. दुआ करने वाले को अल्लाह कभी महरूम नहीं रखते।

मसला 7. दुआ के लिए हाथ उठाने मसनून हैं।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "तुम्हारा रब बड़ा बया करने वाला और सख़ी है जब बन्दा उसके हुज़ूर हाथ उठाता है तो उन्हें ख़ाली लौटाते हुए उसे शर्म आती है।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।6

दुआ की एहमियत

मसला 8. दुआ न मांगने से अल्लाह नाराज़ होता है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जो शख़्स अल्लाह से नहीं मांगता अल्लाह उससे नाराज़ होता है।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

दुआ के आदाब

मसला 9. दुआ मांगने से पहले अल्लाह की हम्द व सना और फिर नबी अकरम सल्ल० पर दुरूद भेजना चाहिए।

हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैदा रज़ि० कहते हैं कि (एक दिन) रसूलुल्लाह सल्ल० हमारे दर्मियान तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक आदमी (मस्जिद में) दाख़िल हुआ नमाज़ पढ़ी और दुआ मांगने लगा : "या अल्लाह मुझे माफ़ फ़रमा, मुझ पर रहम कर।" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "ऐ नमाज़ी! तूने (दुआ मांगने में) जल्दी की। जब नमाज़ पढ़ चुको तो दुआ के लिए बैठो, तो अल्लाह की शायाने शान

---

1. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2686।

Www.IslamicBooks.Website

हम्द व सना करो फिर मुझ पर दुरूद भेजो फिर अपने लिए दुआ करो।" फ़ुज़ाला बिन उबैदा रज़ि० कहते हैं एक दूसरे आदमी ने नमाज़ पढ़ी और (उसके बाद) अल्लाह की हम्द व सना की, नबी अकरम सल्ल० पर दुरूद भेजा तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ नमाज़ी! दुआ कर तेरी दुआ क़ुबूल की जाएगी।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 10. दुआ दिल जमी औरयदो टूक अल्फ़ाज़ में करनी चाहिए।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुममें से कोई दुआ करे तो अल्लाह से पुख़्ता इरादे के साथ सवाल करे और यूं न कहे : "ऐ अल्लाह अगर तू चाहे तो अता फ़रमा।" इसलिए कि अल्लाह तआला पर कोई ज़बरदस्ती नहीं कर सकता। (जो उसे दुआ करने से रोक ले।) इसे बुख़ारी ने रिवायंत किया है।

मसला 11. दुआ मांगते हुए क़ुबूलियत का मुकम्मल यक़ीन रखना चाहिए।

मसला 12. दुआ पूरी तवज्जोह और यकसूई से करनी चाहिए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला से क़ुबूलियत के मुकम्मल यक़ीन के साथ दुआ करो और याद रखो! अल्लाह तआला ग़ाफ़िल और बेध्यान दिल की दुआ क़ुबूल नहीं करता।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 13. दुआ मांगने से पहले अपने गुनाहों का एतराफ़ और इज़्हारे नदामत करना चाहिए।

हज़रत अली बिन अब तालिब रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब बन्दा कहता है : "तेरे सिवा कोई इलाह नहीं, मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया है मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा, तेरे सिवा कोई गुनाह माफ़ करने वाला नहीं।" तो अल्लाह को यह बात बहुत अच्छी लगती है और अल्लाह फ़रमाता है : "मेरा बन्दा जानता है कि उसका रब है जो माफ़ भी करता है सज़ा भी देता है।" इसे हाकिम ने रिवायत किया है।

मसला 14. ख़ास ख़ास मौक़ों पर दुआ के अल्फ़ाज़ तीन तीन बार दोहराना मसनून है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स अल्लाह से तीन मर्तबा जन्नत मांगे (उसके हक़ में) जन्नत कहती है : य़ा अल्लाह! इसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा" और जो शख़्स तीन मर्तबा

Www.IslamicBooks.Website

आग से पनाह मांगे (उसके हक़ में) आग कहती हैं : "या अल्लाह इसे आग से बचा ले।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 15. किसी दूसरे के लिए दुआ मांगने वाले को पहले अपने लिए फिर दूसरे के लिए दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत उबी बिन कअब रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब किसी का ज़िक्र करते और उसके लिए दुआ करते तो पहले अपने लिए दुआ फ़रमाते। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 16. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जामेअ दुआएं पसंद फ़रमाते और दूसरी दुआओं को छोड़ देते थे। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 17. दुआ के लिए हांथ उठाने मसनून हैं।

व्याख्या : हदीस मसला 7 के तहत देखें।

मसला 18. हाथ उठाए बग़ैर भी दुआ करना जाइज़ है।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़ में (तशह्हुद और दुरूद के बाद) यह दआ मांगते : "इलाही! मैं तेरी जिनाब से अज़ाबे क़ब्र, मसीहुद्दज्जाल के फ़ित्ने, मौत व हयात की आज़माइश, गुनाहों और फ़र्ज़ से पनाह मांगता हूं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 19. इमाम को दुआ कराते वक़्त अपने अलावा बाक़ी लोगों को भी दुआ में शरीक करना चाहिए।

हज़रत उसमान रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया : "किसी शख़्स के लिए जाइज़ नहीं कि वह किसी दूसरे के घर में इजाज़त के लिए बग़ैर झांके इसलिए कि जब किसी ने झांका गोया वह उस (घर) में दाख़िल हुआ। कोई शख़्स जो लोगों की इमामत कराए दुआ के वक़्त दूसरों के बग़ैर सिर्फ़ अपने लिए दुआ न करे, अगर ऐसा करेगा तो लोगों की ख़ियानत करेगा, कोई शख़्स पेशाब वग़ैरह रोक कर नमाज़ न पढ़े।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 20. दुआ सुनने वाले को दुआइया कलिमात के आख़िर में **"आमीन"** कहना चाहिए।

हज़रत अबू दरदा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "किसी मुसलमान की अपने भाई के लिए ग़ायबाना दुआ क़ुबूल होती है।

Www.IslamicBooks.Website

ग़ायबाना दुआ करने वाले के पास एक फ़रिश्ता मुक़र्रर होता है जब वह अपने भाई के लिए कोई भलाई वाली ग़ायबाना दुआ करता है तो फ़रिश्ता ''आमीन'' (अल्लाह तेरी दुआ क़ुबूल करे) कहता है और साथ यह भी कहता है कि : ''तुझे भी अल्लाह वैसी ही भलाई अता करे।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 21. मामूली से मामूली चीज़ भी सिर्फ़ अल्लाह तआला से मांगनी चाहिए।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : ''तुममें से हर एक को अपनी हर ज़रूरत अल्लाह से मांगनी चाहिए यहां तक कि जूती का तसमा टूट जाए तो वह भी उसी से मांगें।'' इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 22. दुआ करते वक़्त अपना रुख़ क़िबले की तरफ़ रखना चाहिए।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० कहते हैं कि जंगे बद्र के दिन रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुश्रिकीने मक्का पर एक नज़र डाली उनकी तादाद एक हज़ार थी जबकि आप सल्ल० के सहाबा रज़ि० की तादाद 313 थी। रसूलुल्लाह सल्ल० ने क़िबले की तरफ़ रुख़ किया और अपने हाथ (अल्लाह के हुज़ूर) फैला दिए और पुकार कर दुआ करने लगे। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

वे कलिमात जिनके ज़रिए दुआ

---

1. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2765।
2. किताबुद दुआ।
3. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2766।
4. सिलसिला अहादीस सही, लिलबानी, भाग-4, हदीस 1653।
5. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, हदीस 3502।
6. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2696।
7. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2246।
8. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 306।
9. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-1, हदीस 293।
10. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1882।
11. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2251।
12. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1198।

Www.IslamicBooks.Website

क़ुबूल की जाती है

मसला 23. इस्मे आज़म के वसीले से की गई दुआ क़ुबूल होती है।

हज़रत बुरेदा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक आदमी को कहते हुए सुना : "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसलिए मांगता हूं कि तू अल्लाह है, तेरे सिवा कोई इलाह नहीं, तू अकेला है, बेनियाज़ है, न उसने किसी को जना न वह किसी से जना गया और उसकी बराबरी करने वाला कोई नहीं।" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "इस शख़्स ने अल्लाह तआला के इस्मे आज़म के वसीले से दुआ मांगी है और इस्मे आज़म के वसीले से जब अल्लाह से मांगा जाता है तो वह अता फ़रमाता है और जब उससे दुआ की जाती है तो वह क़ुबूल फ़रमाता है।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने एक आदमी को यूं दुआ मांगते हुए सुना : "या अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूं क्योंकि कर तरह की हम्द तेरे ही लिए सज़वार है तेरे सिवा कोई इलाह नहीं, तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं, तू एहसान फ़रमाने वाला है, ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला है ऐ बुज़ुर्गी और बख़्शिश के मालिक!" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "इस शख़्स ने इस्मे आज़म के वास्ते से दुआ मांगी है और इस्मे आज़म वह है जिसके वसीले से दुआ मांगी जाए तो क़ुबूल की जाती है जब उसके वास्ते से सवाल किया जाता है तो पूरा किया जाता है।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 24. क़ुबूलियत दुआ के दूसरे कलिमात निम्न हैं।

हज़रत सअद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "मछली वाले (यानी हज़तर यूनुस अलैहि०) की दुआ जो उसने मछली के पेट में मांगी थी "तेरा सिवा कोई इलाह नहीं तू (हर ख़ता से) पाक है मैं ज़ालिमों में से हूं" के वास्ते से जब भी कोई मुसलमान दुआ करता है अल्लाह क़ुबूल फ़रमाता है।" इसे अहमद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "जो शख़्स रात में जागे और कहे : "अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं वह एक है उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही उसी के लिए है हम्द के

Www.IslamicBooks.Website

लायक़ वही है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, अल्लाह पाक है हम्द अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है नेकी करने और गुनाह से बचने की ताक़त अल्लाह की तौफ़ीक़ से ही मिलती है।" इन कलिमात के बाद फिर यह कहे : "ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे।" या आप सल्ल० ने फ़रमाया : "दुआ करे तो उसकी दुआ क़ुबूल की जाती है और अगर वुज़ू करके नमाज़ पढ़े तो नमाज़ क़ुबूल की जाएगी।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने (दुआ करते हुए) फ़रमाया : "या ज़लजलाली वल इकराम के अल्फ़ाज़ को लाज़िम पकड़ो।" इसे तिमिज़ी ने रिवायत किया है।

क़ुबूलियत दुआ के औक़ात

मसला 25. रात के आख़िरी हिस्से में दुआ क़ुबूल की जाती है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "हमारा रब (हर रात) जब आख़िर तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है तो आसमाने दुनिया पर उतरता है और फ़रमाता है : "कौन मुझसे दुआ करता है मैं उसकी दुआ क़ुबूल करूं। कौन मुझसे कुछ मांगता है मैं उसका हूं। कौन मुझसे गुनाहों की माफ़ी चाहता है कि मैं उसके गुनाह माफ़ कर दूं।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू उमामा रज़ि० कहते हैं कि मुझसे अमरो बिन अबसा रज़ि० ने बयान किया कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना कि रात के आख़िरी हिस्से में रब अपने बन्दे के बहुत क़रीब होता है लिहाज़ा अगर उस वक़्त अल्लाह को याद करने वालों में शामिल होने की हिम्मत कर सको तो करो। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 26. अज़ान और इक़ामत के दर्मियान दुआ क़ुबूल होती है।

---

1 सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-1, हदीस 3111।
2. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, हदीस 3112।
3. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2785।
4. मुख़्तसर सही बुख़ारी लिल ज़ुबैदी, हदीस 611।
5. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2797।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अज़ान और इक़ामत के दर्मियान दुआ रद्द नहीं की जाती।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 27. सज्दे में दुआ क़ुबूल की जाती है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "सज्दे की हालत में बन्दा अपने रब के बहुत क़रीब होता है लिहाज़ा सज्दे में कसरत से दुआ किया करो।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 28. जुमा के दिन (किसी एक घड़ी में) दुआ क़ुबूल की जाती है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने जुमा के दिन का ज़िक्र किया और फ़रमाया : "उसमें एक घड़ी ऐसी है जिसमें कोई मुसलमान खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो और अल्लाह से कुछ मांगे तो अल्लाह उसको इनायत फ़रमा देता है और हाथ के इशारे से आपने वाज़ेह फ़रमाया कि वह साअत मुख़्तसर सी है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 29. अज़ान के बाद दुआ क़ुबूल की जाती है।

मसला 30. मैदाने जंग में मुसलमानों और काफ़िरों के लश्कर जब बाहम गुत्थम-गुत्था होते हैं, उस वक़्त दुआ क़ुबूल की जाती है।

हज़रत सहल बिन सअद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "दो दुआएं रद्द नहीं की जातीं एक अज़ाद के बाद, दूसरी लड़ाई के वक़्त जब (दोनों लश्कर) एक दूसरे से टकराते हैं।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 31. बारिश नाज़िल होने के वक़्त दुआ क़ुबूल की जाती है।

हज़रत सहल बिन सअद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "दो वक़्त की दुआएं रद्द नहीं की जातीं या बहुत ही कम रद्द की जाती हैं (पहली) अज़ान के बाद और (दूसरी) बारिश नाज़िल होने के वक़्त।" इसे हाकिम ने रिवायत किया है।

मसला 32. योमे अरफ़ा (9 ज़िल-हज) की दुआ क़ुबूल की जाती है।

हज़रत अमरो बिन शुऐब अपने बाप से और वह (शुऐब के) दादा से रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "बेहतरीन दुआ अरफ़ा के दिन की दुआ है और बेहतरीन दुआ जो मैंने और मुझसे पहले नबियों ने मांगी वह यह है : "अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, वह एक है, उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही उदसी की है, हम्द उसी के लिए सज़ावार है और वह हर चीज़ पर

Www.IslamicBooks.Website

क़ादिर है।'' इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 33. तौबा करने वाले की दुआ रात या दिन की हर घड़ी में क़ुबूल की जाती है।

हज़रत अबू मूसा रज़ि० नबी अकरम सल्ल० से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया : ''अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल रात के वक़्त अपना हाथ फैलाता है ताकि दिन में गुनाह करने वाला तौबा करे (तो उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमाए) फिर दिन के वक़्त अपना हाथ फैलाता है ताकि रात में गुनाह करने वाला तौबा करे (तो उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमाए) यहां तक कि सूरज मग़्रिब से तुलूअ हो जाए (यानी क़यामत क़ायम हो जाए)।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 34. ज़मज़म पीने से पहले की गई क़ुबूल क़ुबूल होती है।

हज़रंत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि मैने रसूलुंल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि ज़मज़म का पानी जिस नीयत से पिया जाए वह पूरी होती है। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

वे लोग जिनकी दुआ क़ुबूल की जाती है

मसला 35. मज़्लूम की दुआ क़ुबूल की जाती है।

मसला 36. मुसाफ़िर की दुआ क़ुबूल की जाती है।

मसला 37. बाप की दुआ बेटे के हक़ में क़ुबूल की जाती है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : ''तीन (आदमियों) की दुआ क़ुबूल की जाती है जिसमें कोई शक नहीं। मज़्लूम

---

1. मुख़्तसर सही बुख़ारी लिल ज़ुबैदी, हदीस 606।
2. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2833।
3. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2843।
4. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 298।
5. मुख़्तसर सही बुख़ारी लिल ज़ुबैदी, हदीस 521।
6. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2215।
7. सिलसिला अहादीस सही, लिलबानी, भाग-3, हदीस 1469।
8. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2837।
9. मूख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1921।
10. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2484।

Www.IslamicBooks.Website

की दुआ, मुसाफ़िर की दुआ, वालिद की दुआ अपने बेटे के हक़ में।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 38. ग़ाज़ी की दुआ क़ुबूल की जाती है।

मसला 39. हज और उमरा करने वाले की दुआ क़ुबूल की जाती है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह करने वाले, हज और उमरा करने वाले अल्लाह के मेहमान हैं। अल्लाह ने उन्हें बुलाया तो वे आ गए, लिहाज़ा अब वह अल्लाह से सवाल करेंगे तो अल्लाह उन्हें अता फ़रमाएगा।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत यिका है।

मसला 40. नेक औलाद की दुआ वालिदैन के हक़ में क़ुबूल होती है।

हज़रत अबू हुरैरहं रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अल्लाह तआला नेक आदमी का जन्नत में दर्जा बुलन्द फ़रमाता है तो आदमी अर्ज़ करता है, ऐ मेरे रब! मेरा दर्जा कैसे बुलन्द हुआ?" अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है : "तेरे लिए तेरे बेटे के इस्तिग़फ़ार करने से।" इसे अहमद ने रिवायत किया है।

मसला 41. ख़ुशहाली और फ़राग़त में दुआ करने वाले की तंगी और मुसीबत के वक़्त दुआ क़ुबूल की जाती है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जो शख़्स यह पसंद करता है कि मुसीबतों और तकलीफ़ों में अल्लाह उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाए उसे चाहिए कि ख़ुशहाली के वक़्त कसरत से दुआ किया करे।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 42. रोज़ेदार की दुआ क़ुबूल की जाती है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "तीन आदमियों की दुआ रद्द नहीं की जाती। बात की, रोज़ेदार और मुसाफ़िर की।" इसे बैहक़ी ने रिवायत किया है।

मसला 43. बीमार की दुआ क़ुबूल की जाती है।

मसला 44. मुसलमान भाई की ग़ैर मौजूदगी में मांगी गई दुआ बहुत जल्द क़ुबूल की जाती है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "पांच दुआएं क़ुबूल की जाती हैं, मज़्लूम की दुआ यहां तक

Www.IslamicBooks.Website

कि बदला ले ले। हाजी की दुआ यहां तक कि (घर) वापस लौटे, मुजाहिद की दुआ यहां तक कि वह जिहाद से फ़ारिग़ हो जाए, मरीज़ की दुआ यहां तक कि ठीक हो जाए और भाई की भाई के लिए ग़ायबाना दुआ।" फिर आप सल्ल० ने फ़रमाया : "इन तमाम दुआओं में से जल्दी क़ुबूल होने वाली दुआ भाई की भाई के लिए ग़ायबाना दुआ है।" इसे बैहक़ी ने रिवायत किया है।

वे लोग जिनकी दुआ क़ुबूल नहीं की जाती

मसला 45. हराम रिज़्क़ खाने वाले की दुआ क़ुबूल नहीं होती।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला पाक है और पाक चीज़ के सिवा कोई चीज़ क़ुबूल नहीं करता और बेशक अल्लाह तआला ने मोमिनों को ऐसी चीज़ का हुक्म दिया है जिसका हुक्म रसूलों को दिया है, चुनांचे इर्शाद फ़रमाया : "ऐ रसूलो! पाक चीज़ें खाओ और नेक अमल करो।" और अल्लाह इर्शाद फ़रमाता है : "ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! खाओ उस पाक रिज़्क़ से जो हमने तुमको दिया है।" फिर आप सल्ल० ने एक शख़्स का ज़िक्र यिका जो लम्बा सफ़र करके ग़ुबार आलूद, परागंदा बालों के साथ (हज या जिहाद) के लिए आता है दोनों हाथ आसमान की तरफ़ फैलाकर दुआ करता है : "ऐ मेरे रब! ऐ मेरे रब! और हाल यह है कि उसका खाना, पीना और पहनना सब हराम माल से है। हराम माल से ही परवरिश किया गया है। ऐसे शख़्स की दुआ कैसे क़ुबूल की जाएगी।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 46. गुनाह और क़तारहमी की दुआ करने वाले की दुआ क़ुबूल नहीं होती।

व्याख्या : हदीस मसला 66 के तहत देखें।

मसला 47. ग़फ़लत और लापरवाही से दुआ करने वाले की दुआ क़ुबूल

---

1. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, हदीस 3115।
2. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2349।
3. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2354।
4. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2692।
5. सिलसिला अहादीस सही, लिलबानी, भाग-4, हदीस 1797।
6. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2260।

Www.IslamicBooks.Website

नहीं होती।

व्याख्या : हदीस मसला 12 के तहत देखें।

मसला 48. ज़ानी की दुआ क़ुबूल नहीं होती।

मसला 49. ज़बरदस्ती टैक्स वुसूल करने वाले की दुआ क़ुबूल नहीं होती।

हज़रत अबुल आस सक़फ़ी रज़ि० नबी अकरम सल्ल० से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया : "(रोज़ाना) आधी रात के वक़्त आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और एक पुकारने वाला (फ़रिश्ता) पुकारता है कोई दुआ करने वाला है जिसकी दुआ क़ुबूल की जाए, कोई सवाल करने वाला है जिसका सवाल पूरा किया जाए, कोई मुसीबतज़दा है (जो मुसीबत दूर करने की दुआ करे और) उसकी मुसीबत दूर कर दी जाए, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल हर दुआ करने वाले मुसलमान की दुआ (आधी रात) में क़ुबूल फ़रमाता है सिवाए ज़ानिया के जो अपनी शर्मगाह के ज़रिए (ग़ैर मर्द को) सैराब करती है और ज़बरदस्ती टैक्स वुसूल करने वाले के।" इसे तबरानी ने रिवायत किया है।

मसला 50. अम्र बिल मारूफ़ (नेकी का हुक्म देना) और नही अनिल मुंकर (बुरे कामों से रोकना) का फ़र्ज़ अदा न करने वालों की दुआ क़ुबूल नहीं की जाती।

हज़रत हुज़ेफ़ा बिन यमान रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है तुम अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुंकर करते रहो वरना अंक़रीब अल्लाह तुम पर अपनी तरफ़ से अज़ाब नाज़िल कर देगा फिर तुम उससे दुआ करोगे और वह तुम्हारी दुआ क़ुबूल नहीं करेगा।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

दुआ में जाइज़ उमूर

मसला 51. किसी शख़्स की दरख़्वास्त पर किसी आदमी का नाम लेकर दुआ करना जाइज़ है।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मेरे वालिद ने (बारगाहे रिसालत) में अर्ज़

1. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2760।
2. सिलसिला अहादीस सही, लिलबानी, भाग-3, हदीस 1073।
3. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-2, हदीस 1762।

Www.IslamicBooks.Website

किया : "या रसूलल्लाह सल्ल०! यह आपका ख़ादिम अनस है इसके लिए अल्लाह से दुआ कीजिए।" आप सल्ल० ने दुआ फ़रमाई : "या अल्लाह! अनस को कसरत से माल और औलाद दे और जो कुछ दे उसमें बरकत अता फ़रमा।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 52. दुआ में काफ़िरों के लिए हलाकत और बर्बादी मांगना जाइज़ है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने (मक्का के मुश्रिकों के ख़िलाफ़) बद्दुआ फ़रमाई : "या अल्लाह! इन पर हज़रत यूसुफ़ अलैहि० के ज़माने की तरह सात साल का क़हत भेजकर मेरी मदद फ़रमा और यह भी फ़रमाया या अल्लाह! अबू जहल को हलाक कर दे।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 53. दुआ में काफ़िरों के लिए हिदायत तलब करना जाइज़ है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि तुफ़ेल बिन अमरो रज़ि० (अपने क़बीले का सरदार) रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह! क़बीला दूस के लोगों ने अल्लाह की नाफ़रमानी की और मुसलमान होने से इंकार किया है पस उनके लिए बद्दुआ फ़रमाइए।" सहाबा रज़ि० समझे कि अब रसूलुल्लाह सल्ल० उनके लिए बद्दुआ फ़रमाएंगे, लेकिन आप सल्ल० ने उनके लिए दुआ फ़रमाई : "या अल्लाह! क़बीला दूस को हिदायत अता फ़रमा और उन्हें मेरे पास ले आ।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 54. दुआ में अल्लाह तआला के इस्मे आज़म, अल्लाह तआला के इस्मे हुस्ना और सिफ़ात को वसीला बनाना जाइज़ है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरेदा असलमी रज़ि० अपने बाप से रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने एक आदमी को यूं दुआ करते हुए सुना : "या अल्लाह! मैं तुझसे मांगता हूं क्योंकि मैं गवाही देता हूं तू अल्लाह है, तेरे सिवा कोई इलाह नहीं, तू एक है, तेरी ज़ात बेनियाज़ है, न तू किसी की औलाद है न तेरी कोई औलाद है न ही तेरा कोई शरीक है।" अब्दुल्लाह बिन असलमी रज़ि० के बाप कहते हैं (यह दुआ सुनकर) रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है उस आदमी ने इस्मे आज़म के वसीले से दुआ मांगी है और इस्मे आज़म के वसीले से जब भी दुआ मांगी जाए क़ुबूल

Www.IslamicBooks.Website

की जाती है और जब (अल्लाह से) कोई सवाल किया जाए तो पूरा किया जाता है।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० को जब कोई रंज या मुसीबत पेश आती तो यूं दुआ फ़रमाते : "ऐ ज़िंदा और क़ायम करने वाले (अल्लाह) मैं तेरी रहमत के वसीले से तेरे आगे फ़रियाद करता हूं।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 55. दुआ में अपने नेक आमाल को वसीला बनाना जाइज़ है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "तीन आदमी जा रहे थे कि उन्हें बारिश ने आ लिया। चुनांचे वह एक पहाड़ के ग़ार में छुप गए ग़ार के मुंह पर (पहाड़ के ऊपर से) एक बड़ा पत्थर आ गिरा और वह बन्द होकर रह गए चुनांचे आपस में कहने लगे कि कोई ऐसा नेक अमल सोचो जो तुमने महज़ रिज़ाए इलाही के लिए किया हो और उसके वसीले से अल्लाह तआला से दुआ करो। शायद यह मुश्किल आसान हो जाए। चुनांचे उनमें एक एक ने कहा : "ऐ अल्लाह! मेरे वालिदैन ज़िंदा थे और इंतिहाई बुढ़ापे की उम्र को पहुंचे हुए थे और मेरे छोटे-छोटे बच्चे भी थे मैं उनके लिए बकरियां चराया करता था जब मैं शाम को लौटा तो बकरियां दूहता और अपने बच्चों से पहले वालिदैन को दूध पिलाया करता था। एक दिन जंगल में दूर निकल गया और शाम को देर से वापस लौटा। वालिदैन उस वक़्त सो चुके थे। मैं हस्बे मामूल दूध लेकर उन दोनों के सरहाने आ खड़ा हुआ। मैंने उन्हें नींद से बेदार करना पसंद न किया और बच्चों को उनसे पहले पिला देना भी अच्छा न लगा। हालांकि बच्चे मेरे क़दमों के पास शोर कर रहे थे यहां तक कि सुबह हो गई। ऐ अल्लाह तू जानता है अगर मैंने यह काम महज़ तेरी रिज़ा के लिए किया था तो इस पत्थर को हटा दे ताकि हम (कम से कम) आसमान देख सकें।" चुनांचे अल्लाह तआला ने पत्थर का एक हिस्सा हटा दिया और उसमें से उन्हें आसमान नज़र आने लगा। दूसरे ने कहा : "ऐ अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी जिससे मैं इतनी ज़्यादा मुहब्बत करता था जितनी कोई भी दूसरा आदमी किसी औरत से कर सकता है। मैंने उससे अपनी दिली ख़्वाहिश का इज़्हार किया तो उसने उस वक़्त तक के लिए इंकार कर दिया जब तक उसे सौ दीनार न दे दूं, चुनांचे मैंनें दौड़-धूप शुरू कर दी और सौ दीनार जमा कर लिए। मैं उन्हें लेकर उसके पास गया जब मैं उससे सोहबत करने चला तो उसने कहा : "ऐ अल्लाह के बन्दे! अल्लाह से डर

Www.IslamicBooks.Website

और लगी हुई मुहर को न तोड़।'' पस मैं वापस चला आया। ऐ अल्लाह! अगर मैंने यह काम महज़ तेरी रिजा के लिए किया था तो हमारी इस मुश्किल को आसान फ़रमा दे।'' पस चट्टान थोड़ी सी और हट गई। फिर तीसरे ने कहा : ''ऐ अल्लाह! मैंने एक मज़दूर को अपने काम पर लगाया था और तै किया कि तुम्हें एक फ़िर्क़ (क़रीबन आठ किलोग्राम) चावल दूंगा। जब वह काम ख़त्म कर चुका तो उसने अपनी मज़दूरी का मुतालबा किया। मैंने मज़दूरी उसके सामने रख दी लेकिन वह मज़दूर (कम समझ कर) लिए बग़ैर चला गया। मैं उन चावलों के साथ बराबर काश्तकारी करता रहा यहां तक कि उससे एक गाय ख़रीद ली और एक चरवाहा रख लिया मुद्दतों बाद वह मेरे पास आया और कहने लगा : ''अल्लाह से डर और मुझ पर ज़ुल्म न करे और मेरा हक़ मुझे अदा कर।'' मैंने कहा : ''इंन गायों और चरवाहे की तरफ़ जाओ ये सब तुम्हारा मांल है।'' उसने कहा : ''अल्लाह से डर और मेरे साथ मज़ाक़ न कर।'' मैंने कहा : ''मैं तुम्हारे साथ मज़ाक़ नहीं करता बल्कि यह अपनी गाएं और चरवाहा ले जाओ।'' वह उन्हें लेकर चला गया। या अल्लाह तू जानता है अगर मैंने महज़ तेरी रिज़ा के लिए ऐसा किया तो जितना रास्ता बन्द रह गया है उसे भी खोल दे।'' चुनांचे अल्लाह तआला ने उनके सामने से बाक़ी पत्थर हटा दिया।'' इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 56. ज़िंदा नेक आदमी से दुआ करवाना जाइज़ है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि जब लोग क़हत का शिकार होते तो हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (नबी अक़रम सल्ल० के चचा) से बारिश की दुआ करवाते और साथ यह कहते : ''या अल्लाह! नबी अकरम सल्ल० की ज़िंदगी में हम अपने नबी सल्ल० (की दुआ) को तेरे हुज़ूर वसीला बनाते और तो हम पर बारिश बरसा देता अब (नबी अकरम

1. किताबुद दावत, बाब दावतुन नबी।
2. किताबुद दावत, बाब दुआ अलल मुश्रिकीन।
3. किताबुद दावत, बाब दुआ अलल मुश्रिकीन।
4. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2763।
5. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 3796।
6. किताबुल अदब, बाब इजाबत दुआ।
7. मुख़्तसर सही बुख़ारी, लिल ज़ुबैदी, हदीस 551।

Www.IslamicBooks.Website

सल्ल० की वफ़ात के बाद) हम अपने नबी अकरम सल्ल० के चचा (की दुआ) को वसीला बनाते हैं लिहाज़ा हम पर बारिश बरसा दे।" हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अब्बास रज़ि० से (दुआ करवाने के बाद) बारिश हो जाती। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

दुआ में मक्रूह व ममनूअ उमूर

मसला 57. दुआ में अश्आर पढ़ना, हमवज़न और पुर तकलीफ़ अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करना मक्रूह है।

हज़रत इक्रिमा रज़ि० हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत करते हैं कि इब्ने अब्बास रज़ि० ने यह फ़रमाया : हर जुमा में एक बार लोगों को वअज़ किया करो। उससे ज़्यादा चाहो तो दो बार और अगर इससे भी ज़्यादा चाहो तो तीन बार लेकिन (इससे ज़्यादा मर्तबा वअज़ करके) लोगों को क़ुरआन से उकताओ नहीं न ही ऐसा करो कि लोग अपनी बातों में लगे हों और तुम उन्हें जाकर वअज़ सुनाने लगो उनकी बातों का सिलसिला मुंक़ताअ करके उन्हें क़ुरआन से दूर न करो बल्कि ख़ामोश रहो। जब वह दरख़्वास्त करें तो उन्हें वअज़ सुनाओ जब तक वे ख़्वाहिश रखें और देखो! दुआ में हमवज़न और पुरतकलीफ़ अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करने से परहेज़ करो। मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को और आपके सहाबा रज़ि० को इससे हमेशा परहेज़ करते देखा है। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 58. दुआ में ग़ैर ज़रूरी बातें करना मक्रूह है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़ल रज़ि० ने अपने बेटे को यह दुआ मांगते हुए सुना है। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत में दाख़िल होते हुए जन्नत के दाएं तरफ़ सफ़ेद महल का सवाल करता हूं। तो कहा ऐ मेरे बेटे! अल्लाह से (सिर्फ़) जन्नत का सवाल कर! (जन्नत की बाक़ी तमाम नेमतें ख़ुद से उसमें आ जाएंगी इसी तरह) आग से अल्लाह की पनाह मांग (बाक़ी तमाम अज़ाबों से पनाह भी उसी में आ जाएगी) मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि कुछ लोग दुआ करने में ज़्यादती से काम लेंगे। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 59. अपने गुनाहों की सज़ा दुनिया में पाने की दुआ करना मक्रूह है।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक मुसलमान की इयादत की जो बीमारी की वजह से चूज़े की तरह हो गया था। आप सल्ल०

Www.IslamicBooks.Website

ने उससे पूछा : "क्या तुम (अल्लाह से) कोई ख़ास दुआ या सवाल किया करते थे?" उसने अर्ज़ किया : "हां! मैं कहा करता था या अल्लाह! जो सज़ा मुझे आख़िरत में देने वाला है वह दुनिया में ही दे दे (ताकि आख़िरत में महफ़ूज़ रहूं)।" रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "सुब्हानल्लाह! तुझमें इतनी ताक़त कहां या फ़रमाया तुझमें इतनी इस्तेताअत कहां, तूने यूं क्यों न कहा : या अल्लाह! दुनिया और आख़िरत (दोनों जगह) भलाई अता फ़रमा और आग के अज़ाब से बचा।" हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं फिर रसूलुल्लाह सल्ल० ने उसके लिए दुआ फ़रमाई और अल्लाह ने उसे अच्छा कर दिया। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 60. अपने लिए, अपनी औलाद के लिए, अपने ख़ादिमों और अपने मालों के लिए बद्दुआ करना मना है।

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अपनी जानों, अपनी औलादों, अपने ख़ादिमों और अपने मालों के लिए बद्दुआ न करो (ऐसा न हो) कि तुम्हारे ज़बान से ऐसे वक़्त में बद्दुआ निकले जिसमें दुआ क़ुबूल की जाती है और तुम्हारी दुआ क़ुबूल हो जाए।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 61. मौत की दुआ करना मना है।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "तुममें से कोई किसी मुसीबत के आने की वजह से मौत की ख़्वाहिश न करे, अगर मौत की आरज़ू किए बग़ैर चाराकार कोई न हो तो यूं कहना चाहिए : "या अल्लाह! जब तक ज़िंदगी मेरे हक़ में बेहतर है मुझे ज़िंदा रख और जब मौत मेरे हक़ में बेहतर हो तो मुझे दुनिया से उठा ले।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 62. क़तारहमी और गुनाह की दुआ करना मना है।

मसला 63. दुआ में उजलत तलबी मना है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "बन्दे की दुआ उस वक़्त तक क़ुबूल होती है जब तक गुनाह या क़तारहमी की दुआ नहीं मांगता या जल्दी नहीं करता।" सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह! जल्दी क्या है?" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "दुआ मांगने वाला कहे मैंने दुआ मांगी फिर मांगी लेकिन मुझे दुआ क़ुबूल होती नज़र नहीं आती और उस पर थक हार कर दुआ करना छोड़ दे।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 64. दुआ मांगते हुए अल्लाह के साथ किसी नबी, वली या बुज़ुर्ग

Www.IslamicBooks.Website

को शरीक करना मना है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जो शख़्स इस हालत में मरा कि दुआ में अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को शरीक करता था। आग में दाख़िल हुआ।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 65. मसनून (नबी अकरम सल्ल० से साबितशुदा) दुआ के अल्फ़ाज़ में रद्दोबदल करना मना है।

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने (मुझसे) फ़रमाया : "जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो नमाज़ की तरह का वुज़ू करो फिर दाईं करवट पर लेट जाओ और यह दुआ पढ़ो : "ऐ अल्लाह! हुसूले सवाब के शौक़ और अज़ाब के डर से मैंने अपना आप तेरे हवाले किया, अपने मामलात तेरे सुपुर्द कर दिए और तेरा सहारा ले लिया। तेरे अलावा (मेरी) कोई जाए पनाह और ठिकाना नहीं। या अल्लाह! मैं तेरी नाज़िल करदा किताब पर और तेरे भेजे हुए नबी पर ईमान लाया।" (आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया) अगर तुम इसी रात मर जाओ तो इस्लाम पर मरोगे पस (रोज़ाना सोते वक़्त) इस दुआ को अपनी आख़िरी कलाम बनाओ। हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं, मैंने यह दुआ (याद करने के लिए) नबी अकरम सल्ल० के सामने दोहराई जब मैं "या अल्लाह! तेरी नाज़िल करदा किताब पर ईमान लाया हूं" (के अल्फ़ाज़) पर पहुंचा तो (उसके बाद) मैंने यूं कहा : "और तेरे रसूल पर भी ईमान लाया हूं।" तो नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "नहीं यूं न कहो बल्कि यूं कहो : "और तेरे नबी पर जिसे तूने भेजा है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

---

1. किताबुद दावत।
2. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, हदीस 3116।
3. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1883।
4. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-1, हदीस 1356।
5. मुख़्तसर सही बुख़ारी, लिल ज़ुबैदी, हदीस 1958।
6. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1877।
7. किताबुल ईमान वन्नज़ूर,
8. किताबुल वुज़ू,

Www.IslamicBooks.Website

क़ुबूलियत दुआ की मुख़्तलिफ़ सूरतें

मसला 66. दुआ क़ुबूल होने की निम्नलिखित तीन सूरतें हैं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "जब कोई मुसलमान दुआ करता है जिसमें गुनाह या क़तारहमी की बात न हो तो अल्लाह तआला तीन बातों में से एक उसे ज़रूर अता फ़रमाता है। 1. या दुआ के मुताबिक़ उसकी ख़्वाहिश पूरी कर दी जाती है, 2. या उसकी दुआ को आख़िरत के लिए ज़ख़ीरा अज्र बना देता है, 3. या दुआ के बराबर उससे कोई मुसीबत टाल देता है।" सहाबा किराम रज़ि० ने (यह सुनकर) अर्ज़ किया : "तब तो हम कसरत से दुआ करेंगे।" रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अल्लाह के ख़ज़ाने बहुत ज़्यादा हैं।" इसे अहमद ने रिवायत किया है।

दुआ क़ुरआन मजीद की रोशनी में

मसला 67. दुआ इबादत है।

मसला 68. दुआ न मांगना तकब्बुर की अलामत है।

"तुम्हारा रब कहता है मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआएं क़ुबूल करूंगा जो लोग तकब्बुर में आकर मेरी इबादत (दुआ) से मुंह मोड़ते हैं वह ज़लील व ख़्वार होकर ज़रूर जहन्नम में दाख़िल होंगे।" (सूरह मोमिन : 60)

मसला 69. हर दुआ मांगने वाले की दुआ अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाता है।

मसला 70. अल्लाह तआला से मांगने के लिए किसी वसीले या वास्ते की ज़रूरत नहीं।

"और ऐ नबी! मेरे बन्दे जब तुम से मेरे मुताल्लिक़ पूछें (कि अल्लाह दूर है या नज़दीक? तो उन्हें बता दो) कि मैं उनसे क़रीब हूं। जब कोई दुआ करने वाला दुआ करता है तो मैं क़ुबूल करता हूं। लिहाज़ा उन्हें चाहिए कि वह भी मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं शायद कि वह राहेरास्त पा लें।" (सूरह बक़रा : 186)

1. मिश्कातुल मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2259।

Www.IslamicBooks.Website

मसला 71. सिर्फ़ अल्लाह तआला से ही दुआ मांगना जाइज़ है।

''सिर्फ़ उसी (अल्लाह) को पुकारना बरहक़ है अल्लाह के सिवा जिन हस्तियों से ये (मुश्रिक) दुआ मांगते हैं वे उनकी दुआओं का कोई जवाब नहीं दे सकते उनसे दुआ मांगना ऐसा ही है जैसा कोई शख़्स पानी की तरफ़ हाथ फैलाए ताकि पानी उसके मुंह तक पहुंच जाए हालांकि पानी उस तक पहुंचने वाला नहीं है काफ़िरों की दुआएं बेकार और अब्स शै के सिवा कुछ भी नहीं।'' (सूरह रअद : 14)

मसला 72. दुआ मांगते हुए आजिज़, इंकिसारी और ख़ुज़ूअ और ख़ुशूअ इख़्तियार करना चाहिए।

मसला 73. ऐसी दुआ मांगना, जो मुमकिन हो (मसलन हमेशा ज़िंदा रहनाया आख़िरत में अंबिया का मर्तबा पाना वग़ैरह) मना है।

मसला 74. मसनून दुआएं छोड़कर मसीही मक़फ़ी इबारतें या अश्आर वग़ैरह पढ़ना मना है।

''अपने रब से गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके दुआ मांगो वह हद से गुज़रने वालों को पसंद नहीं करता।'' (सूरह आराफ़ : 55)

मसला 75. ग़ैरुल्लाह से दुआ मांगना सबसे बड़ी गुमराही है।

''उस शख़्स से ज़्यादा गुमराह और कौन हागा जो अल्लाह को छोड़कर उनको पुकारे जो क़यामत तक जवाब नहीं दे सकते बल्कि उससे भी बेख़बर हैं कि मुश्रिक उन्हें पुकार रहे हैं।'' (सूरह अहक़ाफ़ : 5)

''लोगो! एक मिसाल दी जाती है ग़ौर से सुनो, अल्लाह को छोड़कर जिन माबूदों को तुम पुकारते हो वे सब मिलकर एक मक्खी पैदा करना चाहें तो नहीं कर सकते बल्कि अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले जाए तो वे उसे छुड़ा भी नहीं सकते। मदद चाहने वाले भी कमज़ोर और जिनसे मदद चाही जाती है वे भी कमज़ोर। उन लोगों ने अल्लाह की क़द्र न पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का हक़ है हक़ीक़त यह है कि क़ुव्वत और इज़्ज़त तो अल्लाह ही की है।'' (सूरह हज : 73-74)

''अल्लाह को छोड़कर जिन्हें तुम पुकारते हो वह एक परकाह (तिनका) के भी मालिक नहीं अगर उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी दुआएं सुन नहीं सकते और अगर सुन लें तो उनका कोई जवाब नहीं दे सकते और क़यामत के दिन वे तुम्हारे शिर्क का इंकार कर देंगे। हक़ीक़त हाल की ऐसी सही ख़बर तुम्हें एक ख़बरदार

Www.IslamicBooks.Website

के सिवा कोई नहीं दे सकता।" (सूरह फ़ातिर : 13-14)

"जो लोग अल्लाह को छोड़कर दूसरों को पुकारते हैं वे किसी भी चीज़ के ख़ालिक़ नहीं बल्कि ख़ुद मख़्लूक़ हैं मुर्दा न कि ज़िंदा और उन्हें इतना भी मालूम नहीं कि (दोबारा) कब उठाए जाएंगे।" (सूरह नहल, 20-21)

क़ुरआनी दुआएं

मसला 76. हिदायत तलब करने और बीमारी से शिफ़ा हासिल करने की दुआ।

"हर तरह की तारीफ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है जो रहमान और रहीम है, बदले के दिन का मालिक है, हम सिर्फ़ तेरी ही बन्दगी करते हैं और सिर्फ़ तुझसे ही मदद चाहते हैं, हमें सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों का सीधा रास्ता जिन पर तूने इनाम किया न उन लोगों का रास्ता जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और न उनका जो गुमराह हुए।" (सूरह फ़ातिहा)

मसला 77. ख़ातिमा बिलख़ैर की दुआ।

"ऐ ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले! दुनिया और आख़िरत में तू ही मेरा वली है मुझे इस हाल में दुनिया से उठा कि मैं मुसलमान हूं और मुझे नेक लोगों के साथ मिला दे।" (सूरह यूसुफ़ : 101)

मसला 78. नेक आमाल की तौफ़ीक़ और औलाद की इस्लाह के लिए दुआ।

"ऐ मेरे रब! मुझ तौफ़ीक़ अता फ़रमा मैं तेरी उन नेमतों का शक्रिया अदा कर सकूं जो तूने मेरे और मेरे वालिदेन पर की हैं और मुझे तौफ़ीक़ अता फ़रमा कि ऐसे नेक अमाला करूं जो तुझे पसंद हों और मेरी औलाद की इस्लाह फ़रमा दे मैं तेरे हुज़ूर तौबा करता हूं और मैं मुसलमानों में से हूं।" (सूरह अहक़ाफ़ : 15)

मसला 79. तलबे औलाद के लिए दुआएं।

"ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा तू यक़ीनन दुआ सुनने वाला है।" (सूरह आले इमरान : 38)

"ऐ मेरे रब! मुझ तंहा न छोड़ और तू सबसे बेहतरीन वारिस है।" (सूरह अंबिया : 89)

"ऐ मेरे रब! मुझ सालेह औलाद अता फ़रमा।" (सूरह साफ़्फ़ात : 100)

Www.IslamicBooks.Website

मसला 80. मां-बाप के लिए दुआ।

"ऐ मेरे रब! इन दोनों (मां-बाप) पर उसी तरह रहम फ़रमा जिस तरह उन्होंने मुझे बचपन में पाला पोसा।" (सूरह बनी इसराईल : 24)

81. तलबे रहमत की दुआ।

"ऐ हमारे रब! हमें अपने पास से रहमत अता फ़रमा और हमारे मामलात में इस्लाह की सूरत पैदा फ़रमा।" (सूरह कहफ़ : 10)

मसला 82. इल्म हासिल करने की दुआ।

"ऐ मेरे रब! मेरे इल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा।" (सूरह ता०हा० : 114)

मसला 83. बीमारी से शिफ़ा हासिल करने की दुआ।

"या अल्लाह! मुझे बीमारी लगी है और तू सब मेहरबानों से बढ़कर रहम करने वाला है।" (सूरह अंबिया : 83)

मसला 84. सवारी पर बैठने की दुआ।

"पाक है वह ज़ात जिसने हमारे लिए यह सवारी मुसख़्ख़र कर दी वरना हम इसे मुतीअ करने वाले नहीं थे और हमें पलटना अपने रब ही की तरफ़ है।" (सूरह ज़ुख़रुफ़ : 13-14)

मसला 85. सवारी से उतरते वक़्त यह दुआ मांगनी चाहिए।

"ऐ मेरे रब! मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू बेहतरीन जगह देने वाला है।" (सूरह मोमिनून : 29)

मसला 86. शैतानी वस्वसे से बचने की दुआ।

"ऐ मेरे रब! मैं शैतान की उकसाहटों से तेरी पनाह मांगता हूं और इस बात से भी पनाह मांगता हूं कि वह मेरे पास आएं।" (सूरह मोमिनून : 97-98)

मसला 87. तलबे रहमत की दुआ।

"ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे मुझ पर रहम फ़रमा तू सबसे बेहतर रहम फ़रमाने वाला है।" (सूरह मोमिनून : 118)

मसला 88. अज़ाबे जहन्नम से पनाह मांगने की दुआ।

"ऐ हमारे परवरदिगार! हमसे जहन्नम का अज़ाब दूर रखना क्योंकि उसका अज़ाब चिमट जाने वाला है बेशक जहन्नम बहुत ही बुरा ठिकाना और बहुत ही बुरी जगह है।" (सूरह फ़ुरक़ान : 65-66)

मसला 89. अपने बीवी बच्चों के हक़ में भलाई की दुआ।

"ऐ हमारे रब! हमें हमारी बीवियों और औलादों की तरफ़ से आंखों की

Www.IslamicBooks.Website

ठण्डक अता फ़रमा और हमें मत्तक़ी लोगों का इमाम बना दे।" (सूरह फ़ुरक़ान : 74)

मसला 90. नेक काम की क़ुबूलियत के लिए यह दुआ मांगनी चाहिए।

"ऐ हमारे रब! हमारी यह ख़िदमत क़ुबूल फ़रमा। बेशक तू (दुआ को) सुनने वाला और (नीयत को) जानने वाला है।" (सूरह बक़रा : 127)

91. तलबे रिज़्क़ की दुआ।

"ऐ मेरे रब! तू जो कुछ भी मुझ अता फ़रमाए मैं उसका हाजतमंद हूं।" (सूरह क़सस : 24)

मसला 92. पहले गुज़र जाने वाले बुज़ुर्गों के लिए बाद में आने वालों की दुआ।

"ऐ हमारे रब! हमें और हमारे उन भाइयों को भी बख़्श दे जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं और अहले ईमान के बारे में हमारे दिलों में किसी क़िस्म का कीना न आने दे। ऐ हमारे रब! तू बड़ा ही शफ़ीक़ और मेहरबान है।" (सूरह हश्र : 10)

मसला 93. हासिदों के शर से पनाह की दुआ।

"कहो! मैं पनाह मांगता हूं सुबह के पैदा करने वाले की। सारी मख़्लूक़ के शर से, अंधेरी रात के शर से जब वह छा जाए और गिरहों में फूंक मारने वालियों के शर से और हसद करने वाले के शर से जब वह हसद करे।" (सूरह फ़लक़ : 1-5)

मसला 94. शैतानी वस्वसा दूर करने की दुआ।

"कहो! मैं लोगों के रब की पनाह मांगता हूं जो लोगों का मालिक और इलाह है शैतान के वस्वसे के शर से जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है। चाहे वह (शैतान) जिनों से हो या इंसानों से।" (सूरह नास : 1-6)

व्याख्या : इन दोनों सूरतों को "मुअव्विज़तैन" कहते हैं और जादू के दफ़ा के लिए उनको पढ़कर दम करना मुजर्रब है।

मसला 95. अहले ईमान की दुआ।

"ऐ हमारे रब! हमारा नूर आख़िर तक बाक़ी रखना और हमें बख़्श दे। तू यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है।" (सूरह तहरीम : 8)

"ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए हमें बख़्श दे हम पर रहम फ़रमा। तू सबसे बढ़कर रहम करने वाला है।" (सूरह मोमिनून : 109)

Www.IslamicBooks.Website

मसला 96. मसाइब और मुश्किलात से निजात हासिल करने की दुआ।

"तेरे सिवा कोई इलाह नहीं, तू पाक है और मैं वाक़ई ज़ालिमों में से हूं।" (सूरह अंबिया : 87)

मसला 97. ईमान पर इस्तक़ामत के लिए दुआ।

"ऐ हमारे रब! हिदायत अता फ़रमाने के बाद हमारे दिलों को गुमराह न कर और हमें अपनी तरफ़ से रहमत अता फ़रमा। बेशक तू ही हक़ीक़ी दाता है।" (सूरह आले इमरान : 8)

मसला 98. गुनाहों से बख़्शिश की दुआ।

"ऐ हमारे रब! हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है अगर तूने हमें न बख़्शा और हम पर रहम न किया तो हम यक़ीनन ख़सारा उठाने वालों में से हो जाएंगे।" (सूरह आराफ़ : 23)

मसला 99. ज़ालिमों से निजात पाने की दुआ।

"ऐ हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिसके बाशिन्दे ज़ालिम हैं। हमारे लिए अपनी क़ुदरत से कोई दोस्त पैदा फ़रमा और अपनी तरफ़ से हमारे लिए कोई मददगार मुहय्या कर दे।" (सूरह निसा : 75)

"ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिम लोगों का तख़्तामुश्क़ न बना और अपनी रहमत के सदक़े काफ़िर लोगों से हमें निजात दे।" (सूरह यूनुस : 85-86)

"ऐ मेरे रब! मुझ ज़ालिम लोगों से निजात दिला।" (सूरह क़सस : 21)

मसला 100. मुजाहिदीन की दुआएं (दुश्मन पर ग़लबा हासिल करने और साबितक़दम रहने के लिए)।

"ऐ हमारे रब! हमें फ़ैज़ान सब्र से नवाज़ हमें साबितक़दम रख और काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।" (सूरह बक़रा : 250)

"ऐ हमारे रब! हमारे गुनाह बख़्श दे हमारे मामलात में हमारी ज़्यादतियों को माफ़ फ़रमा हमें साबितक़दम रख और काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।" (सूरह आले इमरान : 147)

मसला 101. गुनाहों से माफ़ी मांगने और दीन व दुनिया के मामले में नाक़ाबिले बरदाश्त मसाइब व आलाम से बचने की दुआ।

"ऐ हमारे रब! अगर हमसे भूल या चूक हो जाए तो हम पर गिरफ़्त न फ़रमा। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो तूने हमसे पहले लोगों पर डाला था। ऐ हमारे रब! जो बोझ उठाने की ताक़त हमारे अंदर नहीं वह हमारे ऊपर

Www.IslamicBooks.Website

न रख हमें माफ़ फ़रमा। हमें बख़्श दे हम पर रहम फ़रमा, तू ही हमारा आक़ा है काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।" (सूरह बक़रा : 286)

मसला 102. औलाद के लिए इक़ामत सलात की और वालिदैन के लिए बख़्शिश की दुआ।

"ऐ मेरे रब! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम करने वाला बना, ऐ हमारे रब! मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा। ऐ हमारे रब! मुझे मेरे वालिदैन और अहले ईमान को हिसाब किताब के दिन बख़्श देना।" (सूरह इब्राहीम : 40-41)

मसला 103. दीन व दुनिया की भलाइयां तलब करने की दुआ।

"ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अता फ़रमा और आख़िरत में भी भलाई से नवाज़ और हमें आग के अज़ाब से बचा ले।" (सूरह बक़रा : 201)

मसला 104. दावते दीन और तब्लीग़ वग़ैरह से पहले यह दुआ मांगनी चाहिए।

"ऐ मेरे रब! मेरा सीना खोल दे (यानी यक़ीन पैदा फ़रमा) और मेरा काम आसान फ़रमा मेरी ज़बान की गिरह खोल दे ताकि लोग मेरी बात अच्छी तरह समझ सकें।" (सूरह ता०हा० : 25-28)

मसला 105. बेदीन लोगों की सोहबत से निजात हासिल करने की दुआ।

"ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घर वालों को इनके आमाल (के वबाल) से निजात दे।" (सूरह शुअरा : 169)

मसला 106. किसी भी फ़ित्ने से बचने के लिए यह दुआ मांगनी चाहिए।

"ऐ हमारे रब! हम तुझ पर तवक्कुल करते हैं तेरी ही तरफ़ रुजूअ करते हैं और तेरी ही तरफ़ पलटना है। ऐ हमारे रब! हमें काफ़िरों का तख़्तामुश्क़ न बना। ऐ हमारे रब! हमें बख़्श दे। बिलाशुबह तू ग़ालिब है हिक्मत वाला है।" (सूरह मुमतहिना : 4-5)

मसला 107. दुश्मन के मक्र व फ़रेब से बचने की दुआ।

"मैं अपना काम अल्लाह को सौंपता हूं बेशक सब बन्दे अल्लाह की निगाह में हैं।" (सूरह मोमिन : 44)

सोने और जागने की दुआएं

मसला 108. सोने से पहले और जागने के बाद की दुआ।

हज़रत हुज़ेफ़ा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब रात के

Www.IslamicBooks.Website

वक़्त अपने बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो अपना हाथ (दाहिने) रुख़्सार के नीचे रखते और फ़रमाते : "या अल्लाह! मैं तेरे नाम से मरता (यानी सोता) और ज़िंदा होता (यानी जागता) हूं।" और जब जागते तो फ़रमाते : "उस अल्लाह का शुक्र है जिसने हमें मरने (यानी सोने) के बाद ज़िंदा कर दिया (यानी जगा दिया) और करने के बाद इसी के हुज़ूर हाज़िर होना है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

हज़रत हफ़सा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब सोने का इरादा फ़रमाते तो दायां हाथ रुख़्सार के नीचे रखते और तीन मर्तबा यह कलिमात पढ़ते : "या अल्लाह! जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा उस दिन मुझे अपने अज़ाब से बचाए रखना।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब तुममें से कोई अपने बिस्तर पर आंए तो (पहले) अपने तहबंद के कौन से बिस्तर को झाड़े क्योंकि उसे मालूम नहीं कि बिस्तर पर क्या पड़ा है? फिर यह दुआ पढ़े : "ऐ मेरे रब! तेरे नाम से (बिस्तर पर) लेटता हूं और तेरे नाम से उठूंगा अगर तूने मेरी जान (अपने पास) रोक ली तो उस पर रहम फ़रमाना और अगर वापस भेज दी तो उसकी वैसे ही हिफ़ाज़त फ़रमाना जैसे तू नेक बन्दों की हिफ़ाज़त फ़रमाता है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि० नबी अकरम सल्ल० के पास ख़ादिम मांगने हाज़िर हुईं तो नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "क्या मैं तुझे वह चीज़ न बताऊं जो ख़ादिम से बेहतर है हर नमाज़ के बाद और सोने से पहले 33 मर्तबा सुब्हानल्लाह, 33 मर्तबा अलहम्दुलिल्लह, 34 मर्तबा अल्लाहु अकबर कहो।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूले अकरम सल्ल० जब अपने बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो 'क़ुलहु वल्लाहु अहद, क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ और क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन नास' (तीनों सूरतें) पढ़कर अपनी हथेलियों पर फूंक मारते और उन्हें अपने चेहरे पर फैरते और अपने जिस्म के जितने हिस्से तक हाथ पहुंच सकते उस पर भी फेरते। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब नबी अकरम सल्ल० बीमार होते तो मुझे हुक्म देते कि मैं तीनों सूरतें पढ़कर हाथों पर फूकूं और आप सल्ल० के जिस्म पर फैरूं।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 109. नींद में बुरा ख़्वाब देखने पर तीन बार तअव्वुज़ पढ़ना चाहिए।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब तुममें से कोई शख़्स नापसंदीदा ख़्वाब देखे, तो तीन मर्तबा बाईं तरफ़ थूके और तीन मर्तबा "मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगता हूं" पढ़े और जिस करवट पर लेटा था, उसे बदल दे।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 110. नींद न आने पर यह दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत ज़ेद बिन साबित रज़ि० कहते हैं कि मैंने नबी अकरम सल्ल० की ख़िदमत में बेख़्वाबी की शिकायक की तो आप सल्ल० ने फ़रमाया : "यूं कहो : "ऐ अल्लह सितारे डूब गए (लोगों की) आंखों ने सुकून पाया। तेरी ज़ात ज़िंदा और क़ायम है तुझे नींद आती है न ऊंघ। ऐ ज़िंदा और क़ायम रहने (या रखने) वाली ज़ात मेरी आंखों को सुला दे और इस रात मुझे सुकून अता फ़रमा।" इसे इब्ने सुनी ने रिवायत किया है।

पाकी से मुताल्लिक़ दुआएं

मसला 111. बैतुलख़ला में दाख़िल होने की दुआ।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब बैतुलख़ला में दाख़िल होते तो फ़रमाते : "ऐ अल्लाह! मैं नापाक जिन्नों और जिन्नियों से तेरी पनाह चाहता हूं।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 112. बैतुलख़ला से निकलने की दुआ।

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब बैतुलख़ला से बाहर आते तो फ़रमाते "या अल्लाह! मैं तेरी बख़्शिश का तालिब हूं।" इसे अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 113. ग़ुस्ल करने से पहले या ग़ुस्ल करते वक़्त या ग़ुस्ल के बाद कोई दुआ पढ़ना हदीस से साबित नहीं।

---

1. मुख़्तसर सही बुख़ारी, लिल ज़ुबैदी, हदीस 3073।
2. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-3, हदीस 4218।
3. लुउलुउ वल मरजान, भाग-2, हदीस 1735।
4. किताबुज़ ज़िक्र वद्दुआ वत्तौबा वल इस्तिग़फ़ार।
5. किताबुल तिब।
6. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1518।
7. अदतुल हिस्नुल हसीन, हदीस 132।

Www.IslamicBooks.Website

मसला 114. वुज़ू से पहले "बिस्मिल्लाह" पढ़ना ज़रूरी है।

हज़रत सअद बिन ज़ेद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जिसने वुज़ू से पहले बिस्मिल्लाह न पढ़ी तो उसका वुज़ू नहीं हुआ।" इसे तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 115. वुज़ू से पहले नीयत के मुरव्वजा अल्फ़ाज़ "नवेतु अन अतवज़्ज़आ" हदीस से साबित नहीं हैं।

मसला 116. वुज़ू के बाद निम्नलिखित दुआ पढ़ना मसनून है।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अगर कोई शख़्स मुकम्मल वुज़ू करके यह दुआ पढ़ ले "मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इलाह नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं" तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं कि जिससे चाहे दाख़िल हो।" इसे अहमद, मुस्लिम, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। तिर्मिज़ी ने इस दुआ में इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा भी किया है "या अल्लाह! मुझे तौबा करने वालों और पाक रहने वालों से बना।"

मसला 117. वुज़ू के दौरान मुख़्तलिफ़ आज़ा धोते वक़्त मुख़्तलिफ़ दुआएं या कलिमा शहादत पढ़ना अहादीस से साबित नहीं।

मस्जिद से मुताल्लिक़ दुआएं

मसला 118. घर से मस्जिद जाते हुए यह दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब नमाज़ के लिए (घर से) निकलते तो यह दुआ पढ़ते : "ऐ अल्लाह! मेरे दिल, ज़बान, कान और आंखों में नूर पैदा कर दे, मेरे पीछे और आगे नूर ही नूर कर दे, मेरे ऊपर और नीचे भी नूर कर दे और ऐ अल्लाह! मुझे नूर ही नूर

1. मुख़्तसर सही बुख़ारी लिल ज़ुबैदी, हदीस 116।
2. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-1, हदीस 3।
3. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-1, हदीस 24।
4. सही मुस्लिम किताबुत तहारत, बाबुज़ ज़िक्र।
5. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-1, हदीस 48।

Www.IslamicBooks.Website

अता फ़रमा।'' इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 119. मस्जिद में दाख़िल होने से पहले यह दुआ पढ़नी मसनून है।

हज़रत अमरो बिन अलआस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब मस्जिद में दाख़िल होने का इरादा करते तो फ़रमाते : ''मैं शैतान मरदूद से अज़्मत वाले अल्लाह की पनाह मांगता हूं। उसकी ज़ात करीम और लाज़वाल बादशाहत के वास्ते से।'' रावी (हज़रत उक़्बा रज़ि०) ने कहा : ''बस इतना ही।'' मैंने कहा : ''हां''। हज़रत उक़्बास रज़ि० ने कहा : ''जब कोई यह कहता है तो शैतान कहता है अब वह मुझसे तमाम दिन के लिए बचा लिया गया।'' इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 120. मस्जिद में दाख़िल होने और निकलने की दुआ ये है।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० बिन्ते मुहंम्मद सल्ल० कहती हैं कि रसूले अकरम सल्ल० जब मस्जिद में दाख़िल होते तो फ़रमाते : ''अल्लाह के नाम से मस्जिद में दाख़िल होता हूं अल्लाह के रसूल पर सलाम हो, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा और अपनी रहमत के दरवाज़े मेरे लिए खोल दे।'' जब मस्जिद से बाहर निकलते तो यह कलिमात अदा फ़रमाते : ''अल्लाह के नाम से मस्जिद से निकलता हूं अल्लाके रसूल पर सलाम हो। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा और अपने फ़ज़्ल के दरवाज़े मेरे लिए खोल दे।'' इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

अज़ान और नमाज़ से मुताल्लिक़ दुआएं

मसला 121. अज़ान सुनने के बाद निम्नलिखित दुआएं मांगना मसनून हैं।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : ''जिसने अज़ान सुनकर ये कलिमा कहे : ''मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, मुहम्मद सल्ल० उसके बन्दे और रसूल हैं अल्लाह तआला के रब होने पर, मुहम्मद सल्ल० के रसूल होने पर और इस्लाम के दीन होने पर मैं राज़ी हूं।'' उसके गुनाह

1. सही मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुन नबी।
2. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-1, हदीस 441।
3. किताबुल मसाजिद, बाबुद्दुआ।

Www.IslamicBooks.Website

बख़्श दिए जाते हैं।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : ''जिस शख़्स ने अज़ान सुनकर ये कलिमात कहे : ''ऐ अल्लाह! इस (तौहीद की) मुकम्मल दावत और क़ायम होने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद सल्ल० को वसीला, फ़ज़ीलत और मक़ामे महमूद अता फ़रमा जिसका तूने उनसे वादा फ़रमाया है।'' तो क़यामत के दिन उसकी सिफ़ारिश करना मेरे ज़िम्मे होगी।'' इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

व्याख्या : वसीला जन्नत में बुलन्दतरीन दर्जे का नाम है और मक़ामे महमूद, मक़ामे शफ़ाअत है फ़ज़ीलत भी जन्नत के एक दर्जे का नाम है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो बिन अलआस रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है जब मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनो तो वही कुछ कहो जो मुअज़्ज़िन कहता है फिर मुझ पर दुरूद पढ़ो क्योंकि मुझ पर दुरूद पढ़ने वाले पर अल्लाह दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है उसके बाद मेरे लिए अल्लाह तआला से वसीला मांगो, वसीला जन्नत में एक मक़ाम है जो जन्नतियों में से किसी एक को दिया जाएगा मुझे उम्मीद है वह जन्नती में ही हूंगा। लिहाज़ा जो आदमी मेरे लिए वसीले की दुआ करेगा उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो जाएगी। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 122. तकबीरे तहरीमा के बाद की दुआ निम्न है।

हज़रत अबू हुरेरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० तकबीरे तहरीमा के बाद क़िरात शुरू करने से पहले थोड़ी देर ख़ामोश रहते। मैंने अर्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह! मेरे मां-बाप आप सल्ल० पर क़ुरबान इस ख़ामोशी में आप क्या पढ़ते हैं?'' आप सल्ल० ने फ़रमाया : ''मैं यह दुआ पढ़ता हूं : ''ऐ अल्लाह! मेरे और मेरे गुनाहों के दर्मियान मश्रिक़ व मग़्रिब की दूरी पैदा फ़रमा दे। या अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से सफ़ेद कपड़े की तरह कर दे। या अल्लाह! मेरे गुनाह बर्फ़, पानी और औलों से धो दे।'' इसे अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब नमाज़ शुरू करते तो ये कलिमात पढ़ते : ''ऐ अल्लाह! तू अपनी हम्द के साथ पाक है तेरी शान बुलन्द है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।'' इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 123. रुकूअ और सुजूद की कुछ मसनून दुआएं ये हैं।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत हुज़ेफ़ा रज़ि० कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ी आप सल्ल० ने रुकूअ किया तो उसमें यह दुआ पढ़ी : "मेरा अज़्मत वाला रब हर ख़ता से पाक है।" और सज्दे में यह दुआ पढ़ी : "मेरा बुलन्द व बरतर रब पाक है।" इसे नसाई और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि नबी अकरम सल्ल० अपने रुकूअ और सज्दो में यह दुआ पढ़ते : "ऐ अल्लाह! हमारे रब तू अपनी हम्द के साथ पाक है मुझे बख़्श दे।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० अपने रुकूअ और सज्दे में यह दुआ पढ़ते : "तमाम फ़रिश्तों और जिब्रील अलैहि० का रब पाक और मुक़द्दस है।" इसे नसाई ने रिवायत किया है।

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ि० कहते हैं मैं एक रात नबी अकरम सल्ल० के साथ नमाज़ के लिए खड़ा हुआ तो आप सल्ल० ने सूरह बक़रा की तिलावत के बराबर रुकूअ किया और उसमें यह दुआ पढ़ी : "ग़लबा, बादशाही, किब्र और अज़्मत वाला (रब) पाक है।" इसे नसाई ने रिवायत किया है।

मसला 124. रुकूअ के बाद खड़े होने की दुआ निम्न है।

हज़रत रफ़ाआ बिन राफ़ेअ रज़ि० फ़रमाते हैं हम नबी अकरम सल्ल० के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे जब नबी अकरम सल्ल० ने रुकूअ से सर उठाया तो फ़रमाया : "जिसने अल्लाह की तारीफ़ की अल्लाह तआला ने सुन ली।" मुक़तदियों में से एक आदमी ने कहा : "हमारे परवरदिगार! तारीफ़ तेरे ही लिए है बकसरत ऐसी तारीफ़ जो शिर्क से पाक और बरकत वाली है।" जब नबी अकरम सल्ल० नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो पूछा : "ये कलिमात कहने वाला कौन था?" उस शख़्स ने अर्ज़ किया : "मैं था।" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "मैंने तीस से ज़्याा फ़रिश्तों को उन कलिमात का सवाब लिखने में सब्क़त हासिल करते देखा है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी ऊफ़ा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब रुकूअ से सर उठाते तो फ़रमाते : "अल्लाह ने सुन लिया उस शख़्स को जिसने उसकी तारीफ़ की, ऐ अल्लाह! ज़मीन व आसमान की वुस्अतों और उसके बाद जिसे जिस चीज़ की वुस्अत तू चाहे उसके बराबर हम्द तेरे ही लिए है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 125. दोनों सज्दों के दर्मियान पढ़ने की दुआ निम्न है।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० दोनों सज्दों के दर्मियान यह दुआ पढ़ा करते थे : "या अल्लाह! मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा, मुझे सेहत, हिदायत और रिज़्क़ अता फ़रमा।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

हज़रत हुज़ेफ़ा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० दोनों सज्दों के दर्मियान (जलसे में) फ़रमाया करते थे : "ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे।" इसे नसाई, इब्ने माजा और दारमी ने रिवायत किया है।

मसला 126. पहले तशह्हुद की दुआ यह है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया : "जब तुम नमाज़ पढ़ो तो कहो : "तमाम ज़बानी, जिस्मानी और माली इबादत अल्लाह तआला ही के लिए है। ऐ नबी! आप पर अल्लाह का सवाल और उसकी रहमतें और बरकतें हों। हम पर भी और अल्लाह तआला के नेक बन्दों पर भी सलाम। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं और गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह तआला के बन्दे और रसूल हैं।" फिर आदमी अपने लिए जो दुआ पसंद करे, वह मांगे। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 127. दूसरे तशह्हुद की मसनून दुआओं से पहले ये दुआ (दुरूद शरीफ़) पढ़ना चाहिए।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रज़ि० से रिवायत है कि हमने पूछा : "या रसूलल्लाह सल्ल०! हम आप पर और अहले बैअत पर किस तरह दुरूद भेजें?" आप सल्ल० ने फ़रमाया : कहो "ऐ अल्लाह! मुहम्मद और आले मुहम्मद पर उसी तरह रहमत भेज जिस तरह तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर रहमत भेजी। तारीफ़ और बुज़ुर्गी तेरे ही लिए है। या अल्लाह! मुहम्मद और आले मुहम्मद पर इसी तरह बरकत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर बरकत नाज़िल फ़रमाई, तू यक़ीनन तारीफ़ किया गया और बुज़ुर्ग है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 128. दुरूद शरीफ़ के बाद पढ़ी जाने वाली कुछ मसनून दुआएं ये हैं।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़ में (दुरूद शरीफ़ के बाद) यह दुआ मांगा करते थे : "ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूं

Www.IslamicBooks.Website

अज़ाबे क़ब्र से मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से, ज़िंदगी और मौत की आज़माइशों से, गुनाह और क़र्ज़ से।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया : "मुझे कोई दुआ सिखलाइए जो मैं नमाज़ में पढ़ूं।" आपने फ़रमाया : कहो "ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किए और तेरे सिवा कौन है जो गुनाह बख़्शे तू मुझे भी अपने यहां से ख़ास बख़्शिश से नवाज़ और मुझ पर रहमत फ़रमा, यक़ीनन तू ही बख़्शने वाला मेहरबान है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

नमाज़ के बाद अज़्कार मसनूना

मसला 129. फ़र्ज़ नमाज़ से सलाम फैरने के बाद निम्नलिखित दुआएं मांगना मसनून है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं नबी अकरम सल्ल० की (फ़र्ज़) नमाज़ के इख़्तिताम का अंदाज़ा आप सल्ल० के अल्लाहु अकबर कहने (की आवाज़) से लगाया करता था। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

---

1. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 200।
2. मुख़्तसर सही बुख़ारी लिल ज़ुबैदी, हदीस 377।
3. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 198।
4. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-1, हदीस 703।
5. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-1, हदीस 701-702।
6. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-1, 1024।
7. मुख़्तसर सही बुख़ारी लिल ज़ुबैदी, हदीस 455।
8. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-1, 1086।
9. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-1, 1004।
10. मुख़्तसर सही बुख़ारी लिल ज़ुबैदी, हदीस 460।
11. किताबुद दावात।
12. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-1, हदीस 756।
13. सही बुख़ारी, किताबुस सलात।
14. किताबुल अंबिया, बाब क़ौलुल्लाही तआला।
15. लुउलुउ वल मरजान, भाग-1, हदीस 345।
16. लुउलुउ वल मरजान, भाग-2, हदीस 1729।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत सोबान रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब अपनी नमाज़ से फ़ारिग होते तो तीन बार अस्तग़फ़िरुल्लाह कहते और फिर फ़रमाते : "या अल्लाह! तू सलामती है, सलामती तुझी से हासिल हो सकती है ऐ बुज़ुर्ग और बख़्शिश के मालिक तेरी ज़ाब बड़ी बाबरकत है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत मुगीरा बिन शोअबा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ते थे : "अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। बादशाही उसी की है हम्द उसी के लिए सज़ावाद है वह हर चीज़ पर क़ादिर है। या अल्लाह! अगर तू किसी को अपनी फ़ज़्ल से नवाज़ना चाहे तो कोई तुझे रोक नहीं सकता और अगर किसी को अपनी रहमत से महरूम कर दे तो कोई उसे नवाज़ नहीं सकता किसी दौलतमंद की दौलत उसे तेरे अज़ाब से नहीं बचा सकती।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया : "ऐ मआज़! मुझे तुमसे मुहब्बत है।" मैंने अर्ज़ किया : "मुझे भी आप सल्ल० से मुहब्बत है।" आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "अच्छा तो फिर हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद ये कलिमात कहना न भूलना : "ऐ मेरे रब! मुझे अपना ज़िक्र, शुक्र और अपनी बेहतरीन इबादत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।" इसे अहमद, अबू दाऊद और नसाई ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जिसने हर नमाज़ के बाद 33 मर्तबा सुब्हानल्लाह (अल्लाह पाक है), 33 मर्तबा अलहम्दुलिल्लाह (हम्द अल्लाह के लिए है), 33 मर्तबा अल्लाहु अकबर (अल्लाह सबसे बड़ा है) कहा उसने 99 की तादाद पूरी की। फिर सौवीं मर्तबा (अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, वह एक है उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही उसी की है तारीफ़ के लायक़ उसी की ज़ात है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है) कहा तो उसके गुनाह चाहे समुद्र की झाग के बराबर ही क्यों न हों माफ़ कर दिए जाएंगे।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० फ़रमाते है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने हर नमाज़ के बाद मुअव्विज़ात पढ़ने का हुक्म दिया। इसे अहमद, अबू दाऊद और नसाई ने रिवायत किया है।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग होते तो बुलन्द आवाज़ से ये कलिमात अदा फ़रमाते : "अल्लाह तआला के सिवा कोई इलाह नहीं वह वहदहू ला शरीक है बादशाही उसी की है हम्द उसी को सज़ावाद है वह हर चीज़ पर क़ादिर है अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर न गुनाह से बचने की ताक़त है न नेकी करने की क़ुव्वत, अल्लाह तआला के सिवा कोई इलाह नहीं उसके सिवा हम किसी की बन्दगी नहीं करते। सब नेमतें उसी की तरफ़ से हैं। बुज़ुर्गी उसी के लिए है। बेहतरीन तारीफ़ का मालिक वही है उसके सिवा कोई इलाह नहीं हम अपना दीन उसी के लिए ख़ालिस करते हैं काफ़िरों को चाहे कितना ही नागवार क्यों न हो।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्ल० निम्न कलिमात पढ़ने का हुक्म दिया करते थे : "ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह तलब करता हूं बख़ीली से, बुज़दिली से और उस बात से कि पलटाया जाऊं बहुत ज़्यादा बुढ़ापे की उम्र को और तेरी पनाह तलब करता हूं दुनिया की

---

1. लुउलुउ वल मरजान, भाग-1, हदीस 342।
2. किताबुल मसाजिद, बाब इस्तहबाबुज़ ज़िक्र बादस्सलात।
3. लुउलुउ वल मरजान, भाग-1, हदीस 347।
4. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-1, हदीस 1236।
5. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 314।
6. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-1, 1268।
7. किताबुल मसाजिद, बाब इस्तहबाबुज़ ज़िक्र बादस्सलात।
8. मुख़्तसर सही बुख़ारी लिल ज़ुबैदी, हदीस 2082।
9. सिलसिला अहादीस सही, लिलबानी, भाग-2, 972।
10. आयतुल कुर्सी के अल्फ़ाज़ ये हैं : "अल्लाह ही माबूद बरहक़ है, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं जो ज़िंदा और सबका थामने वाला है, जिसे न ऊंघ आती है न नींद। उसी की मिल्कियत में ज़मीन व आसमान की चीज़ें हैं, कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके सामने शफ़ाअत कर सके, वह जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है। वे उसकी मर्ज़ी के बग़ैर किसी चीज़ के इल्म का अहाता नहीं कर सकते। उसकी कुर्सी की वुस्अत ने ज़मीन व आसमान को घेर रखा है। अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त से न थकता है और न उकताता है, वह बुलन्द और बहुत बड़ा है।" (सूरह बक़रा : 552)
11. अदतुल हिस्ने हसीन, हदीस 213।

Www.IslamicBooks.Website

आज़माइश से और अज़ाबे क़ब्र से।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

हज़रत अबी उमामा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जिसने हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी2 पढ़ी उसे मौत के सिवा कोई चीज़ जन्नत में जाने से नहीं रोक सकती।" इसे नसाई, इब्ने हिबान और तबरानी ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० जब (नमाज़ से) सलाम फैरते तो तीन मर्तबा ये कलिमात अदा फ़रमाते : "मेरा इज़्ज़त वाला रब उन तमाम ऐबों से पाक है जो काफ़िर बयान करते हैं सलामती हो रसूलों पर और हम्द के लायक़ सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन की ज़ात है।" इसे अबू याला ने रिवायत किया है।

बअज़ नमाज़ों की मख़्सूस दुआएं

मसला 130. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी अकरम सल्ल० जब रात को नमाज़ के लिए उठते तो अपनी नमाज़ का आग़ाज़ इस दुआ से फ़रमाते : "ऐ अल्लाह! जोकि रब है जिब्रील, मीकाईल और इसराफ़ील का, ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला ग़ायब और हाज़िर का जानने वाला, जिन बातों में लोग इख़्तेलाफ़ कर रहे हैं उनका फ़ैसला तू ही करेगा उन इख़्तेलाफ़ की बातों में तू मुझे अपनी तौफ़ीक़ से हक़ की राह दिखला क्योंकि सीधे रास्ते की तरफ़ तू ही हिदायत देता है जिसे चाहता है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 131. नमाज़े वित्र में निम्न दुआ पढ़ना मसनून है।

हज़रत हसन बिन अली रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझे वित्रों में पढ़ने के लिए यह दुआ क़ुनूत सिखाई : "इलाही! मुझे हिदायत दे और हिदायतयाफ़्ता लोगों में शामिल फ़रमा, मुझे आफ़ियत दे और उन लोगों में शामिल फ़रमा जिन्हें तूने आफ़ियत अता फ़रमाई है। मुझे अपना दोस्त बनाकर उन लोगों में शामिल फ़रमा जिन्हें तूने अपना दोस्त बनाया है जो नेमतें तूने मुझे दी हैं उनमें बरकत अता फ़रमा, उस बुराई से मुझे महफ़ूज़ रख जिसका तूने फ़ैसला किया है बिलाशुबह फ़ैसला करने वाला तू ही है और तेरे ख़िलाफ़ फ़ैसला नहीं किया जाता जिसे तू दोस्त रखे वह कभी रुस्वा नहीं होता और जिससे तू दुश्मनी रखे वह कभी इज़्ज़त हासिल नहीं कर सकता। ऐ हमारे रब! तेरी ज़ात

Www.IslamicBooks.Website

बड़ी बाबरकत और बुलन्द व बाला है।" इसे तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 132. फ़ज्र की नमाज़ के बाद निम्न दुआ मांगना मसनून है।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० सुबह की नमाज़ से सलाम फैरते तो यह दुआ मांगते : "या अल्लाह! मैं तुझसे नफ़ाबख़्श इल्म, पाकीज़ा रिज़्क़ और (तेरी बारगाह में) मक़बूल अमल का सवाल करता हूं।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 133. नमाज़े वित्र से सलाम फैरने के बाद निम्न कलिमात कहना मसनून है।

हज़रत हज़रत अब्दुर्रहमान अबज़ी रज़ि० अपेन बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब (नमाज़ वित्र) से सलाम फैरते तो तीन मर्तबा : "(हमारा) बादशाह (हर ख़ता से) पाक है (बिल्कुल) पाक" इर्शाद फ़रमाते, तीसरी मर्तबा बुलन्द आवाज़ से अदा फ़रमाते। इसे नसाई ने रिवायत किया है।

रोज़ों से मुताल्लिक़ दुआएं

मसला 134. रोज़ा इफ़्तार करने की दुआ ये है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० जब रोज़ा इफ़्तार करते तो फ़रमाते : "प्यास ख़त्म हो गई रगें तर हो गईं और रोज़े का सवाल इंशाअल्लाह पक्का हो गया।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 135. लैलतुल क़द्र में यह दुआ मांगनी मसनून है।

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह! अगर मुझे पता चल जाए कि लैलतुल क़द्र कौन-सी रात है तो क्या कहूं?" आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कहो : "ऐ अल्लाह! तू माफ़ करने वाला है माफ़ करना पसंद करता है मुझे माफ़ फ़रमा।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 136. रमज़ानुल मुबारक (और दूसरे महीनों) का चांद देखकर यह

---

1. किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाबुद् दुआ।
2. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-1, 1648।
3. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-1, 753।
4. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-1, 1643।

Www.IslamicBooks.Website

दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब चांद देखते तो यह दुआ पढ़ते : "ऐ अल्लाह! हम पर यह चांद अम्न ईमान और सलामती और इस्लाम के साथ तुलूअ फ़रमा (ऐ चांद!) मेरा और तेरा रब अल्लाह है।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 137. रोज़ा इफ़्तार करवाने वाले को यह दुआ देनी चाहिए।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० हज़रत सअद बिन उबादा रज़ि० के यहां तशरीफ़ लाए तो वह आप सल्ल० के लिए रोटी और सालन लाए। आप सल्ल० ने तनावुल फ़रमाया और दुआ की : "रोज़ादारों ने तुम्हारे पास रोज़ा इफ़्तार किया। नेक लोगों ने तुम्हारा खाना खाया, फ़रिश्ते तुम्हारे लिए दुआए रहमत करें।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

ज़कात से मुताल्लिक़ दुआएं

मसला 138. ज़कात का माल वुसूल करने वाले (तहसीलदार) को ज़कात लाने वालों के लिए यह दुआ करनी चाहिए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी ऊफ़ा रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० के पास जब लोग अपने सदक़ात लेकर आते तो आप सल्ल० फ़रमाते : "ऐ अल्लाह! फ़लां लोगों पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा।" जब मेरा बाप अपना सदक़ा लेकर आया तो फ़रमाया : "ऐ अल्लाह! आले अबी ऊफ़ा पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

सफ़र से मुताल्लिक़ दुआएं

मसला 139. घर से निकलते वक़्त निम्न दुआ पढ़ने से हर इंसान शैतान से महफ़ूज़ हो जाता है।

---

1. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-2, 2066।
2. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2789।
3. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2745।
4. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-2, 3263।
1. मुख़्तसर सही बुख़ारी लिल ज़ुबैदी, हदीस 761।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब आदमी अपने घर से निकले और यह दुआ पढ़े : "अल्लाह के नाम से (निकलता हूं) अल्लाह पर भरोसा करता हूं। नुक़्सार से बचने की ताक़त और फ़ायदे के हुसूल की क़ुव्वत अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर (किसी में नहीं है।) उसी वक़्त उसके हक़ में यह बात कही जाती है सारे कामों में तेरी रहनुमाई की गई तू किफ़ायत किया गया और (हर तरह की बुराई और ख़सारे से) बचा लिया गया। पस शैतान उससे अलग हो जाता है और दूसरा शैतान उससे कहता है कि तुम इस शख़्स पर कैसे मुसल्ल०त हो सकते हो सिकी रहनुमाई की गई, किफ़ायत किया गया और महफ़ूज़ किया गया।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

हज़रत उम्मे सलमा ..ज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब भी मेरे घर से निकलते तो आसमान की तरफ़ निगाह उठाकर फ़रमाते : "या अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं गुमराही इख़्तियार करूं या कोई मुझे गुमराह करे। मैं किसी को फुसलाऊं या कोई मुझे फुसलाए। मैं किसी पर ज़ुल्म करूं या कोई मुझ पर ज़ुल्म करे, मैं किसी के साथ नादानी से पेश आऊं या कोई मेरे साथ नादानी से पेश आए।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 140. घर में दाख़िल होने की दुआ ये हैं।

हज़रत अबू मालिक अशअरी रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : " जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो उसे कहना चाहिए : "ऐ अल्लाह! मैं आपसे सवाल करता हूं घर में दाख़िल होने और निकलने की भलाई का। अल्लाह तआला का नाम लेकर हम दाख़िल होते हैं और अपने रब ही पर हम भरोसा करते हैं।" फिर अपने घर वालों पर सलाम भेजे (यानी अस्सलामु अलैकुम कहे।)" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 141. किसी को रुख़्सत करते वक़्त ये कलिमात अदा करने चाहिएं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते है कि नबी अकरम सल्ल० जब किसी आदमी को रुख़्सत करते तो उसका हाथ पकड़ लेते और उस वक़्त तक हाथ न छोड़ते जब तक दूसरा ख़ुद नबी अकरम सल्ल० का हाथ न छोड़ता और फिर आप सल्ल० उसे यह दुआ देते : "मैं तेरा दीन, अमानत और आख़िरी अमल अल्लाह की हिफ़ाज़त में देता हूं।" इसे तिर्मिज़ी, अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 142. सवारी पर बैठते वक़्त और बैठने के बाद यह दुआ पढ़े।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि उनके पास सवारी का जानवर सवार होने के लिए लाया गया। जब हज़रत अली रज़ि० ने अपना पांव रिकात में रखा तो कहा : "अल्लाह के नाम से" जब जानवर की पीठ पर बैठ गए तो कहा : "सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है।" फिर यह दुआ पढ़ी : "पाक है अल्लाह की ज़ात जिसने हमारे लिए इस जानवर को मुसख़्ख़र किया हालांकि हम इसे मुसख़्ख़र करने की ताक़त नहीं रखते थे और हमें पलटना अपने रब ही की तरफ़ है।" फिर तीन मर्तबा (अलहम्दुलिल्लाह) और तीन मर्तबा (अल्लाहु अकबर) कहा फिर ये कलिमात अदा किए : "ऐ अल्लाह! तू पाक है मैंने अपने आप पर ज़ुल्म कियाह पस मेरे गुनाह बख़्श दे। तेरे सिवा गुना बख़्शने वाला कोई नहीं।" फिर हज़रत अली रज़ि० हंस दिए। पूछा गया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप किस वजह से हंसे हैं?" हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया : "मैंने नबी अकरम सल्लं० को ऐसे ही करते देखा जैसे मैंने किया है।" इसे अहमद, तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 143. सवारी पर सवार होने के बाद आग़ाज़ सफ़र में और सफ़र से वापस पर यह दुआ मांगना मसनून है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब अपने ऊंट पर सवार हो जाते सफ़र में निकलने की हालत में तो तीन मर्तबा अल्लाह अकबर कहकर यह दुआ पढ़ते : "पाक है वह ज़ात जिसने हमारे लिए इस सवारी को मुसख़्ख़र किया हम इसे मुसख़्ख़र करने की ताक़त नहीं रखते थे और हमें अपने रब की तरफ़ ही पलटना है ऐ अल्लाह! इस सफ़र में हम तुझसे नेकी, तक़वा और ऐसे अमल का सवाल करते हैं जिससे तू राज़ी हो। या अल्लाह! हमारे लिए हमारा सफ़र आसान फ़रमा दे और इसकी लम्बाई कम कर दे। या अल्लाह! सफ़र में तू ही हमारा मुहाफ़िज़ है और अहल व अयाल की ख़बरगीरी करने वाला है। या अल्लाह! मैं सफ़र की मशक़्क़त (सफ़र के दौरान हादसे की वजह से) बुरे मंज़र और अहल व अयाल में बुरी हालत के साथ वापस आने से तेरी पनाह मांगता हूं।" जब रसूलुल्लाह सल्ल० सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तब भी यही दुआ पढ़ते और साथ इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा फ़रमाते : "हम वापस आने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले और अपने रब की तारीफ़ करने वाले हैं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 144. सफ़र के दौरान बुलन्दी पर चढ़ते हुए "अल्लाहु अकबर" और

Www.IslamicBooks.Website

बुलन्दी से नीचे उतरते हुए "सुब्हानल्लाह" कहना चाहिए।

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं (सफ़र के दौरान में) जब हम बुलन्दी पर चढ़ते तो अल्लाहु अकबर कहते और जब बुलन्दी से उतरते तो सुब्हानल्लाह कहते। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 145. सफ़र में सिकी जगह ठहरने से पहले ये कलिमात पढ़ने से इंसान हर क़िस्म के नुक़्सान से महफ़ूज़ रहता है।

हज़रत ख़ौला बिन्ते हकीम रज़ि० कहती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स किसी जगह ठहरे और यह दुआ पढ़े : "मैं अल्लाह तआला के तमाम कलिमात के ज़रिए सारी मख़्लूक़ के शर से अल्लाह की पनाह मांगता हूं।" तो उसे उस जगह से रवाना होने तक कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचाएगी। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

निकाह से मुताल्लिक़ दुआएं

मसला 146. निकाह के बाद मियां-बीवी को यह दुआ देनी चाहिए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० निकाह करने वाले आदमी को इन अल्फ़ाज़ से दुआ देते : "अल्लाह तुझे और तुम दोनों को बरकत अता फ़रमाए और तुम्हारे दर्मियान भलाई पर इत्तफ़ाक़ पैदा फ़रमाए।" इसे अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 147. निकाह के बाद बीवी से पहली मुलाक़ात पर शौहर को यह दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत अमरो बिन शुऐब अपने बाप (यानी शुऐब से) और शुऐब अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अमरो बिन आस रज़ि०) से रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "जब तुममें से कोई औरत से निकाल करे या

---

1. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-3, 4249।
2. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-1, 959।
3. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-3, 2738।
4. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2742।
5. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 644।
6. किताबुल जिहाद।
7. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1459।

Www.IslamicBooks.Website

ग़ुलाम ख़रीदे तो यूं दुआ करे : "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इसकी भलाई का सवाल करता हूं और जि तबीअत पर इसको पैदा किया है उसकी भलाई का सवाल करता हूं और तुझसे पनाह मांगता हूं इसके शर से और जिस तबीअत पर इसको पैदा किया है। उसके शर से।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 148. बीवी से हमबिस्तरी करने से पहले यह दुआ पढ़नी मसनून है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब लोगों में से कोई अपनी बीवी के पास आने का इरादा करे तो यूं कहे : "अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह! हमें शैतान से दूर रख और उस चीज़ से भी शैतान को दूर रख जो तू हमें अता फ़रमाए।" पस अगर उस हमबिस्तरी के दौरान में बीवी की क़िस्मत में औलाद लिखी है तो शैतान उसे कभी नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

खाने पीने से मुताल्लिक़ दुआएं

मसला 149. खाना शुरू करने से पहले "बिस्मिल्लाह" पढ़ना मसनून है।

हज़रत उमर बिन अबू सलमा रज़ि० कहते हैं कि मैं बचपन से नबी अकरम सल्ल० की तर्बियत में था (खाना खाते हुए) मेरा हाथ (सालन) में घूमता था। मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "बेटा! बिस्मिल्लाह कहो और अपने दाहिने हाथ से सामने से खाओ।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 150. खाना शुरू करने से पहले "बिस्मिल्लाह" भूल जाए तो याद आने पर यह दुआ पढ़नी चाहिए।

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब कोई शख़्स खाना शुरू करे तो उसे बिस्मिल्लाह पढ़नी चाहिए और अगर इब्तदा में बिस्मिल्लाह भूल जाए तो उसे यूं कहना चाहिए : "अव्वल और आख़िर अल्लाह के नाम से खाता हूं!" इसे तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 151. कोई चीज़ खाने पीने के बाद यह दुआ मांगनी चाहिए।

---

1. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-2, 1866।
2. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-2, 1893।
3. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 828।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत मुआज़ बिन अनस जहमी रज़ि० अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जिसने खाना खाया और यह दुआ पढ़ी : (अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे खाना खिलाया और यह रिज़्क़ बग़ैर किसी ताक़त और क़ुव्वत के अता फ़रमाया।) उसके सारे पहले गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 152. खाना खिलाने वाले को यह दुआ देनी मसनून है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बसर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० मेरे वालिद के घर बतौर मेहमान तशरीफ़ लाए हमने आप सल्ल० की ख़िदमत में खाना और वतबा (खजूर, घी और पनीर से तैयार किया खाना) पेश किया। उसके बाद खजूद लाई गई। रसूलुल्लाह सल्ल० उसे खाकर गुठली अपनी दोनों उंगलियों के दर्मियाने डालते जाते फिर आप सल्ल० की ख़िदमत में कोई मंशरूब लाया गया आप सल्ल० ने मशरूब नौश फ़रमाया और उसे दे दिया जो आप सल्ल० के दाईं तरफ़ था (वापसी के वक़्त) मेरे वालिद ने आपकी सवारी की लगाम पकड़ रखी थी। आप सल्ल० से अर्ज़ किया : "(या रसूलल्लाह सल्ल०!) मेरे हक़ में अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाइए, रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह दुआ मांगी : "या अल्लाह! जो कुछ तूने इन्हें दिया है उसमें बरकत अता फ़रमा इन्हें बख़्श दे, इन पर रहम फ़रमा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

व्याख्या : दूसरी दुआ मसला 137 के तहत देखें।

मसला 153. दूध पीने के बाद यह दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब तुममें से कोई खाना खाए तो यूं दुआ मांगे : "या अल्लाह! हमारे खाने में बरकत अता फ़रमा और हमें इससे बेहतर दे।" और जब कोई दूध पिए तो उसे यह दुआ मांगनी चाहिए : "या अल्लाह! हमें इसमें बरकत अता फ़रमा और ज़्यादा दे।" खाने और पीने दोनों का काम देने वाली चीज़ दूध के अलावा कोई नहीं।" इसे तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

---

1. लुउलुउ वल मरजान, भाग-2, 1313।
2. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-2, 3202।
3. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, 2656।
4. किताबुल अतअमा, बाब इस्तहबाब।
5. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-2, 3173।

Www.IslamicBooks.Website

सुबह व शाम की दुआएं

मसला 154. सुबह व शाम निम्नलिखित दुआएं मांगना मसनून है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं जब सुबह होती तो रसूले अकरम सल्ल० यह दुआ पढ़ते : "ऐ अल्लाह! तेरी मेहरबानी से हमने सुबह की और तेरी मेहरबानी से शाम की। तेरे करम से ज़िंदा हैं और तेरे हुक्म से मरेंगे। और (करने के बाद) दोबारा ज़िंदा होकर तेरे हुज़ूर हाज़िर होना है।" और जब शाम होती तो यह दुआ फ़रमाते : "ऐ अल्लाह! तेरी मेहरबानी से हमने शाम की और तेरी मेहरबानी से ज़िंदा हैं। और तेरे हुक्म से मरेंगे और (मरने के बाद) तेरी तरफ़ ही पलटना है।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब भी शाम और सुबह होती तो ये कलिमात पढ़ना कभी नहीं छोड़ते थे : "या अल्लाह! मैं तुझसे दुनिया और आख़िरत में आफ़ियत का सवाल करता हूं। अपने दीन और दुनिया के मामले में और अपने माल और अहल के मामले में। या अल्लाह! मेरे उयूब ढांप ले और मुझे खौफ़ से महफ़ूज़ फ़रमा। या अल्लाह! आगे पीछे दाएं बाएं और ऊपर मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा और मैं आपकी अज़्मत के सदक़े पनाह मांगता हूं इस बात से कि नीचे से हलाक किया जाऊं।" यानी ज़मीन के धंसने से। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

हज़रत अबान बिन उसमान रज़ि० से रिवायत है कि मैंने अपने बाप को कहते हुए सुना है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जो शख़्स हर सुबह व शाम तीन मर्तबा ये कलिमात कहेगा : "अल्लाह के नाम से जिसके नाक की बरकत से ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वह ख़ूब सुनने और जानने वाला है।" उसे कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचाएगी। हज़रत अबान रज़ि० को फ़ालिज हो गया तो उस आदमी ने उनकी तरफ़ (हैरानी) से देखना शुरू किया। हज़रत अबान रज़ि० ने कहा : "तुम मेरी तरफ़ क्यों देख रहे हो। हदीस रसूल सल्ल० वैसी ही है जैसी मैंने तुझसे बयान की है लेकिन मैंने उस रोज़ यह दुआ नहीं पढ़ी थी (यानी पढ़ना भूल गया था) ताकि अल्लाह तआला की लिखी तक़दीर पूरी हो जाए।" इसे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब रज़ि० अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हम

Www.IslamicBooks.Website

एक तारीक और शदीद बारिश वाली रात बाहर निकले ताकि रसूलुल्लाह सल्ल० को तलाश करें कि वह हमें नमाज़ पढ़ाएं। हज़रत ख़ुबैब रज़ि० कहते हैं कि मैंने नबी अकरम सल्ल० को तलाश कर लिया आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "कहो" मैंने कुछ न कहा। आप सल्ल० ने फिर इर्शाद फ़रमाया : "कहो" मैंने फिर भी कुछ न कहा। फिर आप सल्ल० ने (तीसरी मर्तबा) इर्शाद फ़रमाया : "कहो" मैंने अर्ज़ किया : "क्या कहूं?" आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "हर सुबह व शाम तीन-तीन मर्तबा "क़ुलहु वल्लाहु अहद, क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ और क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास" (यानी तीनों मुकम्मल सूरतें) पढ़ो तो हर मुसीबत और परेशानी से बचने के लिए काफ़ी हैं। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुंल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "सबसे अफ़ज़ल इस्तिग़फ़ार यह है कि तुम कहो : "ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई इलाह नहीं तूने ही मुझे पैदा किया है मैं तेरा बन्दा हूं तुझसे किए हुए अहद और वादे पर इपनी इस्तेताअत के मुताबिक़ क़ायम हूं अपने किए हुए बुरे कामों के वबाल से तेरी पनाह चाहता हूं मुझ पर तेरे जो एहसानात हैं उनका एतराफ़ करता हूं और अपने गुनाहों का इक़रार करता हूं। मुझे बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई बख़्शने वाला नहीं।" रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जो शख़्स ये कलिमात यक़ीन के साथ दिन के वक़्त पढ़े और शाम से पहले मर जाए तो वह जन्नती होगा और जिसने रात के वक़्त यक़ीन के साथ ये कलिमात कहे और सुबह होने से पहले मर गया तो वह भी जन्नती है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक आदमी रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िल हुआ और अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह! गुज़िश्ता रात बिच्छू के डसने की वजह से मुझे बहुत तकलीफ़ हुई।" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "अगर तुम शाम के वक़्त यह दुआ पढ़ लेते : "मैं पनाह मांगता हूं अल्लाह तआला के कामिल (पुरअसर) कलिमात के ज़रिए तमाम मख़्लूक़ के शर से" तो तुम्हें कोई चीज़ नुक़्सान न पहुंचाती।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू अयाश रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "जिसने सुबह के वक़्त ये कलिमात पढ़े : "अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, वह पाक है, उसका कोई शरीक नहीं, बादशाही उसी के लिए है

Www.IslamicBooks.Website

तारीफ़ के लायक़ उसी की ज़ात है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।" तो उसे औलाद इस्माईल से एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाल मिलता है (इसके अलावा) उसके आमालनामे में दस नेकियां लिखी जाती हैं। दस बुराइयां मिआई जाती हैं दस दर्जात बुलन्द किए जाते और शाम तक वह शैतान से महफ़ूज़ रहता है अगर यही कलिमात शाम के वक़्त कहे यही सवाब मिलता है और सुबह तक शैतान से महफ़ूज़ रहता है।" इसे अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "जिसने सुबह के वक़्त तीन मर्तबा : "मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगता हूं जो ख़ूब सुनने और ख़ून जानने वाला है।" कहा उसके बाद आप सल्ल० ने सूरत हश्र की आख़िरी तीन आयात तिलावत फ़रमाईं और फ़रमाया : "इस शख़्स पर अल्लाह तआला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमाता है जो उसके लिए शाम तक दुआ करते रहते हैं और अगर उस दिन उसकी मौत वाक़ेअ हो जाए तो वह शहीद मरता है इसी तरह जिस शख़्स ने शाम के वक़्त यही कलिमात कहे, उसके लिए यही अज्र व सवाब है।" इसे तिर्मिज़ी और दारमी ने रिवायत किया है।

व्याख्या : सूरह हश्र की आख़िरी तीन आयतें ये हैं :

"वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई इलाह नहीं वह ग़ायब और हाज़िर का जानने वाला है बहुत मेहरबान निहायत रहम करने वाला। वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई इलाह नहीं बादशाह है पाक है सरासर सलामती, अम्न देने वाला निगहबान ग़ालिब अपना हुक्म बज़ोर नाफ़िज़ करने वाला बड़ा ही होकर रहने वाला, अल्लाह की ज़ात उस शिर्क से पाक है जो लोग करते हैं। वह अल्लाह ही है जो हर चीज़ के बनाने वाला, पैदा करने वाला और सूरतगिरी करने वाला है, उसके लिए बेहतरीन नाम हैं ज़मीन व आसमान की हर चीज़ उसकी तस्बीह कर रही है और वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह सल्ल०! मुझे कोई ऐसी दुआ बताइए जो मैं सुबह व शाम पढ़ूं।" नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया कहो "या अल्लाह! ग़ैब और हाज़िर के जानने वाले ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले हर चीज़ के मालिक और पालने वाले मैं गवाही देता

Www.IslamicBooks.Website

हूं कि तेरे सिवा कोई इलाह नहीं मैं तेरी पनाह मांगता हूं अपने नफ़्स के शर से, शैतान के शर से और उसके शर से।" सुबह व शाम यह दुआ पढ़ो और जब अपने बिस्तर पर जाओ उस वक़्त भी पढ़ो।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

हज़रत जुवेरिया रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० फ़ज्र की नमाज़ के लिए घर से निकले तो वह (यानी हज़रत जुवेरिया) नमाज़ की जगह पर बैठी (अज़्कार व वज़ाइफ़ कर रही) थीं। रसूले अकरम सल्ल० चाश्त के वक़्त वापस तशरीफ़ लाए तो देखा कि हज़रत जुवेरिया उस वक़्त तक (अपने मुसल्ले पर) बैठी हैं। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "जुवेरिया जबसे मैं (मस्जिद) गया था जबसे तुम इसी हालत में बैठी (वज़ीफ़ा कर रही) हो?" हज़रत जुवेरिया रज़ि० ने अर्ज़ किया : "हां या रसूलल्लाह सल्ल०!" आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "मैंने तुम्हारे बाद (यानी तुमसे रुख़्सत होने के बाद) चार कलिमे तीन-तीन बार ऐसे कहे हैं कि अगर उनका वज़न तुम्हारे आज के सारे दिन के वज़ीफ़े से किया जाए तो वे (चार कलिमे) भारी हो जाएं, वे कलिे ये हैं : "अल्लाह तआला की मख़्लूक़ की तादाद के बराबर अल्लाह की तस्बीह बयान करता हूं, अल्लाह के राज़ी होने तक मैं अल्लाह की तस्बीह बयान करता हूं, अल्लाह के अर्श के वज़न के बराबर मैं अल्लाह की तस्बीह बयान करता हूं, अल्लाह के कलिमात को तहरीह करने के लिए जितनी स्याही मत्लूब है उस मिक़्दार के बराबर मैं अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करता हूं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

जामेअ दुआएं

1. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-2, 4236।
2. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-3, 4239।
3. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2698।
4. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2829।
5. मुख़्तसर सही बुख़ारी, लिल ज़ुबैदी, हदीस 2070।
6. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1453।
7. सही सुनन अबू दाऊद, किताबुद दुआ।
8. मिश्कातुल मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2157।
9. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2701।
10. किताबुज़ ज़िक्र वद्दुआ।

Www.IslamicBooks.Website

मसला 155. दुनिया व आख़िरत की भलाई की दुआ।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्ल० की अकसर दुआ यह होती : "या अल्लाह! हमें दुनिया में भी ख़ैर अता फ़रमा और आख़िरत में भी और हमें आग के अज़ाब से बचा ले।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० यह दुआ मांगा करते थे : "या अल्लाह! मेरे दीन की इस्लाह फ़रमा जो मेरे अंजाम का मुहाफ़िज़ है मेरी दुनिया की इस्लाह फ़रमा जिसमें मेरी रोज़ी है मेरी आख़िरत की इस्लाह फ़रमा जहां मुझे (मरने के बाद) पलट कर जाना है मेरी ज़िंदगी को नेकियों में इज़ाफ़े का ज़रिया बना और मौत को हर बुराई से बचने के लिए राहत बना।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 156. सेहत, आफ़ियत, अमानत, अच्छा अख़्लाक़ और रिज़ा बिलक़ज़ा तलब करने की दुआ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० यह दुआ फ़रमाया करते थे : "या अल्लाह! मैं तुझसे सेहत, पाकदामनी, अच्छे अख़्लाक़ और तक़दीर पर राज़ी रहने का सवाल करता हूं।" इसे बैहक़ी ने रिवायत किया है।

मसला 157. हिदायत, तक़वा, पाकदामनी और बेनियाज़ी तलब करने की दुआ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० नबी अकरम सल्ल० से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० फ़रमाया करते थे : "या अल्लाह! मैं तुझसे हिदायत, तक़वा, पाकदामनी और बेनियाज़ी का सवाल करता हूं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 158. निफ़ाक़, रिया, झूठ और ख़ियानत जैसी बुरी आदतों से बचने की दुआ।

हज़रत उम्मे मअबद रज़ि० कहती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है : "या अल्लाह! मेरे दिर को निफ़ाक़ से, अमल को रिया से, ज़बान को झूठ से और आंख को ख़ियानत से पाक कर दे क्योंकि तू आंखों की ख़ियानत और सीनों के अंदर छुपी बातों को जानता है।" इसे बैहक़ी ने रिवायत किया है।

मसला 159. मज्लिस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा करने वाली दुआएं।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कम ही ऐसा हुआ कि नबी अकरम सल्ल० किसी मज्लिस से उठे हों और सहाबा किराम रज़ि० के लिए यह दुआ न मांगी हो : "या अल्लाह! तू हमें इतनी ख़शयत अता फ़रमा जो हमारे और हमारे गुनाहों के दर्मियान आड़ हो जाए और हमें इतनी इताअत नसीब फ़रमा जो हमें तेरी जन्नत में पहुंचा दे और इतना यक़ीन अता फ़रमा जो दुनिया के मसाइल सहने हमारे लिए आसान बना दे। या अल्लाह! जब तक तू हमें ज़िंदा रखे हमें कानों आंखों और दूसरी क़ुव्वतों से फ़ायदा पहुंचा और हमें उस फ़ायदे का वारिस बना (यानी उम्र भर हमारे हवास सही सलामत रख) जो शख़्स हम पर ज़ुल्म करे उससे तू इंतक़ाम ले दुश्मनों के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा, दीन के मामले में हम पर मुसीबत न डाल, दुनिया को हमारी ज़िंदगी का सबसे बड़ा मक़्सद न बंना न ही दुनिया को हमारे इल्म की मंज़िले मक़्सूद बंना और ऐसे शख़्स को हम पर मुसल्ल०त न फ़रमा जो हम पर रहम न करे।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जो शख़्स किसी ऐसी मज्लिस में बैठे जहां फ़ुज़ूल बातें बहुत हुई हों और उठने से पहले वह यह मांग ले : "या अल्लाह! तू अपनी हम्द के साथ (हर ख़ता से) पाक है गवाही देता हूं तेरे सिवा कोई इलाह नहीं, मैं तुझसे बख़्शिश तलब करता हूं। तेरे हुज़ूर तौबा करता हूं।" तो उस मज्लिस में (किए गए) उसके सारे गुनाह मांफ़ कर दिए जाते हैं।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 160-161. मसाइब व आलाम में दीन पर साबितक़दम रहने की दुआ।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी अकरम सल्ल० यह दुआ कसरत से मांगा करते थे : "ऐ दिलों के फैरने वाले! मेरा दिल अपने दीन पर जमा दे।" (क्योंकि) हर आदमी का दिल अल्लाह तआला की दो उंगलियों के दर्मियान है जिसे चाहे राहेरास्त पर क़ायम रखे जिसे चाहे भटका दे। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 162. यह दुआ नबी अकरम सल्ल० ने हज़रत आइशा रज़ि० को सिखाई।

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने उन्हें यह दुआ सिखाई : "या अल्लाह! मैं तुझसे हर तरह की भलाई मांगता हूं जल्द या देर

Www.IslamicBooks.Website

की जिसे में जानता हूं और जिसे में नहीं जानता और तुझसे पनाह तलब करता हूं हर तरह की बुराई से जल्द या देर की जिसे मैं जानता हूं और जिसे में नहीं जानता। या अल्लाह! मैं तुझसे हर वह भलाई मांगता हूं जो तुझसे तेरे बन्दे और तेरे नबी ने मांगी और हर उस बुराई से तेरी पनाह तलब करता हूं जिससे तेरे बन्दे और तेरे नबी ने पनाह मांगी। या अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत का सवाल करता हूं और ऐसे क़ौल व फ़ेअल का भी जो जन्नत के क़रीब ले जाए। या अल्लाहष! मैं तेरी पनाह तलब करता हूं आग से और उस क़ौल व फ़ेअल से जो आग के क़रीब जाए। या अल्लाह! मैं तुझसे दरख़्वास्त करता हूं कि तूने मेरे लिए जिस तक़दीर का फ़ैसला किया उसे मेरे हक़ में बेहतर बना दे।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 163. हालतं मिस्कीनी में ज़िंदगी बसर करने और मरने की दुआ।

हज़रत अबू सईद रज़ि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को अपनी दुआ में यह कहते हुए सुना है : "या अल्लाह! मुझे मिस्कीनी की हालत में ज़िंदा रख और मिस्कीनी की हालत में मौत दे और (क़यामत के दिन) मिस्कीनों की जमाअत में से उठा।" इसे इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया है।

मसला 164. सब्र, शुक्र और तवाज़ोअ के हुसूल की दुआ।

हज़रत बुरेदा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह दुआ मांगी : "या अल्लाह! मुझे शुक्र करने वाला और सब्र करने वाला बना और अपनी नज़र में छोटा और दूसरों की नज़र में बड़ा बना दे।" इसे बज़्ज़ार ने रिवायत किया है।

---

1. मुख़्तसर सही बुख़ारी, लिल ज़ुबैदी, हदीस 2084।
2. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1869।
3. मिश्कातुल मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2500।
4. मुख़्तसरं सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1870।
5. मिश्कातुल मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2501।
6. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2783।
7. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2730।
8. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-2, 2792।
9. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, 3102।
10. सिलसिला अहादीस सही, लिलबानी, भाग-1, हदीस 308।
11. दावतुल मासूरात।
10. किताबुज़ ज़िक्र वद्दुआ।

Www.IslamicBooks.Website

पनाह मांगने की दुआएं

मसला 165. बदबख़्ती और बुरी तक़दीर से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० "ज़बरदस्त मशक़्क़त से, बदबख़्ती से, बुरी तक़दीर से और दुश्मनों के ख़ुश होने से पनाह मांगा करते थे।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

व्याख्या : दुआ के अल्फ़ाज़ यूं होंगे : "ऐ अल्लाह! मैं पनाह मांगता हूं ज़बरदस्त मशक़्क़त से, बदबख़्ती से, बुरे फ़ैसले और दुश्मनों के ख़ुश होने से।

मसला 166. अल्लाह के ग़ुस्से और ज़वाले नेमत से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० की दुआओं में से एक दुआ यह थी : "या अल्लाह! मैं तेरी नेमत के ज़वाल, तेरी आफ़ियत से महरूमी, तेरे अचानक अज़ाब और तेरे हर तरह के ग़ुस्से से पनाह मांगता हूं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 167. रसूले अकरम सल्ल० निम्नलिखित चार चीज़ों से पनाह मांगा करते थे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० यह दुआ मांगा करते थे : "या अल्लाह! मैं चार चीज़ों से तेरी पनाह मांगता हूं (1) ऐसा इल्म जो नफ़ा न दे (यानी जिसके मुताबिक़ अमल न हो) (2) ऐसा दिल जो ख़ौफ़ न खाए, (3) ऐसा नफ़्स जो आसूदा न हो, (4) और ऐसी दुआ जो क़ुबूल न हो।" इसे अबू दाऊद, अहमद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 168. हक़ की मुख़ालिफ़त निफ़ाक़ और बुरे अख़्लाक़ से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० यह दुआ मांगा करते थे : "या अल्लाह! मैं हक़ की मुख़ालिफ़त, निफ़ाक़ और बुरे अख़्लाक़ से तेरी पनाह मांगता हूं।" इसे नसाई ने रिवायत किया है।

मसला 169. फ़िक्र और ग़म, कमज़ोरी और सुस्ती, बुज़दिली और बख़ीली, क़र्ज़ और लोगों के ज़ुल्म से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० यह दुआ मांगा करते थे : "या अल्लाह! मैं फ़िक्र और ग़म, कमज़ोरी और सुस्ती, बुज़दिली और बख़ीली, क़र्ज़ के बोझ और लोगों के ग़लबे से तेरी पनाह मांगता हूं।" इसे नसाई

Www.IslamicBooks.Website

ने रिवायत किया है।

मसला 170. किसी चीज़ के नीचे आने, जलने, डूबने और ज़्यादा बुढ़ापे की उम्र में मरने से पनाह मांगने की दुआ और मरते वक़्त शैतान की हमले से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत अबुल युस्र रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० यह दुआ मांगा करते थे : "या अल्लाह! मैं बुढ़ापे की उम्र, ऊंची जगह से गिरने से, किसी चीज़ के नीचे आने से, ग़म से, जलने से और ग़र्क़ होने से तेरी पनाह मांगता हूं और मौत के वक़्त शैतान के हमले से भी तेरी पनाह मांगता हूं और इस बात से भी तेरी पनाह मांगता हूं कि जिहाद से भागता हुआ मरूं और पनाह मांगता हूं इस बात से कि किसी ज़ेहरीले जानवर के डसने से मुझे मौत आए।" इसे अबू दाऊद और नसाई ने रिवायत किया है।

मसला 171. अज़ाबे क़ब्र और मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह मांगने की दुआ।

व्याख्या : हदीस मसला 128 के तहत देखें।

मसला 172. शैतान के वस्वसों से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "शैतान तुममें से किसी के पास आता है और कहता है फ़लां को किसने पैदा किया है? फ़लां चीज़ किसने पैदा की है? यहां तक कि कहता है कि तेरे रब को किसने पैदा किया है? पस जब ऐसी सोच आए तो : "मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगता हूं" कहे और (आइंदा ऐसी सोच से) बाज़ रहे।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 173. बर्स, कोढ़, दीवानगी और मुख़्तलिफ़ बीमारियों से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाया करते थे : "या अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूं बर्स, कोढ़, जुनून और बुरी बीमारियों से।" इसे नसाई ने रिवायत किया है।

मसला 174. बुरे हमसाए और बुरे दोस्त से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० यह दुआ मांगा करते थे : "या अल्लाह! मैं अपने घर में बुरे दिन और रात, बुरी घड़ी, बुरे साथी और बुरे हमसाए से तेरी पनाह मांगता हूं।" इसे तबरानी ने रिवायत

Www.IslamicBooks.Website

किया है।

मसला 175. बुरे अख़्लाक़, आमाल, ख़्वाहिशात और बीमारियों से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत ज़ियाद बिन अलाक़ा रज़ि० के चचा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "या अल्लाह! मैं बुरे अख़्लाक़, बुरे आमाल, बुरी ख़्वाहिशात और बुरी बीमारियों से तेरी पनाह मांगता हूं।" इसे तिर्मिज़ी, तबरानी और हाकिम ने रिवायत किया है।

मसला 176. कान, आंख, ज़बान, दिल और शर्मगाह के शर से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत शकल बिन हमीद अपने बाप रज़ि० से रिवायत करते हैं कि मैंने अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह! मुझे कोई ऐसा तावीज़ सिखाइए जिसके ज़रिए में पनाह हासिल कर सकूं।" आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : कहो "ऐ अल्लाह! मैं अपनी समाअत, बसारत, ज़बान, दिल और शर्मगाह के शर से तेरी पनाह मांगता हूं।" इसे नसाई ने रिवायत किया है।

मसला 177. फ़क़ीरी, क़िल्लत और दुनिया व आख़िरत में ज़िल्लत से पनाह मांगने की दुआ।

मसला 178. किसी पर ज़ुल्म करने या अपने ऊपर ज़ुल्म होने से पनाह मांगने की दुआ।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० फ़रमाया

---

1. लुउलुउ वल मरजान, भाग-2, हदीस 1733।
2. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1913।
3. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, 3094।
4. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, 3094।
5. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-3, 5039।
6. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-3, 5105।
7. किताब बदउल ख़लक़, बाब सफ़तुल इबलीस।
8. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-3, 5068।
9. सिलसिला अहादीस सही, लिलबानी, भाग-3, हदीस 1443।
10. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2840।
11. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-3, 5031।
12. सही सुनन नसाई, लिलबानी, भाग-3, 5046।

Www.IslamicBooks.Website

करते थे : "ऐ अल्लाह! मैं फ़क़ीरी से (दीन और दुनिया की ज़रूरतों में) कमी से और (दुनिया व आख़िरत में) रुस्वाई से तेरी पनाह मांगता हूं और इस बात से तेरी पनाह मांगता हूं कि मैं किसी पर ज़ुल्म करूं या कोई मुझ पर ज़ुल्म करे।" इसे नसाई ने रिवायत किया है।

मसला 179-180. दुनिया के फ़ित्नों और अज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगने की दुआ।

व्याख्या : हदीस मसला 129 के तहत देखें।

रंज और ग़म के वक़्त की दुआएं

मसला 181. शिद्दते ग़म और रंज में निम्नेलिखित दुआएं मांगनी चाहिएं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० शिद्दते ग़म के मौक़े पर यह कलिमात अदा फ़रमाया करते थे : "अज़्मत और हौसले वाले अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, अर्शे अज़ीम के मालिक अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, ज़मीन व आसमान के मालिक अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, वह अर्शे करीम का भी मालिक है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "परेशान आदमी की दुआ यह है : "ऐ अल्लाह! मैं तेरी रहमत का उम्मीदवार हूं मुझे लम्हा भर के लिए भी मेरे नफ़्स के हवाले न करे। मरे तमाम हालात दुरुस्त फ़रमा दे। तेरे सिवा कोई इलाह नहीं।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि जब नबी अकरम सल्ल० को कोई परेशानी लाहिक़ होती तो फ़रमाते : "ऐ ज़िंदा और थामने वाले (कायनात के) मैं तेरी रहमत के वसीले से तुझसे फ़रियाद करता हूं।" इसे तिर्मिज़ी और हाकिम ने रिवायत किया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब किसी शख़्स को दुख और ग़म पहुंचे तो यह दुआ पढ़े : "या अल्लाह! मैं तेरा बन्दा हूं तेरे बन्दे और बन्दी का बेटा, मेरी पेशानी तेरे हाथ में है, तेरे हर हुक्म मुझ पर नाफ़िज़ होने वाला है मेरे बारे में तेरा हर फ़ैसला इंसाफ़ पर मब्नी है मैं तुझसे तेरे हर उस नाम के वसीले से सवाल करता हूं जिसे तूने ख़ुद

Www.IslamicBooks.Website

अपने लिए पसंद किया है या अपनी किताब में नाज़िल किया है या अपनी मख़्लूक़ में से किसी को सिखाया है या अपने इल्मे ग़ैब के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ कर रखा है कि क़ुरआन को मेरे दिल की बहार, सीने का नूर और मेरे दुखों और ग़मों को दूर करने का ज़रिया बना दे।'' तो अल्लाह तआला उसका दुख और ग़म दूर कर देते हैं और उसकी जगह मसर्रत और ख़ुशी इनायत करते हैं अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह! हम यह दुआ या न कर लें?'' रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्यों नहीं हर सुनने वाले को चाहिए कि यह दुआ याद कर ले।'' इसे अहमद ने रिवायत किया है।

हज़रत असमा बिन्ते अमीस रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने शिद्दते ग़म में ये कलिमात पढ़ने के लिए सिखाए : ''अल्लाह बसं अल्लाह ही मेरा रब है मैं उसके साथ किसी को भी शरीक नहीं करता।'' इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

हज़रत उबी बिन कअब रज़ि० कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह! मैं आप सल्ल० पर कसरत से दुरूद भेजता हूं, अपनी दुआ में कितना वक्त दुरूद के लिए वक़्फ़ करूं?'' हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : ''जितना तू चाहे।'' मैंने अर्ज़ किया : ''एक चौथाई सही है?'' आप सल्ल० ने फ़रमाया : ''जितना तू चाहे, लेकिन अगर इससे ज़्यादा करे तो तेरे लिए अच्छा है।'' मैं अर्ज़ किया : ''आधा वक़्त मुक़र्रर करूं?'' आप सल्ल० ने फ़रमाया : ''जितना तू चाहे, लेकिन अगर इससे ज़्यादा करे तो तेरे लिए अच्छा है।'' मैंने अर्ज़ किया : ''दो तिहाई मुक़र्रर करूं?'' रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : ''जितना तू चाहे, लेकिन अगर ज़्यादा करे तो तेरे लिए अच्छा है।'' मैंने अर्ज़ किया : ''मैं अपनी सारी दुआ का वक़्त दुरूद शरीफ़ के लिए वक़्फ़ करता हूं।'' इस पर रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : ''यह तेरे सारे दुखों और ग़मों के लिए काफ़ी रहेगा, तेरे गुनाहों की बख़्शिश का ज़रिया होगा।'' इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 182. दुश्मन से ख़ौफ़ और परेशानी के वक़्त ये दुआएं मांगनी चाहिएं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं ख़ंदक़ के दिन हमने अर्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह सल्ल०! क्या कोई चीज़ ऐसी है जिसे हम (इन हालात में) पढ़ें क्योंकि (ख़ौफ और घबराहट की वजह से लोगों के) कलेजे हलक़ को आ गए

Www.IslamicBooks.Website

हैं।" आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया हां (कहो) : "या अल्लाह! हमारे उयूब ढांप ले और हमें घबराहट से अम्न दे।" हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि (इसके बाद) अल्लाह तआला ने (तेज़) हवा के ज़रिए दुश्मनों के मुंह फेर दिए और उसी हवा के ज़रिए अल्लाह ने उन्हें शिकस्त दे दी। इसे अहमद ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू मूसा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब किसी क़ौम से अंदेशा महसूस करते तो फ़रमाते : "या अल्लाह! हम कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में तुझे आगे करते हैं और उनके शर से तेरी पनाह मांगते हैं।" इसे अहमद और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब जंग करते तो यह दुआ मांगते : "या अल्लाह! तू ही मेरा बाज़ू है तू ही मेरा मददगार है तेरे ही सहारे मैं जंग करता हूं।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने रुकूअ के बाद यह दुआ मांगी : "इलाही! हमारी और तमाम मोमिन मर्दों और औरतों मुसलमाना मर्दों और औरतों की बख़्शिश फ़रमा, उनके दिलों में उल्फ़त डाल दे, उनके दर्मियान इस्लाह फ़रमा, अपने और उनके दुश्मन के मुक़ाबले में उनकी मदद फ़रमा, ऐ अल्लाह! इन अहले किताब काफ़िरों पर लानत कर जो (लोगों को) तेरी राह पर चलने से रोकते हैं, तेरे रसूलों को झुठलाते हैं, तेरे दोस्तों से जंग करते हैं, या अल्लाह! इनके दर्मियान इख़्तेलाफ़ डाल दे, इनके क़दम डगमगा दे और इन पर ऐसा अज़ाब नाज़िल फ़रमा जिसे तू मुज्रिम लोगों से फेरता नहीं, बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, ऐ अल्लाह हम तुझसे मदद और बख़्शिश तलब करते

---

1. लुउलुउ वल मरजान, भाग-2, हदीस 1741।
2. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-3, हदीस 4246।
3. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2796।
4. अदतुल हिस्ने हसीन, हदीस 323।
5. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, 3132।
6. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-2, 1999।
7. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2455।
8. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2441।
9. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2291।
10. किताबुस्सलात, बाब दुआ क़ुनूत।

Www.IslamicBooks.Website

हैं और तेरी तारीफ़ करते हैं, तेरी नाशुक्री नहीं करते जो तेरी नाफ़रमानी करे हम उससे क़ता ताल्लुक़ करते हैं और उसे छोड़ते हैं। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या अल्लाह! हम तेरी ही बन्दगी करते हैं सिर्फ़ तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ते हैं सिर्फ़ तुझे ही सज्दा करते हैं तेरी राह में मेहनत और जद्दोजहद करते हैं तेरे बड़े अज़ाब से डरते हैं हम तेरी रहमत के उम्मीदवार हैं बेशक काफ़िरों को तेरा अज़ाब पहुंच कर रहेगा।" इसे बैहक़ी ने रिवायत किया है।

मर्ज़ और मौत से मुताल्लिक़ दुआएं

मसला 183. मरीज़ की इयादत के वक़्त ये दुआएं पढ़नी मसनून हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "जिस शख़्स ने ऐसे मरीज़ की इयादत की जिसकी मौत का वक़्त अभी नहीं आया और उसके लिए सात मर्तबा दुआ यह मांगे : "अर्शे अज़ीम के मालिक अज़्मत वाले अल्लाह से मैं सवाल करता हूं कि तुझे शिफ़ा और आफ़ियत अता फ़रमाए।" तो अल्लाह उस मरीज़ को शिफ़ा देगा।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 184. जिस्म में दर्द, बुख़ार या किसी भी दूसरी बीमारी के मरीज़ को दम करने की दुआएं।

हज़रत उसमान बिन अबुल आस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे जिस्म में दर्द था मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को बताया तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत उसमान रज़ि० से कहा जिस जगह दर्द है वहां हाथ रखकर तीन बार (बिस्मिल्लाह) कहो और सात मर्तबा ये दुआ मांगो : "मैं अल्लाह तआला की मदद और क़ुदरत के ज़रिए इस बीमारी से पनाह मांगता हूं जो मुझे लाहिक़ है या जिसके लाहिक़ होने का मुझे डर है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू सईद रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत जिब्रील अलैहि० नबी सल्ल० के पस आए और पूछा क्या आप बीमार हैं। आप सल्ल० ने फ़रमाया हां। तो हज़रत जिब्रील अलैहि० ने इस तरह दम किया : "अल्लाह के नाम से तुझे दम करता हूं हर तकलीफ़देह चीज़ से हर नफ़्स के शर से और हासिद की नज़र से अल्लाह तुझे शिफ़ा अता करे अल्लाह के नाम से तुझे दम करता हूं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हममें से जब कोई आदमी बीमार होता तो रसूलुल्लाह सल्ल० उस पर अपना दायां हाथ फैरते और यह दुआ फ़रमाते : "ऐ लोगों के रब इस बीमारी को दूर फ़रमा, तू ही शिफ़ा देने वाला है लिहाज़ा शिफ़ा अता फ़रमा, शिफ़ा सिर्फ़ तेरी ही तरफ़ से है, ऐसी शिफ़ा अता फ़रमा जो किसी क़िस्म की बीमारी न छोड़े।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 185. नज़रे बद के मरीज़ को दम करने की दुआ यह है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० हज़रत हसन और हुसैन रज़ि० के लिए यूं दुआ फ़रमाते : "मैं तुम दोनों के लिए हर शैतान तकलीफ़देह जानवर और नज़रे बद से महफ़ूज़ रहने के लिए अल्लाह तआला के कामिल और पुरअसर कलिमातं के ज़रिए पनाह मांगता हूं।" और फ़रमाते : "बेशक तुम्हारे बाप (इब्राहीम अलैहि०) इस्माईल अलैहि० और इस्हाक़ अलैहि० के लिए इन्हीं कलिमात के साथ पनाह मांगते थे।" इसे बुख़ारी, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

व्याख्या : एक आदमी के लिए दुआ मांगते वक़्त उईज़ुकुमा के बजाए उईज़ुक कहना चाहिए।

मसला 186. मरीज़ को देखकर अपने लिए यह दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जिसने किसी मुसीबतज़दा (या बीमार) आदमी को देखकर कहा : "उस अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे इस मुसीबत से बचाया है जिसमें तुझे मुब्तला किया है और (उस अल्लाह का शुक्र है) जिसने मुझे बहुत-सी दूसरी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई है।" वह शख़्स (कहने वाला) कभी उस मुसीबत में गिरफ़्तार नहीं होगा।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 187. सांप, बिच्छू और ज़ेहरीले जानवरों के काटने से महफ़ूज़ रहने की दुआ।

व्याख्या : मसला 154 के तहत हदीस 6 देखें।

मसला 188. बुरे इमराज़ (बर्स, कोढ़, दीवानगी वग़ैरह) से पनाह मांगने की दुआ।

व्याख्या : हदीस मसला 173 के तहत देखें।

मसला 189. जिस्म में दर्द या किसी तकलीफ़ को दूर करने की दुआ।

Www.IslamicBooks.Website

व्याख्या : हदीस मसला 184 के तहत देखें।

मसला 190. मरीज़ को ज़िंदगी के आख़िरी लम्हात में यह दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं (मौत के वक़्त) रसूलुल्लाह सल्ल० मेरे साथ टेक लगाए हुए थे। मैंने आप सल्ल० को यह अल्फ़ाज़ अदा फ़रमाते हुए सुना : "या अल्लाह! मुझे बख़्श दे मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे रफ़ीक़े आला (यानी अपने साथ) मिला दे।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 191. किसी मुसीबत या ग़म (जैसे मौत वग़ैरह) की ख़बर सुनने पर ये कलिमात कहने मसनून हैं।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब किसी मुसलमान को मुसीबत पहुंचे और वह यंह दुआ मांगे जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है : "हम सब अल्लाह के लिए हैं और हम सबको उसी की तरफ़ पलटना है, या अल्लाह! मुझे मेरी मुसीबत के बदले बेहतर अज्र दे और इससे बेहतर बदल अता फ़रमा।" तो अल्लाह उसको पहले से बेहतर बदल अता फ़रमाएगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 192. मय्यत के वारिस से ताज़ियत करने की मसनून दुआ यह है।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० (हमारे घर) तशरीफ़ लाए। उस वक़्त अबू सलमा रज़ि० की आंखें पथरा चुकी थीं। नबी अकरम सल्ल० ने अबू सलमा रज़ि० की आंखें बन्द कीं और फ़रमाया : "जब रूह क़ब्ज़ की जाती है तो नज़र उसके तआक़ुब में जाती है।" घर वाले इस बात पर रोने लगे तो रसूले अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "अपने मरने वालों के हक़ में भली बात कहो क्योंकि जो कुछ तुम कहते हो फ़रिश्ते उस पर आमीन कहते हैं।" फिर नबी अकरम सल्ल० ने (अबू सलमा रज़ि० के हक़ में) यह दुआ फ़रमाई : "या अल्लाह! अबू सलमा को बख़्श दे, हिदायतयाफ़्ता लोगों में उसका मर्तबा बुलन्द फ़रमा उसमांदगान की नस्ल से उसका जांनशीन पैदा फ़रमा, या रब्बुल आमीन! हम सबको और मरने वाले को माफ़ फ़रमा, मय्यत की क़ब्र कुशादा कर दे और उसे नूर से भर दे।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 193. मय्यत क़ब्र में रखते वक़्त यह दुआ पढ़नी मसनून है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० मय्यत को क़ब्र में उतारते वक़्त यह दुआ पढ़ते : "अल्लाह के नाम से और

Www.IslamicBooks.Website

रसूलुल्लाह सल्ल० के तरीक़े पर (हम इसे क़ब्र में उतारते हैं।)" इसे अहमद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 193अ. ज़ियारत क़ुबूर की मसनून दुआ यह है।

हज़रत बुरैदा रज़ि० फ़रमाते हैं जब लोग क़ब्रिस्तान जाने के लिए निकलते तो रसूलुल्लाह सल्ल० उन्हें ज़ियारत क़ुबूर के लिए यह दुआ सिखाया करते थे : "इस इलाक़े के मुसलमान और मोमिन वासियो! अस्सलामु अलैकुम हम इंशाअल्लाह तुम्हारे पास आने वाले हैं, मैं अल्लाह तआला से अपने लिए और तुम्हारे लिए ख़ैर व आफ़ियत तलब करता हूं।" इसे अहमद और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

तौबा और इस्तिग़फ़ार

मसला 194. बन्दा एतराफ़ गुनाह के साथ तौबा करे तो उसकी तौबा क़ुबूल की जाती है।

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "बन्दा जब एतराफ़ गुनाह के साथ तौबा करता है तो अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमाता है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 195. मौत से पहले पहले तौबा का दरवाज़ा हर वक़्त खुला रहता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला बन्दे की तौबा क़ुबूल फ़रमाता है जब तक इंसान पर

1. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2663।
2. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1447।
3. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1444।
4. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1460।
5. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-3, 3963।
6. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2729।
7. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 1664।
8. किताबुल जनाइज़।
9. किताबुल जनाइज़।
10. किताबुल जनाइज़।
11. किताबुल जनाइज़।

Www.IslamicBooks.Website

नज़ा तारी नहीं होती।" इसे तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 196. तौबा करने वाले गुनाहगार, बेहतरीन इंसान हैं।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "सारे इंसान ख़ताकार हैं और बेहतरीन ख़ताकार वे हैं जो तौबा करते हैं।" इसे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा और दारमी ने रिवायत किया है।

मसला 197. तौबा न करने से इंसान का दिल स्याह हो जाता है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "मोमिन जब गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक स्याह नुक्ता पड़ जाता है अगर तौबा व इस्तिग़फ़ार करे तो उसका दिल साफ़ कर दिया जाता है और अगर मज़ीद गुनाह करता चला जाए तो स्याह नुक्ता बढ़ता रहता है और यही है वह ज़ंग जिसका अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में यूं ज़िक्र किया है : "हरगिज़ नहीं बल्कि उनके आमाल की वजह से अल्लाह ने उनके दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है।" इसे अहमद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 198. रसूले अकरम सल्ल० एक मज्लिस में सौ सौ मर्तबा इस्तिग़फ़ार करते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्ल० की तौबा व इस्तिग़फ़ार गिनते थे एक मज्लिस में आप सल्ल० सौ मर्तबा "ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे, मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा तू यक़ीनन तौबा क़ुबूल करने वाला और बख़्शने वाला है।" कहते थे। इसे अहमद, अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 199. मुश्रिक की तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल नहीं होती जब तक वह शिर्क न छोड़े।

हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला बन्दे को बख़्शता रहता है जब तक (अल्लाह और बन्दे के दर्मियान) पर्दा हाइल न हो।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह! पर्दा (का मतलब) क्या है?" आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी इस हाल में मरे कि शिर्क करने वाला हो।" इसे अहमद ने रिवायत किया है।

मसला 200. कसरत से इस्तिग़फ़ार करने वालों को रसूलुल्लाह सल्ल० ने ख़ुशख़बरी दी है।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बसर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "मुबारक हो उस शख़्स को जो अपने आमालनामे में कसरत से इस्तिग़फ़ार पाए।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 201. मरे हुए वालिदैन के लिए औलाद का इस्तिग़फ़ार नफ़ाबख़्श है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला नेक बन्दे का जन्नत में दर्जा बुलन्द फ़रमाता है तो वह पूछता है : "ऐ मेरे रब! यह दर्जा मुझे कैसे मिला है?" अल्लाह तआला फ़रमाता है : "तेरे लिए तेरे बेटे के इस्तिग़फ़ार करने पर।" इसे अहमद ने रिवायत किया है।

मसला 202. सुबह व शाम सय्यदुल इस्तिग़फ़ार वाला जन्नती है।

व्याख्या : हदीस मसला 154 के तहत देखें।

मसला 203. हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि एक शख़्स (रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में) हाज़िर हुआ और कहने लगा : "हाए मेरे गुनाह! हाए मेरे गुनाह!" नबी अकरम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : कहो "या अल्लाह! मेरे गुनाहों के मुक़ाबले में तेरी मग़्फ़िरत बहुत वसीअ है और मेरे अमल के मुक़ाबले में तेरी रहमत की ज़्यादा उम्मीद है।" उसने यह दुआ की, आप सल्ल० ने फ़रमाया : "इसको दोहरा।" उसने दोहराया। आप सल्ल० ने फ़रमाया : "फिर दोहरा।" उसने दोहराया, फिर आप सल्ल० ने फ़रमाया : "खड़ा हो जा, अल्लाह ने तुझे बख़्श दिया।" इसे हाकिम ने रिवायत किया है।

---

1. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2330।
2. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, 2802।
3. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-2, 2029।
4. सही इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, हदीस 3422।
5. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, हदीस 3075।
6. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2361।
7. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2, हदीस 3078।
8. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2354।
9. अदतुल हिस्ने हसीन, हदीस 246।

Www.IslamicBooks.Website

अल्लाह तआला का ज़िक्र

मसला 204. अल्लाह तआला को याद करने की फ़ज़ीलत।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला फ़रमाता है : "मैं बन्दे के गुमान के मुताबिक़ उससे सुलूक करता हूं जब बन्दा मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूं। पस अगर वह अपने दिल में मुझे याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूं अगर वह जमाअत में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं भी उसका जमाअत में ज़िक्र करता हूं जो उन (यानी बन्दों) की जमाअत से बेहतर है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० और हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब कुछ लोग अल्लाह को याद करने के लिए बैठते हैं तो फ़रिश्ते उन्हें (चारों तरफ़ से) घेर लेते हैं (अल्लाह की) रहमत उन्हें ढांप लेती है। उन पर सकीनत नाज़िल होती है और अल्लाह तआला उनका ज़िक्र फ़रिश्तों में करते हैं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 205. अल्लाह को याद करने वाला ज़िंदा और अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल इंसान, मुर्दा है।

हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अल्लाह को याद करने और न करने वाले की मिसाल ज़िंदा और मुर्दा की-सी है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 206. जिस मज्लिस में अल्लाह का ज़िक्र न किया जाए वह मज्लिस क़यामत के दिल बाइसे हसरत होगी।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अगर लोग किसी ऐसी मज्लिस में बैठें जिसमें न अल्लाह को याद करें न अपने नबी सल्ल० पर दुरूद भेजें तो वह मज्लिस (क़यामत के दिन) उनके लिए बाइसे हसरत होगी। अगर अल्लाह चाहेगा तो उन्हें सज़ा देगा अगर चाहेगा तो माफ़ कर देगा।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 207. अल्लाह के निन्नानवे (99) नाम याद करने वाला जन्नती है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया :

Www.IslamicBooks.Website

"अल्लाह तआला के निन्नानवे नाम हैं जिसने याद किए वह जन्नत में दाख़िल हुआ।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 208. निम्नलिखित कलिमात रसूलुल्लाह सल्ल० को दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा महबूब थे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "अल्लाह पाक है, हम्द अल्लाह के लायक़ है अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है।" कहना मुझे हर उस चीज़ से महबूब है जिस पर सूरज तुलूअ होता है। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 209. निम्नलिखित तस्बीह पढ़ने वाले के लिए जन्नत में खजूर का दरख़्त लगाया जाता है।

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जिसने (अज़्मत वाला अल्लाह अपनी हम्द के साथ पाक है।) कहो, उसके लिए जन्नत में खजूर का एक दरख़्त लगाया जाता है।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 210. निम्न दो कलिमात अल्लाह तआला को बहुत महबूब हैं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "दो कलिमे ऐसे हैं जो ज़बान से अदा कने में बड़े आसान हैं लेकि मीज़ान में उनका वजन बहुत ज़्यादा है, अल्लाह तआला को बहुत ज़्यादा पसंद है (वे ये हैं) "अल्लाह अपनी हम्द के साथ (हर ख़ता से) पाक है, अज़्मत वाला अल्लाह पाक है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 211. गुनाह मिटाने वाले कलिमात ये हैं।

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० एक ख़ुश्क पत्तों वाले दरख़्त के पास से गुज़रे तो उसे अपनी लाठी से मारा, तो उससे पत्ते (टूट कर) बिखर गए। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया : "हम्द अल्लाह के लिए है, अल्लाह पाक है, अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है।" कहना इसी तरह गुनाहों को मिटा देता है जिस तरह (लाठी मारने से) उस दरख़्त के (ख़ुश्क) पत्ते झड़ते हैं। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 212. "ला इला-ह इल्लल्लाहु" सातों ज़मीन व आसमान और उनमें मौजूद तमाम चीज़ों से भारी है।

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "बेहतरीन ज़िक्र ला इला-ह इल्लल्लाहु और बेहतरीन पुकार अलहम्दुलिल्लाह है।" इसे

Www.IslamicBooks.Website

तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 213. जन्नत के ख़ज़ाने से दिया गया कलिमा यह है।

हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "क्या मैं तुझे जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने के बारे में आगाह न करूं?" मैंने अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह! ज़रूर आगाह फ़रमाइए।" आप सल्ल० ने फ़रमाया : "नेकी करने और बुराई से बचने की ताक़त अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर नहीं।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

मसला 214. उंगलियों पर तस्बीहात गिनना मसनून है।

हज़रत यसीरह रज़ि० जो मुहाजिर ख़ातून हैं कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हमें फ़रमाया : "सुब्हानल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह और सुब्हानल मंलिकिल क़ुद्दूस" कहना अपने ऊपर लाज़िम कर लो और उंगलियों पर गिना करो क्योंकि (क़यामत के दिन) वह सवाल की जाएं और बुलवाई जाएंगी। यह तस्बीहात पढ़ने से ग़ाफ़िल न होना वरना रहमत से महरूम रह जाओगी।" इसे तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 215. एक मर्तबा "अलहम्दु लिल्लाह " कहना तराज़ू को नेकियों से भर देता है।

मसला 216. एक मर्तबा "सुब्हानल्लाह, वलहम्दुलिल्लाह" कहना ज़मीन व आसमान के दर्मियान सारी जगह को नेकियों से भर देता है।

---

1. लुउलुउ वल मरजान, भाग-2, हदीस 1721।
2. किताबुज़ ज़िक्र वद्दुआ वत्तौबा।
3. मुख़्तसर सही बुख़ारी, लिल ज़ुबैदी हदीस 2089।
4. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2691।
5. लुउलुउ वल मरजान, भाग-2, हदीस 1714।
6. किताबुज़ ज़िक्र वद्दुआ वत्तौबा।
7. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2757।
8. लुउलुउ वल मरजान, भाग-2, हदीस 1727।
9. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2318।
10. सहो सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3 हदीस 2694।
11. सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, भाग-2 हदीस 3083।
12. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3 हदीस 2835।
13. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 120।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत मालिक अशअरी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "पाकी आधा ईमान है। (एक मर्तबा) "अलहम्दुलिल्लाह" कहना तराज़ू को (नेकियों से) भर देता है और (एक मर्तबा) "सुब्हानल्लाहि वलहम्दुलिल्लाहि" कहना ज़मीन व आसमान के दर्मियान सारी जगह को (नेकियों से) भर देता है। नमाज़ (दुनिया व आख़िरत में) चेहरे का नूर है। सदक़ा क़यामत के दिन (निजात का) ज़रिया है। सब्र रौशनी है और क़ुरआन मजीद (क़यामत के दिन) तेरे हक़ में या तेरे ख़िलाफ़ गवाही देगा। हर आदमी सुबह उठता है तो उसकी जान गिरवी होता है जिसे या तो (नेकी करके) आज़ाद करा लेता है या (गुनाह करके) हलाक करता है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मुतफ़र्रिक़ दुआएं

मसला 217. दुआ इस्तख़ारा (दो या दो से ज़्यादा जाइज़ कामों में से एक का इंतख़ाब करने के लिए यकसूई और इत्मीनान हासिल करने की ख़ातिर अल्लाह तआला से दुआ मांगना) यह है।

हज़रत जाबिन रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० हमें तमाम कामों के लिए इसी तरह दुआए इस्तख़ारा सिखाते जिस तरह क़ुरआन पाक की कोई सूरह सिखाते थे। आप सल्ल० इर्शाद फ़रमाते : "जब कोई आदमी किसी काम का इरादा करे तो दो रकअत नफ़्ल अदा करे फिर यह दुआ मांगे : "या अल्लाह! मैं तेरे इल्म की बदौलत भलाई चाहता हूं तेरी क़ुदरत की बरकत से (अपना काम करने की) ताक़त मांगता हूं तुझसे तेरे फ़ज़्ले अज़ीम का सवाल करता हूं। यक़ीनन तू क़ुदरत रखता है, मैं क़ुदरत नहीं रखता, तू जानता है मैं नहीं जानता। और तू ही ग़ैब का जानने वाला है। या अल्लाह! तेरे इल्म के मुताबिक़ अगर यह काम मेरे हक़ में दीनी और दुनियावी मामलात और अंजाम के लिहाज़ से बेहतर है या आप सल्ल० ने फ़रमाया जल्द या देर मेरे हक़ में बेहतर है तो इसे मेरा मुक़द्दर बना दे, इसका हुसूल मेरे लिए आसान फ़रमा दे और इसे मेरे लिए बाबरकत बना दे, अगर तेरे इल्म के मुताबिक़ यह काम मेरे लिए दीनी और दुनियावी मामलात और अंजाम से नुक़्सानदेह है या आप सल्ल० ने फ़रमाया जल्द या देर मेरे लिए नुक़्सानदेह है तो इसे मुझसे दूर कर दे और मेरी सोच उस तरफ़ फैर दे और जहां कहीं से मुमकिन हो भलाई मेरा मुक़द्दर बना दे और मुझे इस पर मुत्मईन कर

Www.IslamicBooks.Website

दे।" आप सल्ल० ने यह भी फ़रमाया कि दुआ मांगने वाला 'हाज़ल उमरु' की जगह अपनी ज़रूरत का नाम ले।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 218. अदायगी क़र्ज़ के लिए यह दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत अली रज़ि० के पास एक मकातिब (वह गुलाम जिसने आज़ादी हासिल करने के लिए मालिक से मुआहिदा कर रखा हो) हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया (मुआहिदे के मुताबिक़ मैं अपनी आज़ादी के लिए) रक़म अदा करने से आजिज़ हूं। मेरी मदद फ़रमाइए। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें वह दुआ न सिखाऊं जो मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने सिखलाई। अगर पहाड़ के बराबर भी तुझ पर क़र्ज़ होगा तो अल्लाह तआला उतार देगा, कहो : "या अल्लाह रिज़्क़ हलाल से मेरी सारी ज़रूरतें पूरी फ़रमा और हराम से बचा और अपने फ़ज़्ल व करम से मुझे अपनी ज़ात के अलावा हर एक से बेनियाज़ कर दे।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

व्याख्या : दूसरी दुआ मसला 169 के तहत देखें।

मसला 219. बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ।

हज़रत बुरेदा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब बाज़ार में दाख़िल होते तो फ़रमाते : "अल्लाह के नाम से (मैं बाज़ार में दाख़िल होता हूं) या अल्लाह! मैं तुझसे इस बाज़ार की और जो कुछ इस बाज़ार में है, उसकी भलाई का सवाल करता हूं और इस बाज़ार के शर से और जो कुछ इस बाज़ार में है उसके शर से तेरी पनाह मांगता हूं। या अल्लाह! मैं इस बात से तेरी पनाह मांगता हूं कि इस बाज़ार में कोई घाटे का सौदा पाऊं। इसे बैहक़ी ने रिवायत किया है।

मसला 220. मुर्ग की आवाज़ सुनकर अल्लाह का फ़ज़्ल और गधे की आवाज़ सुनकर अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब तुम मुर्ग की आवाज़ सुनो तो अल्लाह का फ़ज़्ल मांगो, क्योंकि वह (उस वक़्त) फ़रिश्ते को देखता है और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगो क्योंकि वह (उस वक़्त) शैतान को देखता है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 221. कुत्ते के भौंकने पर भी अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिए।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब तुम रात के वक़्त कुत्ते को भौंकता और गधे की आवाज़ सुनो

Www.IslamicBooks.Website

तो अल्लाह की पनाह मांगो क्योंकि (रात के वक़्त कुत्ते और गधे) वह चीज़ देखते हैं जो तुम नहीं देखते।'' इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 222. बारिश तलब करने की दुआ यह है।

हज़रत अमरो अपने बाप शुऐब से, शुऐब अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अमरो बिन आस रज़ि०) से रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्ल० बारिश के लिए यह दुआ फ़रमाते थे : ''इलाही! अपने बन्दों और चौपायों को पानी पिला। अपनी रहमत आम फ़रमा दे और मुर्दा ज़मीन को हरा भरा कर दे।'' इसे मालिक और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 223. बारिश होते हुए यह दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी अकरम सल्ल० जब बारिश होती देखते तो फ़रमाते : ''या अल्लाह! फ़ायदा पहुंचाने वाली बारिश बरसा।'' इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 224. कसरते बारान के नुक़्सान से महफ़ूज़ रहने की दुआ।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० (कसरते बारान के नुक़्सान से महफ़ूज़ रहने के लिए) हाथ उठाते फिर दुआ फ़रमाते : ''या अल्लाह! हम पर नहीं बल्कि हमारे इर्द-गिर्द इलाक़ों पर बरसा, मेरे अल्लाह! टबों, टीलों, नदी नालों और दरख़्त उगने की जगहों पर बारिश बरसा।'' इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 225. तेज़ आंधी और तूफ़ान वग़ैरह को देखकर यह दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत आइशा रज़ि० नबी अकरम सल्ल० की ज़ोजा मोहतरमा कहती हैं कि तेज़ आंधी चलने पर नबी अकरम सल्ल० यह दुआ फ़रमाते : ''या अल्लाह! मैं तुझसे इस आंधी की भलाई और जो कुछ इसमें है उसकी भलाई और (जिस) हुक्म के के साथ यह भेजी गई है उसकी भलाई का सवाल करता हूं और इस आंधी के शर से और जो कुछ इसमें है उसके शर से और जिस (हुक्म) के साथ यह भेजी गई है। उसके शर से तेरी पनाह मांगता हूं।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किय है।

मसला 226. नवमुस्लिम को इस्लाम क़ुबूल करने के बाद यह दुआ मांगनी चाहिए।

हज़रत अब मालिक अशजई अपने वालिद रज़ि० से रिवायत करते हैं कि

Www.IslamicBooks.Website

जब कोई शख़्स इस्लाम क़ुबूल करता तो नबी सल्ल० (पहले) उसे नमाज़ सिखो फिर उसे यह दुआ पढ़ने का हुक्म फ़रमाते : "या अल्लाह! मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा मुझे हिदायत दे आफ़ियत अता फ़रमा और रिज़्क़ से नवाज़।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 227. नया कपड़ा पहनने की दुआ यह है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब नया कपड़ा पहनते चाहे कुर्ता, पगड़ी या चादर उसका नाम लेकर यह दुआ फ़रमाते : "या अल्लाह! हर तरह की तारीफ़ तेरे ही लिए है कि तूने ही मुझे यह कपड़ा पहनाया है मैं तुझसे इस कपड़े की और जिस शख़्स के लिए बनाया गया है उसकी ख़ैर व बरकत का सवाल करता हूं और इस कपड़े के शर और जिस (शख़्स) के लिएं यह बनाया गया है उसके शर से तेरी पनाह मांगता हूं।" इसे अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला 228. नया फल देखकर यह दुआ पढ़नी चाहिए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० के पास नया फल लाया जाता तो आप सल्ल० फ़रमाते : "या अल्लाह! हमारे शहर, हमारे फल, हमारे मुद और साअ (वज़न के पैमाने) में बरकत अता फ़रमा बरकत पर बरकत।" फिर आप सल्ल० वह फल मज्लिस में मौजूद सबसे छोटे बच्चे को दे देते। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 229. ग़ुस्सा दूर करने के लिए 'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' पढ़ना चाहिए।

सहाबी रसूल हज़रत सुलैमान बिन सर्द रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० के पास दो आदमी गाली गलोच करने लगे। उनमें से एक इस क़द्र ग़ुस्से में थे कि उसका मुंह फूल गया और चेहरे का रंग बदल गया। नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूं अगर यह कहे तो इसका सारा ग़ुस्सा चला जाए।" एक शख़्स यह सुनकर उसके पास गया और उसे नबी सल्ल० के इर्शाद से आगाह करके कहा : "शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगो।" उस (झगड़ालू आदमी) ने जवाब दिया : "क्या तुम मेरे अंदर कोई ख़राबी महसूस करते हो या मैं दीवाना हूं (यहां से) चले जाओ।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 230. छींक लेने वाले को 'अमहम्दुलिल्लाह' और सुनने वाले को

Www.IslamicBooks.Website

'यरहमुकल्लाह' कहना चाहिए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब तुममें से कोई आदमी छींक ले तो उसे "हम्द, अल्लाह ही के लिए है" कहना चाहिए और उसके (सुनने वाले) भाई या साथी को "अल्लाह तुझ पर रहम फ़रमाए" कहना चाहिए और जब वह (सुनने वाला) यरहमुकल्लाह कहे तो छींक लेने वाले को "अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा हाल दुरुस्त करे" कहना चाहिए।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मसला 231. ग़ैर मुस्लिम की छींक पर 'यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम' कहना चाहिए।

हज़रत अबी मूसा रज़ि० कहते हैं कि यहूदी नबी अकरम सल्ल० के पास छींक लेते और उम्मीद करते कि नबी अकरम सल्ल० उनके लिए "अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए" कहें, लेकिन आप सल्ल० उनके लिए "अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारे हाल की इस्लाह करे" कहते।" इसे तिर्मिजि ने रिवायत किया है।

मसला 232. ग़ैर मुस्लिम के सलाम के जवाब में सिर्फ़ 'व अलैकुम' कहना चाहिए।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया : "जब अहले किताब तुम्हें सलाम कहें तो उनके जवाब में व अलैकुम कहा करो।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 233. ग़ैर मुस्लिम और मुस्लिम अफ़राद पर मुश्तमिल मज्लिस में मौजूद मुसलमानों को इज्तिमाई सलाम कहना जाइज़ है।

हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० का गुज़र एक ऐसी मज्लिस पर हुआ जिसमें मुसलमान, मुश्रिक, बुतपरस्त और यहूदी सब शामिल थे। आप सल्ल० ने उन (मुसलमानों) को सलाम किया। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

मसला 234. अफ़ज़ल सलाम 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू व मग़्फ़िरतहू' कहना है।

हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ि० से रिवायत है कि एक आदमी नबी अकरम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा : "अस्सलामु अलैकुम" आप सल्ल० ने उसे जवाब दिया तो वह बैठ गया। नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया : "दस नेकिया।" फिर दूसरा आदमी आया तो उसने कहा : "अस्सलामु

Www.IslamicBooks.Website

अलैकुम व रहमतुल्लाह" आप सल्ल० ने उसे जवाब दिया और वह बैठ गया। आप सल्ल० ने फ़रमाया : "बीस नेकियां।" फिर तीसरा आदमी आया, तो उसने कहा : "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहू" आपने उसे जवाब दिया और वह बैठ गया। आप सल्ल० ने फ़रमाया : "तीन नेकियां।" इसे तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

मसला 235. शीशा देखकर यह दुआ पढ़नी चाहिए।

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब शीशा देखते तो फ़रमाते : "तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है। या अल्लाह! जिस तरह तूने मेरी अच्छी सूरत बनाई है, इसी तरह मेरा अख़्लाक़ भी अच्छा कर दे।" इसे बैहक़ी ने रिवायत किया है।

मसला 236. सज्दा तिलावत की दुआ यह है।

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि वह कहती हैं कि नबी अकरम

---

1. मुख़्तसर सही बुख़ारी, लिल ज़ुबैदी, हदीस 614।
2. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2822।
3. मिश्कात मसाबीह, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2456।
4. लुउलुउ वल मरजान, भाग-2, हदीस 1740।
5. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-3, हदीस 4256।
6. सही सुनन अबू दाऊद, लिलबानी, भाग-1, हदीस 1043।
7. मुख़्तसर सही बुख़ारी, लिल ज़ुबैदी, हदीस 556।
8. मुख़्तसर सही बुख़ारी, लिल ज़ुबैदी, हदीस 552।
9. मुख़्तसर सही मुस्लिम, लिलबानी, हदीस 449।
10. किताबुज़ ज़िक्र वद्दुआ वत्तौबा वल इस्तिग़फ़ार।
11. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-2, हदीस 1446।
12. किताबुल हज।
13. किताबुल अदब।
14. किताबुल अदब।
15. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2201।
16. लुउलुउ वल मरजान, भाग-2, हदीस 1398।
17. सही बुख़ारी, कितबुल इस्तेज़ान, हदीस 148
18. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-2, हदीस 2163।
19. उरूउल ग़लीलं, लिलबानी, भाग-1, हदीस 74।
20. सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, भाग-3, हदीस 2723।

Www.IslamicBooks.Website

सल्ल० रात के वक़्त जब सज्दा तिलावत करते तो फ़रमाते : "मेरे चेहरे ने उस हस्ती को सज्दा किया जिसने उसे पैदा किया। और अपनी ताक़त व क़ुदरत से उसमें कान और आंखें बनाईं।" इसे अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई ने रिवायत किया है।

ग़ैर मसनून दुआएं और वज़ीफ़े

मसला 237. निम्नलिखित औराद व वज़ाइफ़ और अदइया व अज़्कार सुन्नते रसूल सल्ल० और आसारे सहाबा रज़ि० से साबित नहीं।

1. नापाक जिस्म, कपड़े या बर्तन को पाक करने के लिए धोने के दौरान या बाद में कलिमा शहादत पढ़ना।

2. ग़ुस्ल जनाबत या ग़ुस्ल हैज़ के दौरान (या बाद) में कलिमा शहादत या ईमान की सिफ़ात वग़ैरह पढ़ना।

3. वुज़ू करते वक़्त हर अज़ू की अलग अलग दुआ मांगना।

4. अज़ान से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ना।

5. नमाज़ की नीयत के अल्फ़ाज़ अदा करना।

6. फ़र्ज़ नमाज़ के बाद इज्तिमाई दुआ का हमेशा एहतिमाम करना।

7. फ़र्ज़ नमाज़ के बाद बुलन्द आवाज़ से इज्तिमाई ज़िक्र करना।

8. जुमा की नमाज़ के बाद सौ मर्तबा 'क़ुलहू वल्लाहु' का एहतिमाम करना।

9. जुमा की नमाज़ के बाद एक दूसरे को 'तक़ब्बलल्लाहु मिन्ना व मिनकुम' कहना।

10. जुमा की नमाज़ के बाद खड़े होकर बुलन्द आवाज़ से इज्तिमाई दुरूद शरीफ़ पढ़ना।

11. जुमा के दोनों ख़ुत्बों के दर्मियान 3 मर्तबा बुलन्द आवाज़ से इज्तिमाई दुरूद शरीफ़ पढ़ना।

12. ईद के दोनों ख़ुत्बे तकबीर से शुरू करना।

13. जनाज़े की नमाज़ से पहले अज़ान देना।

14. जनाज़े की नमाज़ के बाद सफ़ में बैठकर दुआ करना।

15. रोज़ा रखने की नीयत के अल्फ़ाज़ अदा करना।

Www.IslamicBooks.Website

16. शहर में दाख़िल होने की मसनून दुआ के अलावा मक्का या मदीना में दाख़िल होते वक़्त दूसरे दुआएं मांगना।

17. तवाफ़ करने की नीयत के अल्फ़ाज़ अदा करना।

18. तवाफ़ के हर चक्कर में अलग अलग मुरव्वजा दुआओं का एहतिमाम करना।

19. सई की नीयत के अल्फ़ाज़ अदा करना।

20. सई के हर चक्कर में अलग अलग मुरव्वजा दुआओं का एहतिमाम करना।

21. मक़ामे इब्राहीम और मक़ामे मुल्तज़िम पर मख़्सूस मुरव्वजा दुआओं का एहतिमाम करना।

22. मक्का से रुख़्सत होते हुए विदाई दुआ मांगना।

23. मस्जिद में दाख़िल होने की मसनून दुआ के अलावा मस्जिदुल हराम या मस्जिद नबवी में दाख़िल होते वक़्त दूसरी दुआएं मांगना।

24. रोज़ह रसूल पर मसनून दुरूद व सलाम के अलावा दूसरे तवील व अरीज़ मुरव्वजा दुरूद व सलाम पढ़ना।

25. रोज़ह रसूल पर दुरूद व सलाम के बाद 'इश्फ़अनी बिल्लाह, अलअमान या रसूलल्लाहिश्शफ़ाअह या रसूलल्लाह जैस अल्फ़ाज़ कहना।

26. दुरूद व सलाम के बाद तिलावत करके बख़्शिश की दरख़्वास्त करना।

27. नुज़ूले वही की जगह खड़े होकर मलाइका पर सलाम भेजना।

28. ईसाले सवाब के लिए क़ुरआन ख़्वानी, फ़ातिहा ख़्वानी, रस्मे क़ुल, दसवां, चालीसवां का एहतिमाम करना।

29. मय्यद दफ़न करने के बाद सर की तरफ़ खड़े होकर सूरह फ़ातिहा और पांव की तरफ़ सूरह बक़रा की इब्तदाई आयतें तिलावत करना।

30. मय्यत को ग़ुस्ल देते वक़्त क़ुरआन पाक की तिलावत या ज़िक्र करना।

31. जनाज़ा ले जाते हुए बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करना।

32. बिस्मिल्लाह का क़ुरआन पाक ख़त्म करना।

33. चनों पर सत्तर हज़ार मर्तबा कलिमा पढ़ना।

34. डेढ़ लाख बार आयते करीमा ख़त्म करना।

35. 27 रजब को महफ़िल ज़िक्र मुंअक़द करना।

Www.IslamicBooks.Website

36. 27 रमज़ानुल मुबारक की रात (शबे क़द्र) 7 मर्तबा सूरह मुल्क पढ़ना।

37. 15 शाबान की रात (शबे बराअत) 3 मर्तबा सूरह यासीन और 21 मर्तबा सूरह बक़रा का आख़िरी रुकूअ पढ़ना।

38. इज्तिमाई दुआ मांगने से पहले बुलन्द आवाज़ से इज्तिमाई दुरूद शरीफ़ पढ़ना।

39. 1 रबीउल अव्वल से 12 रबीउल अव्वल तक रोज़ाना इशा की नमाज़ के बाद हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना।

40. 12-13-14 रबीउल अव्वल को इशा की नमाज़ के बाद 7741 मर्तबा 'या बदीउल अजाइब' का वज़ीफ़ा करना।

41. माह सफ़र को मंहूस समझकर पहले बुध को मग़िरब और इशा के दर्मियान महफ़िल ज़िक्र मुंअक़द करना।

42. 1 मुहर्रम से 10 मुहर्रम तक रोज़ाना इशा की नमाज़ के बाद सौ मर्तबा कलिमा तय्यिबा का वज़ीफ़ा करना।

43. औराद अब्दुल क़ादिर जीलानी की वज़ीफ़ा करना।

44. इस्माए गिरामी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (ग़ौसे आज़म) का वज़ीफ़ा करना।

45. क़सीदा ग़ौसिया
46. ख़त्म शरीफ़ कबीर ग़ौसिया
47. अहदनामा
48. औरादुल असबूअ
49. चहल काफ़
50. मुस्बआत अश्र
51. शश किफ़्ल
52. हफ़्त हैकल
53. दुरूद ताज
54. दुरूद तंजीना
55. दुरूद माही
56. दुरूद मुक़द्दस
57. दुरूद लखी
58. दुरूद अकबर
59. दुआ अम्न
60. दुआ मंज़िल (क़ुरअन मजीद की हर मंज़िल ख़त्म करने की दुआ)
61. दुआ अय्याम बैज़ मुकर्रम
62. दुआ सुरयानी
63. दुआ जमीला
64. क़ुद्दह मुअज़्ज़म व मुकर्रम
65. दुआ हबीब
66. दुआ मुस्तजाब
67. दुआ निस्फ़ शाबानुल मुअज़्ज़म
68. दुआ हिज़्बुल बहर
69. दुआ अकाशा
70. दुआ गंजुल अर्श

Www.IslamicBooks.Website

मसला 238. सिफ़ अल्लाह अल्लाह या अल्लाहु का ज़िक्र करना या ज़रबें लगाना सुन्नते रसूल और आसारे सहाबा से साबित नहीं।

मसला 239. ज़िक्र क़ल्बी को नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज और तिलावत क़ुरआन से अफ़ज़ल समझना सुन्नते रसूल और आसारे सहाबा से साबित नहीं।

मसला 240. अल्लाहु अल्लाहु की ज़रबों से क़ल्ब जारी करने की अमल सुन्नते रसूल या आसारे सहाबा से साबित नहीं।

मसला 241. अल्लाह अल्लाह के ज़िक्र की ज़िरबों से अल्लाह का जिस्म अंदर सुरायत करने का अक़ीदा किताब व सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 242. अल्लाह का ज़िक्र करने के लिए किसी कामिल वली, बुज़ुर्ग, ग़ौस या क़ुतुब से इजाज़त हासिल करना सुन्नते रसूल या आसार सहाबा से साबित नहीं।

मसला 243. ज़िक्र की निम्नलिखित क़िस्में सुन्नते रसूल या आसारे सहाबा से साबित नहीं।

ज़िक्र	ज़िक्र जहर	ज़िक्र ख़फ़ी	ज़िक्र हब्स दम
ज़िक्र तस्बीह	ज़िक्र रूही	ज़िक्र क़ल्बी	

मसला 244. अल्लाह अल्लाह के ज़िक्र की निम्नलिखित ज़कात मुक़र्रर करना सुन्नते रसूल से साबित नहीं।

आम मुसलमानों के लिए	रोज़ाना 5000 ज़रबें लगाना
इमाम मस्जिद के लिए	रोज़ाना 25000 ज़रबें लगाना
ग़ौस या क़ुतुब के लिए	रोज़ाना 72000 ज़रबें लगाना
फ़क़ीह के लिए	रोज़ाना सवा लाख ज़रबें लगाना।

मसला 245. ज़ाकिर क़ल्बी की रूह का रसूले अकरम सल्ल० की महफ़िल[1] में पहुंचने या बैतुल मामूर तक पहुंचने का अक़ीदा किताब व सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 246. ज़िक्र क़ल्बी करने वालों को रसूले अकरम सल्ल० की ज़ियारत कराने का दावा करना सुन्नत से साबित नहीं

1. रोज़ाना मस्जिदे नबवी में नबी अकरम सल्ल० का तमाम ज़िंदा या मुर्दा ग़ौस, क़ुतुब, अबदाल और दूसरे औलियाए किराम के साथ मज्लिस क़ायम करना, सहाबा किराम, ताबईन, तबेअ ताबईन में से किसी के ज़माने में भी इसका सुबूत नहीं मिलता।

Www.IslamicBooks.Website

मसला 247. ज़ाकिर क़ल्बी से क़ब्र में मुंकर नकीर के सवाल न करने का अक़ीदा किताब व सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 248. ज़ाकिर क़ल्बी का मरने के बाद क़ब्र में बैठकर अल्लाह अल्लाह करना और लोगों को फ़ैज़ पहुंचाने का अक़ीदा सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 249. साठ साल तक ज़ाकिर क़ल्बी न बनने वाले को रसूले अकरम सल्ल० अपनी उम्मत से ख़ारिज कर देते हैं, यह अक़ीदा किताब व सुन्नत से साबित नहीं।

Www.IslamicBooks.Website

सलातुर्रसूल सल्ल०

लेखक

मौलाना मुहम्मद सादिक़ सियालकोटी (रहिम०)

अनुवादक

सैयद शौकत सलीम सहसवानी

प्रकाशक

एस० एन० पब्लिशर्स

G-20, मुरादी रोड, बटला हाऊस

जामिया नगर, ओखला, नयी दिल्ली-110025

Www.IslamicBooks.Website

दस्तूरुल मुत्तक़ी

फ़ी

अहकामिन्नबिय्यि

शेखुल हदीस मौलाना
मुहम्मद यूनुस कुरैशी देहलवी रहिम०

अनुवादक
सै. शौकत सलीम सहसवानी

एस० एन० पब्लिशर्स
366/1 मुरादी रोड, बटला हाउस, जामिया नगर ओखला
नयी दिल्ली-25

Www.IslamicBooks.Website

बरेलवियत

तारीख़ व अक़ाइद

लेखक

अल्लामा एहसान इलाही ज़हीर शहीद

अनुवाद

सै० शौकत सलीम सहसवानी

प्रकाशक

अलकिताब इन्टर नेशनल

F-50B, मुरादी रोड, बटला हाऊस

जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

Www.IslamicBooks.Website

DUA KE MASAIL

AL-KITAB INTERNATIONAL
Jamia Nagar, New Delhi-25

Www.IslamicBooks.Website